'सरस्वतीं देवयन्तो हवन्ते'

प्राचीन राजस्थानी गीत

भाग- १

सम्पादकः-

गिरिधारीलाल शर्मा

सं० सम्पादकः-

सांवलदान आशिया

प्रकाशकः-

साहित्य-संस्थान

राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

प्रथम संस्करण

वि० सं० २०१२

मूल्य-

२||)

प्रकाशक:—
अध्यक्ष
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर

मुद्रक:—
व्यवस्थापक
विद्यापीठ प्रेस, उदयपुर

प्रकाशकीय—

साहित्य-संस्थान, राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर पिछले १५ वर्षों से उदयपुर और राजस्थान में साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं कला विषयक सामग्री की शोध-खोज, संग्रह, सम्पादन और प्रकाशन का काम करता आरहा है। विशेष कर साहित्य-संस्थान ने राजस्थान में यत्र तत्र बिखरे हुए प्राचीन साहित्य, लोक-साहित्य, इतिहास-पुरातत्व और कलात्मक वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये निरन्तर प्रयत्न किया है। परिणाम स्वरूप लगभग २५ महत्वपूर्ण और उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है। साहित्य-संस्थान के अन्तर्गत इस समय (१) प्राचीन-साहित्य विभाग, (२) लोक-साहित्य विभाग, (३) इतिहास-पुरातत्व विभाग, (४) अध्ययन गृह और संग्रहालय विभाग, (५) राजस्थानी-प्राचीन साहित्य विभाग, (६) पृथ्वीराज-रासो सम्पादन विभाग, (७) भील-साहित्य संग्रह विभाग, (८) नव साहित्य-सृजन कार्य एवं (९) सामान्य विभाग विकसित हो रहे हैं। सामान्य विभाग के अन्तर्गत बूँदी के प्रसिद्ध राजस्थानी कवि श्री सूर्यमलजी की स्मृति में 'महाकवि सूर्यमल-आसन' और प्रसिद्ध इतिहास वेत्ता महामहोपाध्याय डॉ० गौरी-शंकरजी की यादगार में 'ओझा-आसन' स्थापित किया है। संस्थान की मुख-पत्रिका के रूप में त्रैमासिक 'शोध-पत्रिका' का प्रकाशन किया जाता है एवं नवीन उदीयमान लेखकों को लिखने के लिये प्रोत्साहित करने की दृष्टि से 'राजस्थान-साहित्य' मासिक का प्रकाशन कार्य चालू किया गया है। इस प्रकार साहित्य-संस्थान राजस्थान विश्व विद्यापीठ, उदयपुर अपने सीमित और अत्यल्प साधनों से राजस्थानी-साहित्य, संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में विभिन्न विघ्न-बाधाओं के बावजूद भी निरन्तर प्रगति और कार्य कर रहा है। राजस्थान की गौरव और गरिमा की महिमामय झाँकी अतीत के पृष्ठों

डॉ० पी० डी० शुक्ला, डॉ० भान तथा श्री सोहनसिंह एम. ए. (लंदन) का भी अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने सहायता की रकम शीघ्र और समय पर दिलवाई। सच तो यह है कि उक्त महानुभावों की प्रेरणा और सहायता से ही यह रकम मिल सकी है और संस्थान अपने ग्रन्थों का प्रकाशन करवा सका है। भारत-सरकार के उपशिक्षा मन्त्री डॉ० कालूलालजी श्रीमाली के प्रति क्या कृतज्ञता प्रकट की जाय, यह तो उन्हीं का अपना काम है। उनके सुझाव और उनकी प्रेरणा से संस्थान के काम में निरन्तर विकास और विस्तार हुआ है और आगे भी होता रहेगा। इसी आशा और विश्वास के साथ मैं उनका आभार मानता हूँ। अन्य उन सभी का आभारी हूँ; जिन्होंने इस काम में सहायता दी है।

विनीत
गिरिधारीलाल शर्मा
अध्यक्ष
साहित्य-संस्थान
राजस्थान विश्व विद्यापीठ उदयपुर

गंगा दसवीं
२०१३
सन् १९५६

सम्पादक की ओर से—

गीत-साहित्य की दृष्टि से राजस्थानी भाषा अत्यन्त समृद्ध और शक्तिशाली है। इस भाषा में अब तक हजारों-लाखों गीत लिखे जा चुके हैं। राजस्थान का शायद ही कोई ऐसा गांव, कस्बा और शहर हो; जिसमें राजस्थानी भाषा के गीत नहीं मिलते हों। विशेषकर उन स्थानों पर तो गीत-साहित्य निश्चित रूप से प्रचुर मात्रा में मिल सकता है; जहाँ चारण, राव तथा भोजकों की थोड़ी बहुत बस्ती होगी। इनके अलावा राजा-महाराजाओं के पोथीखानों, सामन्तों के ठिकानों और जैन उपासरों में भी यह साहित्य पर्याप्त परिमाण में मिलता है। चारण और रावों में तो गीत लिखने की वंशानुगत परम्परा और भावना चली आई है; इसलिए इनके यहां ऐसे साहित्य का प्राप्त होना स्वाभाविक ही है। यों तो गीतों की रचना विभिन्न-जाति के विभिन्न कवियों ने की है, किन्तु मुख्य रूप से इन गीतों को लिखने वाले चारण, राव, मोतीसर और भोजक ही अधिक रहे हैं। गीतों के लिखने और बोलने की इनकी अपनी विशेषता है। जब ये गीत पढ़ते हैं तो ऐसा लगता है; जैसे बन्दूक से तड़ातड़ गोलियाँ दागी जारही हों। चारणों, रावों, भोजकों आदि ने राजस्थानी साहित्य के भण्डार को भरने में बहुत महत्वपूर्ण भाग अदा किया है। इन्होंने विभिन्न विषयों पर गीत लिखे हैं किन्तु शूरवीरता, आत्म-बलिदान और सतियों के सम्बन्ध में लिखे गये गीत तो हिन्दी साहित्य में बेजोड़ हैं। वीर रस का जितना स्वाभाविक और प्रभावोत्पादक वर्णन इन्होंने किया है; उतना और किसी ने किया हो—यह संदेहास्पद है। ओजस्विनी वाणी से वीर रस के गीतों को सुनकर वीरों की भुजाएँ फड़क उठती हैं और वीर रस रगों में दौड़ने लग जाता है। भागते हुए कायरों में लौटकर मरने मारने की प्रबल भावना उत्पन्न करने में ये अपनी सानी नहीं रखते। शक्ति का साकार रूप अगर कहीं मिल सकता है तो केवल इन्हीं गीतों में।

शक्ति की सही उपासना साहित्य में इन्होंने ही की है। ये गीतों के रचयिता केवल गीत लिख कर दूसरों को ही मरने मारने के लिये प्रोत्साहित नहीं करते अपितु स्वयं भी तलवार पकड़ कर रणभूमि में उतरते रहे हैं। इसीलिये वीर रस का स्वाभाविक वर्णन ये कर सके हैं। रस के अनुकूल शब्दों का चयन करना ये खूब जानते हैं और शब्द तथा अर्थ का समन्वय भी इन्होंने बहुत सुन्दर किया है। श्रोता इन गीतों को सुन कर रसानुभूति से भर उठता है। स्व० रवीन्द्र बाबू ने इनको सुनकर एक बार कहा था "मैं तो उनको सुनकर मुग्ध हो गया हूँ। क्या ही अच्छा हो अगर वे (राजस्थानी) गीत प्रकाशित किये जाँय। वे गीत संसार के किसी भी साहित्य और भाषा का गौरव बढ़ा सकते हैं।"

इन गीतों का न केवल साहित्यिक महत्व ही है अपितु ऐतिहासिक दृष्टि से भी अत्यन्त उपादेय है। क्योंकि ये अधिकांश में सच्ची घटनाओं के आधार पर ही लिखे गये हैं। इनमें घटनाओं का वर्णन यद्यपि बढ़ा चढ़ा कर किया गया है फिर भी इतिहास की सामग्री इनमें प्राप्य है। बढ़ा चढ़ा कर वर्णन करना इनके स्वभाव में है, बल्कि यों कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा कि अतिशयोक्ति पूर्ण रचना करना इनका वंशानुगत गुण बन गया है। शब्दों की तोड़मरोड़ इनके लिये सामान्य बात है। कहीं २ ये शब्द को इतना विकृत कर देते हैं कि न उसके सही रूप का पता लगता है और न अर्थ ही ठीक बैठता है। भाषा शास्त्र के लिये भी ये गीत महत्व के हैं और इसी लिये इनका अध्ययन आवश्यक एवं उपयोगी है।

गीतों का प्रारंभ कब से हुआ है; इसका ठीक निश्चय अभी तक नहीं हो सका है। कुछ विद्वान नवमीं शताब्दि में हुए कवि मुरारी से इनका प्रारंभ मानते हैं और कुछ कहते हैं कि तेरहवीं शताब्दि इनका प्रारंभ काल है। जो कुछ भी हो, इतना तो स्पष्ट है कि गीत लिखने की

परम्परा हमारे यहाँ प्राचीन काल से चली आरही है। अपभ्रंश के बाद तो इनकी रचना प्रचुर मात्रा में की गई है। इस कारण यह स्वाभाविक रूप से मानना होगा कि इनका प्रारंभ काल अपभ्रंश युग तो है ही। अपभ्रंश काल की समाप्ति के साथ ही साथ राजस्थानी भाषा का विकास भी हो रहा था और उस समय राजस्थानी भाषा के दो सामान्य साहित्यिक रूप थे। एक राजस्थानी डिंगल और दूसरी राजस्थानी पिंगल। डिंगल राजस्थानी का साहित्यिक रूप ही था। राजस्थान के चारण कवि डिंगल में ही रचना करते थे। जन-सामान्य के लिये यह भाषा कठिन पड़ती थी क्योंकि डिंगल बोल चाल की भाषा कभी नहीं रही है। इसमें क्लिष्टता अधिक है। इसके अर्थ को समझना पहले भी दुरूह था और आज भी मुश्किल होता है। फिर इनके रचयिताओं का सम्बन्ध जन-सामान्य की अपेक्षा राजा-महाराजाओं, जागीरदारों और सामन्तों से ही अधिक रहा है। राज-दरबारों में इन्हें रखना एक प्रथा थी। इसलिये दान, उपहार और जागीरियां इन्हें दी जाती थीं। ये भी बदले में इनकी प्रशस्तियां बना बनाकर गाया करते थे और इनके गौरव को बढ़ाने में सहायक बनते थे। यह प्रथा न केवल राजस्थान में अपितु सर्वत्र रही है।

इन गीतों की विभिन्न जातियाँ हैं इन्हें छन्द कहा जाता है। राजस्थानी डिंगल के रीतिग्रन्थों में इनकी संख्या ८४ मानी गई हैं। जैसे साणोर, सावझड़ा, सु पंख, पालवणों और चोटो बन्ध आदि। इनकी भी फिर अनेक उप जातियां हैं जैसेः- छोटा साणोर, बड़ा साणोर, छोटा सावझड़ा आदि। राजस्थानी-डिंगल की रचना के जिस प्रकार विभिन्न विषय रहे हैं, उसी प्रकार विभिन्न रसों का परिपाक भी हुआ है। वीर, रौद्र, वीभत्स और भयानक रसों के जिस प्रकार उत्कृष्ट उदाहरण मिलते हैं, उसी प्रकार शान्त, करुण और शृंगार रस भी मिलता है।

प्रस्तुत संग्रह में केवल वीर रस के गीतों को ही स्थान दिया है। इसलिये पाठकों को इसमें अन्य रसों का स्वाद नहीं मिल सकेगा।

निकट भविष्य में अन्य रसों के गीत भी प्रकाशित करने की संस्थान की योजना है। वीर रस के दो चार उदाहरण यहाँ दिये जा रहे हैं: जिनसे मालूम हो जायगा कि राजस्थानी भाषा के ये गीत कितने शक्ति-शाली हैं ?

सन १५२७ में जब मेवाड़ के महाराणा सांगा की बाबर के साथ खानवा में लड़ाई हुई, उस समय रावत रत्नसिंह ने जिस शौर्य और साहस का परिचय दिया- उसका वर्णन इस गीत में मिलेगा:-

नमते तिय सेना तणी नागद्रह ।
भारथ भू भड़ वीरती भीर ॥
पग किम रावत परठै पाछा ।
जड़िया परिया तणां जंजीर ॥ १ ॥

क्रम पाछा न देवै कैलपुरो ।
रिण भू जेथ नह छंडे राव ॥
सनस तणी बेड़ी सीसोदे ।
पहरी रतन तेण परजाव ॥ २ ॥

कांधल उत्त मचंते कलहण ।
वण जूझा आगमण घणी ॥
चौहट्टी तूझ तणै चितौड़ा ।
सांकल पग सूं रतन तणी ॥ ३ ॥

राण तणा रजपूत न रहिया,
सक भड़ भागौ डूंगरसीह ॥
उदस असत गया उलंडे,
लाज बंधण पग लागो लीह ॥ ४ ॥

वीर-शत्रुओं की भारी भीड़ में से सिशोदिया की सेना रणस्थल से पीछे हटने लगी। उस समय हे रावत ! तू पैर पीछे कैसे हटा सकता था ? क्योंकि तेरे पैर तो पूर्वजों की यश रूपी जंजीरों से जकड़े हुए थे।

हे सिशोदिया; तू रणांगण से पैर पीछे कैसे हटा सकता था ? जब अन्य राव और क्षत्रिय युद्ध भूमि से हट गये तब, यदि तू भी अपने पैर पीछे हटा लेता तो सिशोदिया वंश की लज्जा ही नष्ट हो जाती।

हे कांधल के सुपुत्र सिशोदिया रत्नसिंह, अन्य योद्धाओं की भांति तू रणस्थल से कैसे हट सकता था ? कुल-लज्जा की जंजीरें तेरे पैरों को जकड़े हुए थी और इसीलिये तू प्रबल पराक्रम से युद्ध करता रहा।

राणा के सामंत जब युद्ध स्थल से भाग खड़े हुए तब, डूंगरसिंह आदि ने भी रण भूमि छोड़ दी। उस समय हे रत्नसिंह, रण की खेती को इस प्रकार निष्फल होती देख तू युद्ध में अडिग बना रहा और युद्ध स्थल से नहीं हटा—क्योंकि लज्जा के लंगरों से तू जकड़ा हुआ था।

उक्त गीत में रावत रत्नसिंह के प्रबल पराक्रम को दर्शाया गया है। इसी प्रकार नीचे दिये गये गीत में युद्ध का सजीव वर्णन देखने योग्य है :—

गजां उमंडे बादलां जूथ सकंजा कांठला गहां।
बीज सोर भाळा धजा गैणाला बहेस ॥
संघरोस वूठो रणं वाटां धार पाणां सुतो।
रोद थट्टां माथै सार भाटां रत्नेस ॥ १ ॥

पणंगा भालडां सोक भोक भड़ा मूठ पाणां।
घड़ा करे वमस्साण नोर खारां धीठ ॥
वोह छोळा काळ कीट चाद हीकां बरस्साणो।
गेहलोय रीठ लोहां तुरक्कां गरीठ ॥ २ ॥

सुरंगां रड़क्कैनाला रै जाहरां सूंडां डंडां।
घाव मंडे खेचरां नहट्टा दाव घूंज ॥
जुआळा टेल घणै वाव वूठो जम्मराव जूंही।
वड़िग आवधां राव कैफां वपरुत ॥ ३ ॥

मेलिया उतोल रोल ढीली लूण तासमीर ।
जंगा धम्मरोल तेगा चहुँ हरे जांस ॥
गोभ रूपी रतन्नेस अनम्मा समाणो गोम ।
जभी तेह वाभी जूप राखै नलक्वास ॥ ४ ॥

उमड़ते हुए बादल-समूह की भांति सजा हुआ हाथियों का झुण्ड रणोन्मत्त होकर आया और उधर बिजली की तरह रणस्थल की तोपों की ज्वाला आकाश में फैलने लगी। उस समय हे रत्नसिंह, तूने मुगल-समूह पर साहस के साथ तलवार की वर्षा (इन्द्र वृष्टि के समान) कर दी।

युद्ध-हर्षित वीर सैनिकों ने अत्यन्त तीव्र वेग से पैने तीर चलाने प्रारंभ किये और शत्रु-सेना पर नगक के पानी की भांति शस्त्र-वर्षा की। जिसकी आवाज चारों दिशाओं में फैल गई और तू काली घटा के समान मुगलों पर छा गया।

भूगर्भ स्थित सुरंगें फटने लगीं। बन्दूकों की गोलियों और तलवारों से हाथियों के घाव लगने लगे। योगिनियां आ उपस्थित हुईं। अश्व पर आरूढ़ सशस्त्र रावत, यमराज के समान भीषण रूप धारण कर शत्रुओं के घाव करने लगा और रणभूमि से मुगलों को हटा कर पराजित कर दिया।

अपने खड्ग प्रहार से दिल्ली के मीर-मुगलों को रणक्षेत्र से तितर बितर कर दिया और शत्रुओं के सामने नहीं झुकने वाले रत्नसिंह ने वृषभ के समान युद्ध के जुए का भार अपने कंधों पर उठा लिया तथा अपनी यशः कीर्ति पृथ्वी पर फैला कर अमर बन गया।

इसी प्रकार जब मुगल बादशाह अकबर ने ई० सन् १५६७ में चितौड़-विजय के लिये महाराणा उदयसिंह पर चढ़ाई की तब, बदनोर के प्रसिद्ध वीर जयमल राठौड़ ने दुर्ग की रक्षा के लिये प्राणपण से युद्ध किया और वीर गति प्राप्त की। उस समय कवि ने चितौड़-दुर्ग के

मुँह से जयमल को सम्बोधित कर जो कहलाया है—उसका वर्णन कितना स्वाभाविक एवं सुन्दर बन पड़ा है—देखिये:—

ढिल्ली पंह आयां राण अत्त ढिल्लियों ।
तिण सूं कहै चित्रगढ़ तूझ ॥
जैमल जोध काम तो जोगो ।
माल्ह्यां राव म ढील स मूझ ॥ १ ॥

खीज करे चढ़ियो खूंदालम ।
धणू कटक बंध मेल घणा ॥
गढ़ नायक मेलि यो कहै गढ़ ।
तू मत मेलै वीर तणा ॥ २ ॥

अकबर आवत उदियासिंघ ।
चवें ढीलौ कीधो चितौड़ ॥
ओटा छात जोध हर मंडण ।
रखे मूझ ढीलै राठौड़ ॥ ३ ॥

जपै एम दुरंग यूं जयमल ।
हूँ रजपूत धणी नों राण ॥
संक म कर लग सिर साजो ।
सिर पड़ियां लेसी सुरतांण ॥ ४ ॥

चितौड़ दुर्ग कहता है—"हे जयमल, दिल्लीपति अकबर के चढ़ आने पर महाराणा आने को असमर्थ जान कर मुझे छोड़ गया है। इसलिये हे राठोड़, 'इस युद्ध का उत्तरदायित्व अब तेरे ऊपर है। तू भीरु बन कर मुझे मत छोड़ जाना।

दुर्ग के मुँह से कवि ने आगे कहलाया कि "हे वीरमदेव के पुत्र बादशाह ने क्रुद्ध होकर विशिष्ट सेना का संगठन कर मेरे ऊपर आक्रमण किया है, जिससे मेरा स्वामी मुझे छोड़कर चला गया है परन्तु हे वीर, तू मुझे मत छोड़ जाना।

असंख्य सेना के साथ अकबर के चित्तौड़ पर चढ़ आने की सूचना प्राप्त कर उदयसिंह चला गया। इस पर दुर्ग कहता है कि "हे जोधा के वंशज वीर शिरोमणि जयमल, ऐसा न हो कि तू भी मुझे छोड़कर चला जाय ?"

वीर जयमल ने उत्तर में दुर्ग से कहा— "तेरा स्वामी महाराणा ही है, मैं तो उसका राजपूत हूँ। जब तक मेरे शरीर पर मस्तक है तब तक, तेरे ऊपर किसी का अधिकार नहीं हो सकता। मेरे मरने के बाद ही अकबर तुझ पर अधिकार कर सकता है–पहले नहीं।"

इस तरह के गीत एक नहीं, अनेक हैं। इन गीतों में कवि की सुन्दर उक्तियाँ और भाषा की शक्ति का परिचय मिलता है। इसी तरह वीरता के वर्णन का एक और सुन्दर उदाहरण देखिये :—

ई० सन १५७६ में मेवाड़ के महाराणा प्रतापसिंह पर दिल्ली पति अकबर ने आमेर के राजा मानसिंह के सेनापतित्व में सेना भेजी और हल्दीघाटी के मैदान में प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध हुआ। इस युद्ध में राठौड़ जयमल के पुत्र रामदास ने जिस प्रकार प्रबल पराक्रम प्रदर्शित किया; उसका वर्णन इस गीत में कितना सुन्दर किया गया है :—

शशि थाइस तप थाइ सूरिज शितल,
तजे महोदधि वारि तुरंग।
मृत भै रामदास रण मेले,
गमण पछम दिशि मंडे गंग॥ १ ॥
जळे चन्द्र शिळो थाई जम चख,
रेणायर सां शातो रहे।
जयमाल उत जाइ छांडे जुध,
वेणी जळ उपराठ वहे॥ २ ॥

अनश इन्दु अरक तादिम अंग,
सायर छंडे लहरि सुवाह ॥
पह मेड़ता चले पारोठो,
पमुहे वहे सुर सरि प्रवाह ॥ ३ ॥
सोम सुर सामँद्र प्रता सुध,
अघट सुभाव दाखवे अंग ।
राम कियो मृत शामि धरम रति,
पुनि तोया मिलि पूव प्रसंग ॥ ४ ॥

हे राठोड़ रामदास, यदि तू मृत्यु के भय से युद्ध स्थल छोड़ कर चला जाता है तो चन्द्रमां तीक्ष्ण किरणें और सूर्य शीतलता धारण कर लेता है, समुद्र स्थिर होजाता है और गंगा का प्रवाह पश्चिम की ओर मुड़ जाता है।

हे जयमल के पुत्र, यदि तू युद्ध स्थल त्याग कर विमुख होजाता है तो चन्द्रमां आग उगलने लगता है और सूर्य शीतलता धारण करने लग जाता है। समुद्र अपनी सुन्दर उर्मियां छोड़ देता है और गंगा के जल का प्रवाह विपरीत दिशा में हो जाता है।

हे मेड़ता नरेश, यदि तू रणांगण से शत्रुओं को पीठ दिखा कर युद्ध-भूमि से पलायन कर जाय तो चन्द्रमां तेज को धारण कर लेता है और सूर्य शीत की प्रकृति का वन जाता है, समुद्र लहर-हीन होजाता है और गंगा उल्टी बहने लग जाती है।

रामदास अपने पूर्वजों की भाँति स्वामी धर्म का पालन कर युद्ध में शौर्य प्रदर्शित करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। चन्द्र, सूर्य, समुद्र और गंगा अपनी पूर्व स्थिति में आगये। अर्थात् चन्द्र ने शीतल किरणें, सूर्य ने ग्रीष्म किरणें और समुद्र ने सुन्दर लहरें धारण की तथा गंगा पूर्व दिशा में पुनः बहने लगी।

विशेष कर गीतों के अर्थ उन्हीं ने लगाये हैं। इसके लिये मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ। साहित्य-संस्थान के इतिहास-पुरातत्व विभाग के संयोजक श्रीनाथूलालजी व्यास ने गीतों की पाद टिप्पणियां लिख कर पुस्तक को अधिक उपादेय बनाने में योग दिया; इसके लिये मैं श्री व्यासजी का आभारी हूँ।

विनीत

गिरिधारीलाल शर्मा

सम्पादक

अक्षय तृतीया
सम्वत् २०१३, उदयपुर

प्राचीन राजस्थानी गीत

(भाग—१)

१ रावत चुण्डा लाखावत सीसोदिया¹

गीत (छोटा साणोर)

चालतो दुरंग पयंपै चुंडो, ए पुरुषातम तणी पर ।
आप न मुड़ियै जाय अरीयण, तो आगै पाछै मुड़ै यर ॥ १ ॥
चुण्डौ कोट जिसो चित्तौड़ो, बांचे चित्तौड़ै वयण ।
रहजे जो आपण पग रोपे, पड़ै क पग छंडै असण ॥ २ ॥
लोह पगार कहै लाखावत, गैमर हैमर जेथ गुड़ै ।
मुंह रावत जो आप न मुड़िये, (तो) मोड़ा वेग्रा असण मुड़ै ॥ ३ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:—पुरुषार्थी चुण्डा वीर किले पर चलता हुआ कहता है कि हे वीरो! युद्ध भूमि में शत्रुओं के सामने से हम नहीं मुड़ेंगे तो अपने सामने से या पीछे से शत्रुओं को अवश्य ही मुड़ना पड़ेगा।

टिप्पणी:—१ यह महाराणा लाखा (वि०सं० १४३६–७८) के पाटवी कुमार थे। हँसी में कहे हुए अपने पिता के वाक्य पर मंडोवर की राजकुमारी से विवाह न करने के निश्चय के साथ ही राज्यगद्दी को भी इन्होंने स्वतः त्याग दिया।

उक्त राजकुमारी से फिर लाखा का विवाह हुआ, उससे उत्पन्न मोकल मेवाड़ का स्वामी हुआ। लेकिन उसे चाचा मेरा ने मार डाला, जब मंडोवर के राठोड़ रणमल ने मेवाड़ पर अधिकार जमाने की चेष्टा की, तब चुण्डा ने मालवा से आकर राणा कुंभा का राज्य स्थिर किया और रणमल को मार कर मंडोवर का राज्य भी छीन लिया।

वीरता का गढ़ बन कर चुण्डा अन्य वीरों को उपदेश देता है कि हे सामन्तो ! रणक्षेत्र में यदि हम पैर टिका कर शत्रुओं से सामना करेंगे तो या तो वे धराशाई होंगे या उन्हें भागना पड़ेगा।

लाखा का पुत्र चुण्डा शस्त्र उठा कर कहता है—कि जहाँ हाथी और घोड़े युद्ध-स्थल में गिरते हैं। क्षत्रिय योद्धाओं ! ऐसे युद्ध में पीठ नहीं दिखाई जायगी तो शीघ्र या विलंब से शत्रु लौट ही जायेंगे।

२ रावत चुण्डा लाखावत सिशोदिया

गीत (छोटा-साणोर)

लाखावत एक सारीखा लाखां, महा सुवये दाखै मछर।
चुण्डावत वाही चित्तौड़ा, अणियाली रणमल उअर ॥१॥
नेत बंध नोमूं नाग द्रहा, जोधे नहँ झालियो जुथ।
हाथां तूझ सभर हामू हर, कटारी भीत कारियां कमुथ ॥२॥
सझिरै सावदलां सीसोदा, इला थंभ रावत ओ गाढ।
पंजर राव तणौ केलपुरा, जड़ी जुतै स जड़ी जस दाढ ॥३॥
खेता हरा वांका जे खलां, कलहण अडग केविया काल।
धुर मेवाड़ अनै धूहड़ धर, प्रगटी तूझ तणी प्रति माल ॥४॥

(रचयिता:— अज्ञात)

भावार्थ:—हे लाखा के पुत्र ! तेरी वीरता लाखों वीरों के सदृश गौरव से भरी हुई है। रणमल के हृदय में कटारी का वार करने से हे चुण्डा ! तेरा सुयश फैल गया है।

हे हम्मीर सिंह के पौत्र सिशोदिया ! विजय चिन्ह धारण करने वाले ! तूने अपने हाथ से रणमल के कटारी पार की, यह सुन रणमल का पुत्र जोधा युद्ध न कर भाग खड़ा हुआ।

शत्रुओं की सेना का सर्वत्र सामना करने वाले वीरता के स्तंभ हे सिसोदिया ! तू ने राव रणमल के शरीर पर कटारी का अच्छा वार किया।

शत्रुओं के समूह में वक्रगति वाले काल पुरुष के समान, युद्धस्थल में अडिग रहने वाले, हे चेत्रसिंह के पौत्र ! तेरी कटारी का वार मेवाड़-मारवाड़ में प्रसिद्ध होगया।

३ रावत चुण्डा लाखावत सिसोदिया

गीत (छोटा सागोर)

लाखावत मेल सबल दल लाखां,
लोहां पाण धरा लेवाड़ ।
केलपुरे हेकण घर कीधी,
मुरधर ने बांधी मेवाड़ ॥ १ ॥
खोस लिया असनसा खेतल,
रंवत ने ज्यां वाला रंग ।
रंधिया राण तणें रसोड़ें,
मुरधर रा नीपजिया मूंग ॥ २ ॥
थांणा जाय मंडोवर थपियां,
जोर करे लखपत रे जोध ।
किया राज चुण्डे नव कोटी,
सात वरस तांई सीसोद ॥ ३ ॥
खेड़चां घाली धर खोसे,
दस सहसां आकाय दईव ।
सुजस दिला रिड़माल सिधायो,
जोधे नीठ वंचायो जीव ॥ ४ ॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ :— हे लाखा-पुत्र ! तूं शक्तिशाली सैनिकों का संगठन कर, शस्त्रबल से अपनी सीमा का विस्तार करने वाला है। हे सीशोदिया तूंने मारवाड़ की भूमि पर अपना अधिकार स्थापित कर मेवाड़ और मारवाड़ की एक ही सीमा करदी है।

हे क्षेत्रसिंह के समान योद्धा ! तूंने अपने घोड़ों को रातब देने के लिये मारवाड़ की भूमि छीन कर उससे उत्पन्न मूंग महाराणा के रसोड़े में बनवा कर खिलाये हैं।

हे लाखा-पुत्र चुण्डा ! तूंने अपने भुजबल से मंडोवर पर अपना अधिकार स्थापित किया है। इस प्रकार नव-कोटि मारवाड़ पर निरन्तर सात वर्ष तक सीशोदियों का शासन रक्खा।

हे सीशोदिया चुण्डा ! देव योग से राठोड़ रणमल स्वर्गवासी हुआ और जोधसिंह ने अपने प्राण बचाये। उस समय तूंने खेड़ेचा गोत्र वाले राठोड़ों से भूमि छीन कर मंडोवर पर शासन किया।

४ रावत राघव देव-लाखावत सिशोदिया [१]

गीत (छोटा सणोर)

खत्र वाट खत्री गुर होये खड़ग हथ,
आहण ते साचविये इम।
दांते काढी कणे नहँ देखी,
जम-दढ राघव देव जिम ॥ १ ॥
रायंगणी राण कुम्भ क्रन रूठे,
हाथे लहे हिंदुये राव।

टिप्पणी:—१ राघव देव लाखा का पुत्र चुण्डा का छोटा भाई था। यह बड़ा वीर था जिसे राणा कुम्भा के शासन काल में मंडोवर के राव रणमल ने दगे से मरवा डाला उसी का ऊपर वर्णन है।

कीढ़ी राघव भली कटारी,
दांता सिरसी ऊपर डाव ॥ २ ॥
रिण मल कुम्भा विन्हे रायंगाणि,
घणे चींतवे श्रोह घणा ।
फूटां लोह पछां फिटकारां,
ताइनां राघव देव तणा ॥ ३ ॥
कर ग्रहिये हम्मीर कलोधर,
सुजड़ी छल साचवी सत्रेव ।
लगा लोह पछां लाखावत,
दांते काढी राघव देव ॥ ४ ॥
पूंचे बाथ पड़ंतो पहलो,
सोहड़स जूझा वांहे सार ।
राघव ज वलीन दीठो रावत,
कमल कटारी काढण हार ॥ ५ ॥
हाथां अ वसी हुए वसि हाथां,
वाहे अणी खत्रीले वाढ ।
राघव काढी तणौ राय गुर,
दांत विशेख किए जम दाढ ॥ ६ ॥
शीशोदा राण लखपति संभ्रम,
पौरिस वर्णो दाखवें पाण ।
कर सत्र ग्रहे डसण खल कलिहण,
काढी अणियाली-कुल-भाण ॥ ७ ॥

खत्र घणा किया आगे ही खत्रिये,
कहिये पृथ्वी अनाथ किम ।
कर गे ग्रहिये कणी नहँ काढी,
जम दढ राघव देस जिम ॥ ८ ॥

(रचयिता-हरी सूर, बारहठ)

भावार्थः- क्षात्र-कुल का गौरव रखने वाला क्षत्रियों का गुरु राघव देव हाथों से तलवार चलाने वाला था। उसी वीर राघव देव ने दांतों से कटारी निकाल कर शत्रुओं को मारने के लिये वार किया, ऐसा वीर पुरुष किसी जगह देखने में नहीं आया।

हिन्दु-पति कुम्भा ने रुष्ट होकर राय आंगन में तेरे हाथ पकड़ लिये। उस समय हे राघव देव! तूंने अपनी कुशलता से दांतों द्वारा कटारी निकाल ली।

रणमल और कुम्भा ने तुझ पर क्रुद्ध हो महलों के बीच हे राघव देव! तुझे जख्मी कर दिया। किन्तु रक्त रंजित होने पर भी तूंने रणमल पर दांतों से कटारी निकाल कर प्रहार किया।

हम्मीर के कुल को धारण करने वाले कुम्भा ने छल कर के तुझ पर कटारी का वार किया; उस पर तूंने भी अपने कौशल से दांतों द्वारा कटारी निकाल कर उन शत्रुओं पर वार किया।

हे राघव देव! तेरे हाथ के पहुँचे पकड़ कर गुत्थम गुत्था होने के पहले वीर शत्रुने तुझ पर खड्ग-प्रहार कर दिया। तब हे रावत! मुँह से कटारी निकाल कर वार करने वाला तेरे समान अन्य वीर नहीं दिखाई दिया।

हे वीर क्षत्रिय! अपने हाथ शत्रु के वश में होते हुए भी तूंने इस प्रकार शत्रु पर कटार चलाई मानो तेरे हाथ किसी के काबू में

नहीं। हे राजाओं के गुरु राघव देव! दांतों से पकड़ कर (कुशलता से) तूंने कटारी निकाली।

हे लाखा के पुत्र! तूंने अत्यंत ही पुरुषार्थ दिखाया, जिस समय तेरे हाथ शत्रुओं ने पकड़ लिये। उस समय उन से युद्ध करने को तूंने (अपनी कुशलता से) कटारी निकाल कर प्रहार किया।

पूर्व काल में भी कई क्षत्रियों ने अपना क्षात्र-बल दिखाया, इस पृथ्वी को कभी वीर विहीना नहीं कह सकते; किंतु हे राघव देव! हाथ पकड़ने के बाद भी दांतों से कटारी निकाल जिस कुशलता से तूंने सामना किया, वैसा कोई वीर नहीं हुआ।

५ कांधल चुंडावत सिशोदिया[१]

गीत (छोटी साणोर)

इर तरवर एक पहाड़ ऊपरै।
गरब भाग गेपे गेतूल ॥
कीधी भली जिते कांधाला।
मुलया तणी अमूली मूल ॥ १ ॥

ईडर राव तणों आरोपो,
मेवाड़ा ऊपर मुखियो।
किरमर धार करग कोदालै,
खेत कलोधर रिण खिणियो ॥ २ ॥

वैरी वरख इसौ कूं वधियो,
डाहल लागा दसे द्रग।
चावे चिहु राये चुंडावत,
ओ खांखे कीधो अलग ॥ ३ ॥

कोई पांखड़ां न मूकियो कलहण,
बिजड़ै रामा उतै बियां ।
कीरत तणा ग्रवाड़ा कारण, ।
कांधल मूल अमूल कियौ ॥ ४ ॥
(रचयिता अज्ञात)

भावार्थः—एक पहाड़ पर सूर्य की ज्योति में वृक्ष रूपी शत्रु गौरवान्वित हो कर लहरा रहा था। उसे झड़ से उखाड़ कर हे कांधल! तूंने अच्छा किया ।

ईडर का राव क्रुध हो मेवाड़ पर चढ़ आया । हे क्षेत्रसिंह के वंशज ! तूने उसे कुदाली रूपी तलवार हाथ में ले रण क्षेत्र से खोद कर निकाल दिया ।

यह वृक्ष रूपी शत्रु बहुत बढ़ा हुआ था, जिसकी शाखा और कोंपलें दसों दिशाओं में फैल रही थी। ऐसे सब ओर फैले हुए वृक्ष (शत्रु) को हे चुंडा के पुत्र ! तूंने खोद कर अलग फैंक दिया ।

वृक्ष रूपी रामा के पुत्र शत्रु की कोई कौंपल (शाखा) सूखी हुई नहीं थी। हे कांधल ! उस वृक्ष को तूने अपनी तलवार से नष्ट कर यश प्राप्त किया ।

६ रावत रत्नसिंह चुण्डावत सिशोदिया[१]

गीत (छोटा साणोर)

बावर साह पूठै थयो दाखै बल,
सरिन सांधै कोई संग्राम ।
मंड रतनसी राज वँस मुड़िया,
संड राखण चुण्डा हर स्याम ॥१॥

डूंगर सीह सिलह दी डिगिया,
आवर खड्ग मरण दे आज।
रावते घणौं भलाया रावत,
लाखा हर भुजां तुझ लाज ॥२॥
बांगे साह हुयां हक बागी,
निसती नांजि चलिया नेठाह।
मुजसे कमल कांधले संभ्रम,
स्याम कहे रहि स्याम सनाह ॥३॥
खत्रवट मारिग खेत खानुवें,
नल वन धाव दाखें नहस।
राखी भली पडंते रावत,
सीसोदिया ऊभी मनस ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

भावार्थः—जिस समय बादशाह बाबर ने साहस दिखाकर पीछा किया उस समय उसके सामने कोई तीर न चला कर सभी यौद्धा, सामंत और नरेश मुड़ गये किंतु हे चुण्डा के पौत्र रत्नसिंह! तूं अपने स्वामी के लिये युद्ध भूमि में अचल बना रहा।

चलते हुए खड्ग से मृत्यु को देखकर डूंगरसिंह व राणा के उमराव यौद्धा बख्तर पहने हुए उस रणांगण को छोड़ चले। उस समय युद्ध भार विशेष करके तेरे कंधे पर ही डाल गये।

टिप्पणी:—यह रावत चुण्डा के पुत्र कांधल का बेटा था और राणा सांगा की बाबर से सन् १५२७ में खानवा में लड़ाई हुई, उसमें बहादुरी से लड़ता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। उसी का वर्णन है।

वीर-हाक करते हुए बादशाह ने पीछा किया उस समय साहस हीन, धैर्यहीन (महाराणा के) वीर नहीं ठहरे। ऐसे समय में हे कांधल के पुत्र ! महाराणा ने अपनी रक्षा के लिए बख्तर सदृश: जानकर युद्ध लज्जा का भार तेरे भुजों पर छोड़ दिया।

हे रावत सिशोदिया ! तू खानवे के युद्ध में निश्चय स्वरूप शत्रुओं को जख्मी कर उनके रक्त के पनाले बहाता हुआ क्षात्र कुल के रास्ते पर अडिग बना रहा और गिरती हुई युद्ध लज्जा रखली।

७ रावत रत्नसिंह चुण्डावत सिशोदिया

गीत (छोटा साणोर)

नमते निय सेन तणी नाग द्रह,
भारथ भू भड़ विरती भीर ॥
पग क्रिम रावत परठै पाछा,
जड़िया परिया तणां जंजीर ॥ १ ॥
क्रम पाछा न देवै केलपुरो,
रिण भूं जेथ नह छंडे राव ॥
सनस तणी वेड़ी सीसोदे,
पहरी रतन तेण परजाव ॥ २ ॥
कांधल उत्त मचंते कलहण ।
घण जूझा आगमण घणी ॥
चोहट्टी तूझ तणै चितौड़ा ।
सांकल पग सूं रतन तणी ॥ ३ ॥
राण तणा रजपूत न रहिया,
सक भड़ भागौ डूंगरसीह ॥

उदम असत गया उलंडे ।
लाज बंधण पग लागो लीह ॥ ४ ॥
(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ :— हे रावत ! शत्रु वीरों की गर्दी में सीशोदिया की सेना रण-स्थल से पीछे हटने लगी । लेकिन तूं पीछे पैर कैसे हटा सकता था ? तेरे पैर तो पूर्वजों की यश रूपी जंजीर में जकड़े हुए थे ।

हे सिशोदिया ! रणांगण से तूं पैर कैसे हटा सकता था ? युद्ध भूमि से अन्य राव, क्षत्रिय हटगये और यदि तूं भी पैर पीछे हटा देता तो सिशोदिया-कुल को लज्जा ही नष्ट हो जाती ।

हे सिशोदिया रत्नसिंह ! हे कांधल के सुपूत ! तू अन्य योद्धाओं की भांति रणःस्थल से कैसे हट सकता था ? कुल लज्जा की जंजीरें तेरे पैरों को जकड़े हुए थीं इसीलिए तू प्रबल पराक्रम से युद्ध करता रहा ।

उस समय राणा के सामंत युद्धःस्थल से भाग खड़े हुए, इसीलिए डूँगरसिंह वगैरह भी रणभूमि छोड़ चले । इस प्रकार रण-खेती निष्फल होती देख, हे रत्नसिंह ! लाज लंगरों से जकड़ा हुआ तूं युद्ध में अडिग बना रहा—युद्धस्थल से नहीं हटा।

८ रावत रत्नसिंह चुण्डावत सिशोदिया

गीत (छोटा साणोर)

झड़ आगां जाय जिके नर झूठा ।
मछर तणी भागवे मटक ॥
कटकां सरणान छूटै कांधल ।
कांधाला छूटै कटक ॥ १ ॥
रावत रम पयंपै रतनों ।
सीसोदियो नरोहां सार ॥

खसे खंधार म जाये मोखत ।
खतमो ओलै रहै खंधार ॥ २ ॥

भागलां हत रतनसी भाखै ।
दाखै चलण न पीठ देऊ ॥
थाटां तणी पीठ हूँ थोभूं ।
थाट मुड़ै किम मोहर थऊं ॥ ३ ॥

सुजड़ा हथ कांधाल समोभ्रम ।
वहरे वीजड़ा खेत वया ॥
घर गज खंभ रतन सी ढुलतां ।
गयंद राण--घर कुशल गा ॥ ४ ॥

भांजे गया अनेरा भूपत ।
छत खत्रवट सूरातन छांड ॥
रहियो हेक रतन सी रावत ।
मुगल घड़ा सांभा पग मांड ॥ ५ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- तलवार बजने पर युद्ध-भूमि छोड़ कर चले जाने वाले मनुष्य झूंठे होते हैं और उनके गौरव का विनाश हो जाता है। सेना के सामने से कांधल वंशजों के पैर नहीं छूटते बल्कि उनके सामने (उनके) शत्रुओं के पैर छूट जाते हैं।

नर-श्रेष्ठ रत्नसिंह सिशोदिया कहता है—की कंधार देश के रहने वाले मुगल मेरी शक्ति के सामने (युद्धक्षेत्र) से भाग जाते हैं और अन्य यौद्धा मेरे क्षात्रत्त्व की शरण लेकर रहते हैं।

युद्ध-स्थल से भागने वाले को रत्नसिंह कहता है—कि मैं कभी विचलित हो कर रणांगण में शत्रुओं को पीठ नहीं दिखाता। भागने वालों के पीछे मैं ठहर जाता हूं और रिपु दल के पीछे फिरने (सामने होने) पर उनके आगे भागता नहीं हूँ।

कांधल पुत्र हाथ से तलवार-कटारी चलाता हुआ रण क्षेत्र में धरा-शाई हुआ। स्तम्भ-स्वरूप रत्नसिंह के गिरने पर राणा के हाथी कुशलता पूर्वक पीछे घर चले गये।

क्षात्र-कुल के गौरव और शौर्य को छोड़ कर दूसरे राजा रणांगण त्याग कर चले गये (उस समय)। मुगल सेना के सम्मुख केवल एक रत्नसिंह ही अडिग पैरों से खड़ा रहा।

६ रावत रत्नसिंह चुण्डावत सिशोदिया

गीत (सु पंख)

गजां उमंडे वादलां जूथ सकंजा कांठला गढ़ा।
वीज सोर झालां धजा गैणाला वहेस ॥
संघणेस बूठो रणां वाटां धार पाणां सुतो।
रोद थट्टां माथै सार झाटां रतन्नेस ॥ १ ॥

पणंगां भालड़ां सोक झोक भड़ा मूठ पाणां।
घड़ा करे घमस्साण नीर खारां धीठ ॥
वोह छोलां काल कीट चाढ हीकां वरस्साणो।
गेहलोत रीठ लोहां तुरक्कां गरीठ ॥ २ ॥

सुरंगां रड़क्कै नाला रै जाहरां सूंडां डंडां।
घाव मंडे खेचरां नहट्टां दाव घूंत ॥
जुआला ठेल वणै वाव बूठो जम्मराव जुंही।
वडिग आवधां राव केफां व्रपरूत ॥ ३ ॥

१० रावत सींहा चुण्डावत सिशोदिया

गीत (वड़ा साणोर)

जमी ऊपटे काट अण घाट होय जणो जण ।
वढ़ण आय चापड़े थाट वागा ॥
पाण दाखें घणा वाट लागा प्रसण ।
एक रावत तणी भाट आगा ॥ १ ॥

सता चूके असह गता चांग हुआ सोह ।
आवियो तता गांधे मता एक ॥
चचग गज घता वहगा ज्युं ही चलेगा ।
टलेगा जता करता मना टेक ॥ २ ॥

गांण छड़ बांण अप्रमाण रण वहातां ।
चूक अवसांण के ही अचूकां ॥
भीच चुंडा तणी खटक भागी नहीं ।
रटक ले ले गया कटक रूकां ॥ ३ ॥

सीह सांगण तणो फतै पाई समर ।
रगत प्रत धपाइ जोग रायो ॥
वटावे मांण लागा वमोहग सारे ।
अरज ताजा सोर धकै आयो ॥ ४ ॥

(रचयिता :- अज्ञात)

भावार्थ :— उलटती हुई पृथ्वी के समान वीर-दल प्रकट हो हो कर युद्ध के लिये तलवार बजाने लगा किन्तु अकेले रावत के साहसिक वेग युक्त आघात को देखकर बहुत से शत्रुओं ने युद्ध-भूमि का पिछला रास्ता पकड़ लिया ।

मेलिया उतोल गोल ढीली लूण तास मीर ।
जंगां धम्मरोल तेगां चहुँ हरे जांम ॥
गोम रूपी रतन्नेस अनम्मी समाणो गोम ।
जमी नेह वामी जूप गम्रे जसव्वास ॥ ४ ॥

(रचयिताः- अज्ञात)

भावार्थः—उमड़े हुए बादल-समूह की भाँति, सज्जित गज-झुण्ड रणोत्साही हो उलट आया । रण स्थल की तोपों की ज्वाला बिजली की तरह आकाश में फैलने लगी । हे रत्नसिंह ! उस समय (युद्धभूमि में) तूं ने मुगल-समूह पर साहस-पूर्वक तलवार की (इन्द्र वृष्टि के समान) झड़ी लगादी है ।

युद्ध-हर्षित सैनिक वीरों ने अत्यंत तेजी से पैने तीर चलाने शुरु किये और शत्रु सेना पर नमकीन पानी की तरह शस्त्राघात की वृष्टि करने लगा; जिसकी आवाज चारों ओर फैलने लगी और तूं काली घटा के समान मुगलों पर छा गया ।

भू गर्भी (जमीन में गड़े हुए) सुरंगों की आवाज होने लगी; बंदूकों की गोलियों व तलवारों से हाथियों के घाव लगने लगे । उस समय भयंकर रूपा-खेचरी (योगिनियाँ) आदि उपस्थित हुईं । यमराज जैसे शत्रुओं पर घावों की झड़ी लग गई और सशस्त्र अश्वारोही रावत ने भी भीषण रूप धारण कर मुगलों को पराजित कर रणांगण से हटा दिया ।

रणक्षेत्र में दिल्ली के मीर-मुगलों को खड्ग-प्रहार द्वारा चारों ओर बिखेर (तितर बितर) कर बांई तरफ अनमी रत्नसिंह ने वृषभ वत युद्ध भार के जूए (जूड़े) को अपने कंधों पर उठा लिया और पृथ्वी पर अपना यश अमर कर गया ।

रावत सींहा तुरन्त ही एक संगठन कर युद्धः स्थल में आ उपस्थित हुआ। उसकी इस गति को देखकर सभी शत्रु चकित हो गये और जितने वीर-शत्रु हृदय में लड़ने का दम्भ रखते थे, वे शूर-वीर रणांगण में भरते हुए मदवाले हाथियों के साथ प्रविष्ट हुए और पुनः ज्यों के त्यों लौट गये।

युद्ध में अत्यन्त बाण चलाने वाले अचूक योद्धा भी चूक जाते थे। शत्रु-सेना के साथ तलवारों की टक्कर ले ले कर चले गये, किन्तु अपने हृदय में से वीर चुण्डा का भय नहीं मिटा सके।

सांगा के पुत्र ने युद्ध में विजय प्राप्त कर योगिनियों को इस प्रकार रक्त से तृप्त किया कि शत्रुओं को गौरव-हीन कर स्वामी का कार्य सफल कर सम्मुख हुआ।

११ राठौड़ राव वीरम देव मेड़तिया, मेड़ता

गीत (छोटा साणौर)

वांसे वरदेत कमंध वल़ दाखे।
लोह छतीस भुजां डंड लेव॥
राणा रावल़ राव मुरड़ंतां।
दोयण हटक्या वीरम देव॥ १॥

पत मेड़ता समर पत साहां।
अणियां मूंहे दीध उभेल॥
वीरमदेव आवतां वांसे।
अन रावां पायो ऊवेल॥ २॥

दाटक धरा फाटक दुदावत।
धड़चे मुगल़ मार खग धार॥
दस सहसां नव सहस दो मझ।
वीर सहाय हुऔ तिण वार॥ ३॥

जोधा हरो जोध रिण जूटो ।
जवनां ऊझलतां जम जाल ॥
पीला खाल हूँत पलटंतां ।
राव रठौड़ थयो रछ पाल ॥ ४ ॥

रिण रायामल बंधव रहे रिण ।
समहर भूप दिखावे आप ॥
(ओ) सांगो राणा कुशल घर आयो ।
पह वीरम देव तणो परताप ॥ ५ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- हे कुलीन राठौड़ ! तू एक साहसी की भाँति छत्तीसों शस्त्रों से सज्जित हो कर महाराणा की सेना में सम्मिलित हुआ। युद्ध-भूमि में रावल नरेश एवं अन्य क्षत्रिय युद्ध से विमुख हो गये। उस समय हे वीरम देव ! तू ने ही शत्रुओं का सामना कर उन्हें परास्त किया।

हे मेड़ता पति वीरम देव ! बादशाह की सेना का सामना कर अपने पूर्वजों के गौरव को उज्जवल कर दिया। पीछे से तेरे युद्ध में सम्मिलित हो जाने से महाराणा के सैनिकों को बड़ी सहायता मिली।

हे दूदा के पुत्र ! तू तलवारों से मुगलों के घाव लगाने के कारण इस मेवाड़ के लिये एक दृढ़ कपाट के समान सिद्ध हुआ। हे वीरम देव ! सिसोदिया और राठोड़ों की सेना का तू सहायक रहा।

हे राव जोधा के पौत्र वीरम देव ! तू ने यमराज के समान मुगलों की सेना का सामना किया। हे राव राठोड़, "पीला खाल" के स्थान पर राणा की सेना के चरण डिगने लगे। उस समय तू ने बड़ी सहायता की।

इस युद्ध में हे वीरम देव, तू और तेरा भाई राय मल, स्वामी भक्ति का पूर्ण परिचय देते हुए रण भूमि में धराशाई हुए तेरी ही

वीरता के कारण महाराणा सांगा युद्ध-भूमि से कुशलता पूर्वक घर आ सके।

१२ राव जयमाल राठोड़ मेड़तिया, बदनोर

गीत (छोटा साणोर)

गज रूप चढ़ण अंग रहण अंस भगत, पोहप कमल देसोत पग।
जिम जगदीस पूजतो जैमल, जैमल तिम पूजजै जग ॥१॥
गज आरोह वड वड़ा गढ़पत, चौसर धर वंदे चलण।
वीर तणो अरचतौ विसंभर, तिम अरचीजे आप तण ॥२॥
रथ हाथ रू कुसुम थिर रेखक, महिपत पग तल नीमे मण।
प्रम कमधज जिण वड महा जतौ, आप वडम पूजया चरण ॥३॥
मोटो पह आराध करे महि, मोटो गढ़ लीजतां मुओ।
जोय हरि भगत तुआली जैमल, हरि सारीख प्रताप हुओ ॥४॥

(रचयिता :- अज्ञात)

भावार्थ :— हे जयमल, गजरूप नामक हाथी पर आरोहण करने वाले, तेरे शरीर में भक्ति का अंश एवं साहस देखकर तेरे चरणों में अन्य नरेश पुष्प की भांति (पुष्प रूप) अपने शीश को झुका कर तेरी वन्दना करते हैं। जिस भांति हे जयमल, तू ईश्वर के सन्मुख शीश झुका कर वन्दना करता था उसी प्रकार तेरे साहस से प्रभावित सारा संसार तेरी अर्चना करता है।

हे हाथी पर आरोहण करने वाले महारथी, तेरे सम्मुख राजराजेश्वर चरणों में पुष्प-माला अर्पित कर सदैव नमस्कार करते हैं। हे वीरम

टिप्पणी :— १ वि० सं० १६२४ ई० सन् १५६७ मे दिल्ली के बादशाह अकबर ने चित्तौड़-विजय के लिये महाराणा उदयसिंह पर चढ़ाई की तब, बदनोर के मेड़तिया ठाकुर राठौड़ जयमल ने दुर्ग की रक्षा हेतु प्राणपण से युद्ध किया और वीर गति प्राप्त की। इस गीत में उसी का वर्णन किया गया है।

देव के सुपुत्र जयमल, जिस भांति तू ईश्वर की वन्दना करता था, उसी भांति सारा संसार तेरी वन्दना करता है।

हे राठोड़! अन्य नरेश रणांगण में प्रविष्ट होते समय रथारूढ़ होकर हाथ में पुष्प लिये, ललाट पर केसर कुम्कुम् का त्रिपुन्ड लगाये, निर्भीक होकर केवल तेरे चरणों का ही ध्यान करते हैं। हे वीर पुत्र, जिस प्रकार तूं परम पिता परमेश्वर की पूजा करता था, उसी प्रकार तुझको भी ईश्वर-तुल्य आदरणीय मानकर तेरी पूजा करते हैं।

हे जयमल, चित्तौड़ जैसे बड़े दुर्ग को लेते समय तूंने वीर गति प्राप्त की। इसी कारण नरेशों में सर्व श्रेष्ठ मान कर सभी पृथ्वी के प्राणी के तेरी आराधना करते हैं। देवताओं में पूर्ण-भक्ति देखकर ही तुझे इस संसार में ईश्वर-तुल्य पूजनीय माना गया है।

१३ राव जयमल राठौड़ मेडतिया, बदनोर

गीत-(छोटा साणोर)

ढ़िल्ली पंह आयां राण अत ढ़िल्लियां ।
तिण सूं कहैं चित्र गढ़ तूझ ॥
जैमल जोध काम तो जोठी ।
मारूआं राव म ढ़ील स मूझ ॥ १ ॥

खीज करे चढ़ियो खुन्दालम ।
धण, कटक बंध मेल घणा ॥
गढ़ नायक मेलि यौं कहै गढ़ ।
तूं मत मेलै वीर तणा ॥ २ ॥

अकबर आवत उदियासिंव ।
चवै ढीलो कीधो चित्तौड़ ॥
मोटा छात जोध हर मंडण ।
रखै मूझ ढीलै राठोड़ ॥ ३ ॥

जपै एम दुरङ्ग सूं जयमल ।
हूँ रजपूत धणी तो राण ॥
संक म कर लग सिर साजो ।
सिर पड़िया लेसी सुरताण ॥ ४ ॥

(रचयिताः- अज्ञात)

भावार्थः- चित्तौड़ दुर्ग कहता है कि "हे जयमल, दिल्लीपति अकबर के आने पर राणा अपने आप को असमर्थ जान कर मुझे छोड़ कर चला गया है। इसलिये हे राठौड़, "इस युद्ध का उत्तरदायित्व अब तेरे ऊपर है। तू भीरू बनकर मुझे मत छोड़ना" ॥ १ ॥

चित्तौड़ दुर्ग कहता है कि, 'हे वीरम देव के पुत्र। बादशाह ने क्रुद्ध होकर विशेष प्रकार से सेना का संगठन कर मेरे ऊपर आक्रमण किया है। जिस से मेरा स्वामी मुझे छोड़कर चला गया है। परन्तु हे वीर, तूं मुझे मत छोड़ना ॥ २ ॥

अकबर के चित्तौड़ पर असंख्य सेना लेकर आने की सूचना सुन कर उदयसिंह चला गया है। इस लिये दुर्ग कहता है कि-हे जोधा के वंशज वीर शिरोमणि जयमल, ऐसा न हो कि तूं भी मुझे छोड़ कर चला जाय ॥ ३ ॥

वीर जयमल दुर्ग से कहता है कि - "तेरा स्वामी महाराणा ही है और मैं उसका राजपूत हूँ। जब तक मेरे शरीर पर मस्तक है तब तक तेरे ऊपर किसी का भी अधिकार नहीं हो सकता। मेरे धराशायी होने पर ही अकबर तेरे ऊपर अधिकार प्राप्त कर सकता है, अन्यथा नहीं।"

१४ राव जयमल राठोड़ मेड़तिया, बदनोर

गीत

ऊँमत ऊअरे चितोड़ जंपै, मूंछ सूं कर मेल ।
सुरतांण रा दल आज, तो सिर बिसर बांधे बेल ॥१॥

जोय रणथंभ चित्रगढ़ जंपै, दल आयां सर बोल दियो ।
सुरजन कलह छांड साचरियों, कलह पते मोरेस कियौ ॥२॥

उरजन तणौ लसे ऊतरियो, सुत जगमल रहियौ सुधर ।
वेहरौ हुओ वेहूँ गढ़ विग्रह, हाडां अने हमीर हर ॥३॥

रू पर वार छांडगो सुरजन, वढे पतो रहियौ वर वीर ।
नोर दुरंग चढ़ियौ नगद्रहां, नाडूलां उतरियौ नीर ॥४॥

(रचयिता :- अज्ञात)

भावार्थः- युवक वीर पत्ता चुण्डावत जख्मी होने पर भी वीरता से लड़ता रहा और हाड़ा सुर्जन घाव लगते ही भाग खड़ा हुआ। यह देख चित्तौड़ का किला गौरवान्वित हो कर गर्जता है और रणथंभोर का गढ़ लज्जित हो जाता है ॥ १ ॥

रणथंभोर के दुर्ग को देखकर चित्तौड़ कहता है-कि मेरे ऊपर जब जब शाही सेना आई तब पत्ताने शत्रुओं को सावधान कर युद्ध किया। किन्तु हे रणथंभोर, तेरे ऊपर सुर्जन युद्ध छोड़कर चला गया ॥ २ ॥

अर्जुन हाड़ा का पुत्र लज्जित होकर गढ़ से उतर गया और जगतसिंह का पुत्र युद्ध में स्थिर रहा। इसी प्रकार दोनों दुर्गों के बीच अर्थात हाड़ा और हम्मीरसिंह के वंशजों के प्रति परस्पर विवाद बढ़ गया ॥ ३ ॥

सुर्जन हाड़ा युद्ध काल में भीरू बन कर परिवार को त्याग रणथंभोर से चला गया। लेकिन वीर शिरोमणि पत्ता घावों से रक्तरंजित होकर भी युद्ध-भूमि में ही धराशाई हुआ। जिस से चित्तौड़गढ़ ने सिशोदियों के प्रति गौरव अनुभव किया और नाडुल स्वामी (हाड़ाओं) के प्रति रणथंभोर का गौरव नष्ट होगया ॥ ४ ॥

१६ रावत पत्ता चुण्डावत, आसेट

गीत (छोटा साणौर)

कहै पतसाह पता दो कूंची ।
धर पलट्यां न कीजे धोड़ ॥

गढ़पत कहै हमैं गढ़ माहरौ ।
चुण्डा हरो न दये चीतौड़ ॥१॥

गोला नाल चत्रंग गढ़ गाजै ।
गाहे मीर साधीर घणौ ॥
जगा सुत नहँ दीये जीवंतां ।
तीजो लोचन प्रिथी तणौ ॥२॥

झटका झाड़ औझड़ां झाड़े ।
रखियौ दुरंग वढै रम राह ॥
ऊभा पते न चढ़ियौ अकबर ।
पड़िय पते चढ़्यौ पतसाह ॥३॥

अकबर नूं अड़ चाड़ राणा नूं ।
मुगलां मारण कियो मतौ ॥
उदयासींघ राण यम आखै ।
पलटी धरा जिण धणी पतौ ॥४॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ :— बादशाह कहता है कि— पत्ता ! मुझे चाबी दे दो । भूमि (का आधिपत्य) पलटने पर हठ न करो । लेकिन दुर्ग-स्वामी (पत्ता) कहता है कि अब तो गढ़ मेरा है और चुण्डावत, चित्तौड़ नहीं दे सकता ॥ १ ॥

(तोपों के) गोलों से चित्तौड़गढ़ गर्ज रहा है (प्रतिध्वनित हो रहा है) सेनापति (मीर) बड़ा धैर्य धारण किये हुए हैं । किन्तु पृथ्वी का तीसरा नेत्र, जग्गा का आत्मज (सुपुत्र पत्ता) जीते जी (दुर्ग) देने वाला नहीं है ॥ २ ॥

धारावाही (तलवारों के) प्रहारों से योद्धा नष्ट हुए जा रहे हैं, (झड़ते) गिरते जारहे हैं। ऐसे विकट संघर्ष-समय में किले को शत्रुओं से बचा लिया। पत्ता के जीते जी (अकबर किले पर) न चढ़ सका, उसके (पत्ता के) वीर गति प्राप्त होने पर ही बादशाह (गढ़ पर) चढ़ सका ॥ ३ ॥

मुगल सेना ने राणा को मरवाने के लिये अकबर को उकसा कर सलाह की। (इस पर) उदयसिंह इस प्रकार कहता है-कि जिन नरेशों से भूमि पलट गई है, उसका स्वामी रूपी पत्ता सहायक बनता है।

१७ रावत जग्गा चुण्डावत, आमेट

गीत (बड़ा साणौर)

तिल तिल जुध हुओ खगां मुहं तूटे ।
चूण न सकै दहु करां चूंप ॥
रावत कमल काज सिव रचियौ ।
सहसा उरजण तणो सरूप ॥ १ ॥

चिग चिग हुओ खाग धारां चढ़ ।
वणियो जाय न कीतवर ॥
केलपुरा वाला सिर कारण ।
कीनां संभू हंजार कर ॥ २ ॥

रज रज हुओ जगो भरियो रज ।
मिलवा मुगत जणियो मेव ॥
समहर अ्रुगट लिपण दस संहसो ।
दस सौ करग वाधिया देव ॥ ३ ॥

सुत परताप त्रीण टुकड़ा सिर ।
सुकरां गूंथी अजब सबी ॥
रुंड माल उर ऊपर रुद्राचै ।
फूलमाल अद्भूत फबी ॥ ४ ॥

(रचयिता:- पीरा आशिया)

भावार्थः- हे रावत ! युद्ध में तलवार की धार से तेरा सिर तिल २ होकर टूट पड़ा, जिसे एकत्रित करने के लिये शंकर को हजार हाथ वाले सहस्रार्जुन का रूप धारण करना पड़ा ॥ १ ॥

तेरा शरीर तलवार की धार से विच्छिन्न होकर गिरा है जिसके सुयश का मैं वर्णन नहीं कर सकता, हे केलपुरा (केलवाड़ा) के अधिपति सिशोदिया ! तेरे सिर की इच्छा से शंभू ने अपने हजार हाथ बनाये ॥ २ ॥

हे सिशोदिया जगतसिंह ! पूर्व ही तुझ को मुक्ति प्राप्त करने का भेद मालूम हुआ था जिससे तूं रणक्षेत्र में रज रज होकर रज में मिल गया था । उसी प्रकार हे दस सहस्त्र ग्रामाधीश (दस सहसा सिशोदिया), युद्ध-भूमि में तेरी वीरता को अवलोकन करते हुए तेरे सिर को लेने के लिये शिव ने हजार हाथ धारण किये ॥ ३ ॥

हे पत्ता के पुत्र जग्गा । तेरे सिरके टुकड़ों को शंकर ने अपने हाथों से एकत्रित कर एक अजीब तरह की पुष्प रूपी माला बना कर गले में धारण की और वह पुष्प माला उस रूण्ड-माल के ऊपर अलौकिक शोभा देने लगी ॥४॥

१८ परमार मालदेव

गीत (छोटा साणौर)

आयो पतसाह सोइज प्रब ईखे,
धू रहे लग जेते खत्र धोड़ ।

मालो ग्रह ग्रभवास मेटवा,

चढ़ियो वीग्रहियो चीत्तोड़ ॥ १ ॥

सांम सुछल सत्र दल सालू लिये,

वंध वांछ तो स लाधी वार ।

आयो कोट संकटियां ऊपर,

पालण जो न संकट परमार ॥ २ ॥

पांचावत पर जाय पांमियै,

मभ्क गढ़ पेठो निभे मणो ।

रण खट मास खमे जाय रोहो,

ताप मेटण दस मास तणो ॥ ३ ॥

वीजुजलां वणा खल विहंडे,

घणो पराक्रम मछर घणो ।

माल मूओ वीजो भव मेटण,

तीजो लोचन ग्रथी तणो ॥ ४ ॥

(रचयिता :— पीरा आशिया)

भावार्थ :— हे मालदेव, जिस दिन बादशाह अकबर ने चित्तौड़ पर आक्रमण करने हेतु चढ़ाई की उस दिन तूं ने पुण्य–अवसर देख कर ध्रुव के समान अटल निश्चय कर इस संसार के आवागमन से मुक्त होने के लिये, रण–भूमि में तूं ने प्रवेश किया। इस प्रकार तूं ने क्षत्रिय कुल के यश को उज्जवल किया ॥ १ ॥

हे परमार, जिस समय शत्रु–सेना उमड़ कर युद्ध–भूमि में उपस्थित हुई उस समय हे सिंह के समान वीर, तुझे अपनी इच्छानुसार ही सुअवसर प्राप्त हुआ अर्थात् तूं ऐसे ही समय की प्रतिज्ञा करता

रहता था। हे वीर! पुर्नजन्म के कष्ट से वीर गति प्राप्त कर मुक्त होने के लिये चित्तौड़ दुर्ग की युद्ध जन्य आपत्ति के समय रण-भूमि में तूंने युद्ध किया ॥ २ ॥

हे पांचा के वंशज-(पंचमाल वंश) इसी दुर्ग को अपने पूर्वजों की वीर भूमि समझते हुए, तूंने निर्भीक हो, दुर्ग में प्रवेश किया। गर्भवास में दस माह के कष्ट से मुक्त होने के लिये छः मास तक, तूंने युद्ध भूमि के कष्ट को सहन किया ॥ ३ ॥

हे मालदेव तूंने क्रुद्ध होकर बड़े साहस से अनेकों शत्रुओं को तलवारों से नष्ट कर दिया। इस भूमि की रक्षा हेतु, पृथ्वी का तीसरा नेत्र होकर तूंने अपने पुनर्जन्म के कष्ट को मिटाया और धराशायी हुआ ॥ ४ ॥

१६ रावत गोविंद, चुण्डावत, बेगूं

गीत (छोटा साणोर)

पाखै भख गयण जोविये पंखण, जलण होम वण रहियो जाइ।
ईशवर कंठा हूंत सयाणे, घट गोविन्द वंटिये घण घाई ॥१॥

रातल,अगन सामल,पल, रहिया,हुये न कंठां गल शंकर हार।
रावत तणौ तणौ मुँह रूकें, वप तल तल हुवौ जुध वार ॥२॥

हुई न आसा, सामल, हुँतासण, तवे न लूथै जट धर ताइ।
खंगार उत तणौ मुँह खागै, घट रज रज पुहतो घण घाइ ॥३॥

करे अण दाह मंगल ग्रध कामियाँ, सुजड़ै खपे सीसोद सर।
कमल धूणतो गयो कमाली, कमल अलाधे दोप कर ॥४॥

(रचयिता—अज्ञात)

भावार्थः- हे गोविंदसिंह। युद्ध में विशेष घावों से तेरा शरीर विभाजित हो गया, जिस से मान्साहार करने के लिये गिद्धनियाँ, जला

ने के लिये अग्नि और गले में मुण्डमाल धारण करने के लिये शंकर वंचित रह गये ॥ १ ॥

हे रावत ! तेरा शरीर युद्ध-समय तलवार के सामने तिल तिल हो गया, जिस से गृद्धनियाँ, चील्हें व अग्नि मांस रहित रहीं और शंकर की ग्रीवा विना मुण्डमाला के ही रही ॥ २ ॥

हे खङ्गार के पुत्र, तेरा शरीर तलवार के प्रबल प्रहारों से रज रज हो चुका। इसी कारण से अग्नि और गृद्धनियाँ आशा-रहित हो गईं और शिव को ढूंढने पर भी तेरा सिर न मिला ॥ ३ ॥

हे सिशोदिया, तेरा सिर और शरीर तलवार से जर्जरित हो जाने से शंकर को तेरा मस्तक प्राप्त नहीं हुआ। अतः सिर हिलाते हुए निराश हो गये और इसी प्रकार अग्नि एवं गृद्धनियाँ भी मांस न पाने से निराश हो चलीं ॥ ४ ॥

२० 'राठोड़ रामदास' मेड़तिया

गीत (छोटा साणौर)

शशि थाइस तप थाइ सूरिज शितल,

तजे महोदधि वारि तुरंग ।

मृत मै रामदास रण मेले,

गमण पछम दिशि मंडे गंग ॥१॥

जले चन्द्र शिलो थाई जग चख,

रेणायर सां शतो रहे ।

जयमाल उत जाइ छांडे जुध,

वेणी जल उपराठ वहे ॥ २ ॥

आतश इन्दु अरक ताढ़िम अंग,

सायर छंडे लहरि सुवाह ।

पह मेड़ता चले पारोठो,
प मुंहे वहे सुर सरि प्रवाह ॥३॥
सोम सुर सामँद्र प्रता सुध,
अघट सुभाव दाखवे अंग ।
राम कियो मृत शामि धरम रसि,
पुनि तोया मिलि पूव प्रसंग ॥४॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ :– हे राठोड़ रामदास, तूँ यदि मृत्यु के भय से युद्ध–स्थल को छोड़ कर चला जाय तो चन्द्रमां तीक्ष्ण किरणें और सूर्य्य–शीतलता धारण कर लेता है तथा समुद्र स्थिर हो जाता है एवं गंगा का प्रवाह पश्चिम की ओर मुड़ जाता है ॥ १ ॥

हे जयमल के पुत्र, यदि तूँ युद्ध–स्थल को त्याग कर विमुख हो जाता है तो चन्द्रमां प्रज्वलित होने, सूर्य्य शीतलता प्रदान करने तथा समुद्र अपनी सुन्दर उर्मियाँ छोड़ देता है एवं गंगा के जल का प्रवाह विपरीत दिशा में होने लग जाता है ॥ २ ॥

हे मेड़ता नरेश, तूं रणांगण में शत्रुओं को पीठ दिखाकर युद्ध–भूमि से प्रयाण करता है तो, उस समय चन्द्रमां तेज को धारण कर लेता है और सूर्य शिथिल–प्रकृति–बन जाता है। समुद्र लहरें रहित होकर गंगा उलटी बहने लग जाती है ॥ ३ ॥

टिप्पणी:—वि० सं० १६३३ ई० सन् १५७६ में मेवाड़ के महाराणा प्रतापसिंह के ऊपर आमेर (जयपुर) के राजा मानसिंह के सेनापतित्व में दिल्ली के बादशाह की सेना ने चढ़ाई की और हल्दी–घाटी के मैदान में प्रसिद्ध युद्ध हुआ; तब राठोड़ जयमल के पुत्र रामदास ने युद्ध में अपना पराक्रम प्रदर्शित किया; उसी का इस गीत में वर्णन किया गया है।

कवि वर्णन करता है—रामदास अपने पूर्वजों की भांति स्वमी धर्म का निर्वाह करने हेतु युद्ध में शौर्य दिखाता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ। चन्द्रमां, सूर्य, समुद्र और गंगा आदि अपनी विपरीत गति त्याग कर पूर्व स्थिति में आगये। अर्थात चन्द्रमां पुनः शीतल किरणों को धारण करने लगा, सूर्य तेजस्वी होगया, समुद्र में लहरें प्रवाहित होने लग गई और गंगा का प्रवाह पुनः पूर्व में होने लगा ॥४॥

२१ चुण्डावत नरू और जैत्रसिंह

गीत (छोटा सावझड़ा)

उलटा दल आय लगे उँहटाला ।
सूर नरू भड़ जेत संघाला ॥
रैणां राण तणी रखवाला ।
कवल बाराह पड़ै जहाँ काला ॥१॥

खैंग रूत उनागै खागे ।
भडतां के कायर नर भागै ॥
लड़ लोहां रहिया विप लागै ।
वथ वथ वीर असी विध वागै ॥२॥

सा दलपता जिमसता करसाका ।
कमा नरू संग दुदस काका ॥
वसुधा अमर करे जस साका ।
सोहड़ राण रा पड़ै सराका ॥३॥

काका सहित जेत कसनाणी ।
आवध सैन हणै असुराणी ॥

यण पर ईला राण घर आणी ।
चूरे दल रहियौ चुंडाणी ॥४॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- ऊंठाला (वल्लभनगर) पर शत्रु सेना आक्रमण करने के लिये उमड़ आई, राणा की इस भूमि की रक्षार्थ काल पुरुष व शूकर-स्वरूपी वीर नरू और जैत्रसिंह ने अपना पड़ाव डाला ॥ १ ॥

नग्गी तलवार लिये घोड़े को युद्धः स्थल में दौड़ते हुए देखकर भिड़ते हुए कितने ही कायर पुरुष रणांगण से भाग गये और जो वीर युद्ध-भूमि से पीछे नहीं हटे उन्हें वीर नरू और जैत्रसिंह ने बढ़-बढ़ कर तलवारों द्वारा जख्मी कर दिया ॥ २ ॥

राणा के योद्धा सरदारसिंह, प्रतापसिंह, कमा, नरू और साथ में दूदा जैसे काका सहित पत्ता चुण्डावत के स्वरूप युद्ध कर सामान्य रूप में धराशायी हुए और इस युद्ध के विजय-यश को पृथ्वी पर चिरायु किया ॥ ३ ॥

किशनावत जैत्रसिंह और इसके काका ने मुगल सेना को शस्त्रों से नष्ट कर महाराणा का अपनी भूमि पर पुनः अधिकार करवाया। वीर चुण्डावत शत्रु-दल का दलन करता हुआ वीर गति को प्राप्त हुआ ॥ ४ ॥

२२ वीर चुण्डा के वंशजों की युद्ध सेवाएँ

गीत (छोटा साणोर)

चंद नाम किया भीखम काय चूण्डै,
भड़ रतन सी मुओ भाराथ ।
कांधल मूलां सीस काटिया,
राखे बिरद जके रघुनाथ ॥१॥

मेरो चाचो पई मथा रै,

राघव दे जीता रण–वार ।

मुओ, कलू, चीत हरमाड़ै,

सूरौ कसन करारे सार ॥२॥

रायां सींघ, गमचंद, रतनो,

प्राग, करमसी, जैमल, पाल ।

लीनो, मान, खेतसी, लखमण,

लाडखान, वेणौ, लंकाल ॥३॥

सांइये, सोढ, कियो गढ साकौ,

दूजे, सते, पते, दोय वार ।

फौजां सीस, कमौ, फर हरियौ,

खेत धणाह जीतो खंगार ॥४॥

कसने, नाम कियौ चहुँ कूटे,

सामल, फरशे, कमै, सधीर ।

आगल, मान, नरू, ऊंटहला,

जैत, मुओ कटक जहांगीर ॥५॥

सिंघ, जगौ, गोविंद, चढ़ सारै,

पीथो, दूदो, अचल पहाड़ ।

सात वरस विग्रह सीसोदां,

मान, मेध, आखी मेवाड़ ॥६॥

करन, पंचायण, गोकल केशव,
नारायण, हामो, नरख ।
नग, जूझार, खेमसी, नरसी,
विने, हरि, रहिया विलख ॥७॥
केवल भगु, करमसी, कचरो,
आसो, खानो, लखां अमूल ।
अचलो, वसनो, दूदो, आयौ,
डूँगरसिंह, सखर, सादूल ॥८॥
राणा चाढ़ वांकड़ा रावत,
खत्रवट कांहि न लागै खोट ।
परियां तणां प्रवाड़ा पूरत,
कोट तुहालै वाथा कोट ॥९॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ:— वीर रतनसिंह, भीखम और चुण्डा ने कितने ही युद्ध विजय कर अपने नाम और यश को फैलाया, और अन्त में युद्ध-द्वारा ही धराशायी हुए। कांधल, मूलराज और रघुनाथ ने शत्रुओं के सिर काट कर अपने कुल की मर्यादा रक्खी ॥ १ ॥

राणा मोकल के शत्रु मेरा व चाचा को पई कोटड़ा (पहाड़ी स्थल) पर राघव देव ने मार कर विजय प्राप्त की। शूर वीर किशनसिंह और कल्लू ने तलवार की ताकत से हरमाड़ के युद्ध स्थल में वीर गति प्राप्त की ॥ १ ॥

रायसिंह, रामचन्द्र, रतनसिंह, प्राग करमसिंह, जयमल, लीवा मानसिंह, खेनसिंह, रावत लक्ष्मण, लाड खान और वैरसिंह तुल्य शत्रुओं को रणांगण में नष्ट करते हुए धराशायी हुए ॥ ३ ॥

सलूम्बर का स्वामी साईदास सोढ़ा ने चित्तौड़ पर महाराणा उदय-सिंह के समय अकबर की शाही सेना से युद्ध कर वीर गति प्राप्त की। उसी तरह दूसरे सत्ता और पत्ता ने दो बार शत्रुओं से सामना कर उन्हें परास्त किया। रावत कम्मा ने भी दुश्मनों के ऊपर विजय-ध्वज लहराया तथा खङ्गार ने बहुत से युद्ध स्थल विजय किए ॥ ४ ॥

किशनसिंह, सांवलदास कम्मा, परसराम आदि ने युद्ध में धैर्य्य रख चारों दिशाओं में अपने नाम अमर कर दिये। मानसिंह, नरू, जैत्रसिंह राणा की सेना के अग्र भाग में रह कर जहाँगीर की सेना से सामनः कर रणांगण में काम आये ॥ ५ ॥

वीर रावतसिंघा, जग्गा, गोविंदसिंह, पीथा, दूदा, अचलदास व पहाड़सिंह ने तलवार के सामने जाकर घावों से परिपूरित होकर वीर गति प्राप्त की। उसी तरह मानसिंह, वेंगू के रावत मेघसिंह ने मेवाड़ से शत्रुओं के ७ वर्ष के अधिकार को हटा कर देश को महाराणा के अधिकार में किया ॥ ६ ॥

करन, पंचायण, मोकल, नारायण और हामा ने भी संसार में अपनी युद्ध विजय चिरायु कर दी। नगराज ने चित्तौड़ पर हाड़ी राणी के लिये युद्ध में शत्रुओं से लोहा लेकर वीर गति पाई। जूंझारसिंह, रत्नसिंह, नरसिंह, बना और हरिदास आदि बलख के युद्ध में धराशायी हुए ॥ ७ ॥

केवलदास, भगू करमसी, कचरा, आशा और खाना, इन वीरों ने शत्रुओं को निर्मूल कर दिया। अचलसिंह, बिशनसिंह, दूदा, डूँगरसिंह, शार्दूलसिंह आदि चित्तौड़ दुर्ग पर हाड़ी करमेती के लिये होने वाले युद्ध में भली प्रकार लड़ कर धराशायी हुए ॥ ८ ॥

हे राणा! ऐसे बांके शूर-वीर रावतों ने शत्रुओं से सामना कर क्षात्र कुल के गौरव की कमी नहीं रक्खी और अपने पूर्वजों के समान तेरे सभी देश-दुर्गों की रक्षार्थ स्वयं दुर्ग बन कर (उनकी) रक्षा की ॥ ९ ॥

२३ रावत अचलदास शक्तावत, बानसी

गीत (सैलार)

पति साह हरम पुकारे रे ।
मेवाड़ो अचलो मारे रे ॥
जगि खेतल मोकल जेहा रे ।
अगा लग राणा एहा रे ॥

चित्तौड़ दलीपत चढ़िया रे ।
गहरे सुर बाजित्र गुड़िया रे ॥
जुड़ेवा कजि सकते जाया रे ।
ऊपरि ऊंटहला आया रे ॥ १ ॥

तर वारि कुबाणां तीरां रे ।
मातो भड़ मीर हमीरां रे ॥
गुरजां बोह बाणी गोली रे ।
हुविया डंडेहड़ होली रे ॥

लाथो ल वत्था लागा रे ।
आहुड़िया मंगला आगा रे ॥
घरां दस लाग पिया घेरे रे ।
खेसविया अचले खागे रे ॥ २ ॥

दुर वेस पगां तल दीधा रे ।
लोहां वलि एता लीधा रे ॥
जोधार महा भड़ जूटे रे ।
फिर अकिर पटाभर फूटे रे ॥

खत्रि ग्रत्रिया खते खारे रे ।
त्रित्रिया कहै गौरव वारे रे ॥
हलकार अरीगढ़ हाकारे रे ।
ग्रत्रिया करि कूंत घसा कारे रे ॥ ३ ॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ :— भयातुर बेगमें कहने लगी कि— "हे बादशाह ! मेवाड़ का अचलदास मार रहा है।" इसके पूर्वज राणा खेतसिंह व मोकलसिंह जैसे वीर पहले से होते आये हैं। यह योद्धा भी वैसा ही है। दिल्लीपति ने जब चित्तौड़ पर आक्रमण किया तब रण-वाद्य बजाता हुआ शक्तावत का यह पुत्र अचलदास ऊंठाला (वल्लभ नगर) में युद्ध करने के लिये आया ॥ १ ॥

बेगमें कहती हैं कि तलवार और तीरों से राणा हमीर के वंशज एवं मुगलों के मध्य घमासान युद्ध होरहा है। गुर्जों, तीरों एवं बहुधा बन्दूकों की गोलियों की बौछार और होली की "गैर" की तरह स्फूर्ति से वीर तलवारों द्वारा युद्ध कर रहे हैं। सामंतों ने मुगल सेना को घेर लिया और अचलदास अपनी तलवार से हमारे सैनिकों को पीछे धकेल रहा है। इसलिये हे बादशाह ! अब अपने स्थान पर चले चलिये ॥ २ ॥

हे बादशाह ! दर्वेश (मुगल साधु), सैनिकों को मार कर, धरती पर गिरा कर बलि चढ़ा रहे हैं। क्षत्रिय योद्धा अचल दास झूम झूम कर

टिप्पणी:—१-अचल दास, महाराणा उदय सिंह के छोटे पुत्र शक्तिसिंह का बेटा था। महाराणा अमर सिंह (प्रथम) के समय दिल्ली की मुगल सेना के साथ चित्तौड़ गढ़, मांडलगढ़ के युद्ध में इन्होंने भाग लिया और मारे गये। बानसी ठिकाने के रावत इनके वंशज हैं।

इस गीत में अचल दास की वीरता का वर्णन है।

हाथियों को तीर और भालों से छेद कर नष्ट कर रहा है। वेगमें पुकार-पुकार कर कह रही हैं कि हे बादशाह! शत्रुओं ने अनेकों सैनिकों को शस्त्र से आहत कर धराशायी कर दिया है और ऊपर से हमें चुनौति दे रहे हैं ॥ ३ ॥

२४ रावत अचल दास शक्तावत, बानसी

गीत (बड़ा साणोर)

पछटि सार धारां मुहे मांडे रिण पाधरे।
अतुल बल अचल निय वंस उजाले ॥
देस विच अट किया कटक दुर वेस चा।
काढ़िया वाढ़िये गाढ़ काले ॥१॥

वाढि केवांण मुहि काढि जु जुवटां।
सामि चें काम घण थट समेला ॥
अड़े रहिया भ्रिसाण जड़े थांणो हला।
भड़ अनड़ किया गयणाग भेला ॥२॥

सूर सीसोदियाँ नूर वधियाँ सु वँस।
पाधरै सार धारां प्रहारे ॥
उसर चढ़िया जिता चूर कीधा अलगा।
हालिया विया वर सरम हारे ॥३॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ:- हे वीर अचलदास तू ने दर्वेश साधुओं से युद्धारंभ कर तलवार के सामने उनका अभिमान नष्ट कर दिया और अपने कुल को उज्ज्वल कर दिया है। दर्वेश साधुओं की सैना का पड़ाव मेवाड़ भूमि में पड़ा था उनको काल के समान क्रुद्ध हो रक्त रंजित कर भगा दिया।

सकताउतें सू मित सम धरिया ।
विसव सिसि सूर हय वयण ॥
अण भंगत्यां राउत अचलाउत ।
रूप चढ़ावै नर रयण ॥ २ ॥

घड़ पति साह सरिस चढ़ि धाए ।
विघन प्रसाद कियां खत्र वाट ॥
अजुवालै अतुली नल आचां ।
कलि जुग तास न लागै काट ॥ ३ ॥

समर समाथ लाख पाखर सम ।
प्रकट पराक्रम चंद प्रहास ॥
रज चीटियौ तपै गयो गुर ।
जगि उजलो खत्री कृत जास ॥ ४ ॥

(रचियता:- अज्ञात)

भावार्थ:- हे सिशोदिया नारायणदास ! सभी युद्धों में विजय प्राप्त कर तूंने अपने पूर्वज मालदेव और वल्लू जैसे वीरों के यश रूपी देवालय का जीर्णोद्धार कर दिया ! पूर्वजों के गौरव की सभी परंपराओं का स्मरण रखते हुए तूंने विजय-यश प्राप्त किया ।

टिप्पणी:—१ नारायणदास महाराणा उदयसिंह का प्रपौत्र और शक्तिसिंह का पौत्र था तथा अचलदास का पुत्र था । महाराणा अमरसिंह के समय होने वाले युद्धों में यह मुगल सेना के साथ रहा और सगर (महाराणा उदयसिंह का छोटा पुत्र) का हिमायती था । इसने वेगूं की जागीर पाई थी । शाही सेना में रह कर इसने कई युद्धों में वीरता प्रदर्शित की । जिस की कुछ कवियों ने प्रशंसा की है- उन्हीं में से यह एक है । बादशाह की ओर से इसको भिणाय की जागीर दी गई थी ।

हे शक्तावत ! तेरे पूर्वजों ने युद्ध भूमि में सदा ही अपने वचनों का सूर्य, शंकर, विष्णु और चंद्रमा के समान दृढ़ता से पालन किया है। हे अचलदास के पुत्र ! तूं किसी से भी पराजित नहीं हुआ और तूंने अपने कुल-गौरव को अधिक बढ़ा दिया।

हे वीर योद्धा ! बादशाह की सेना के सम्मुख आगे बढ़ कर क्षत्रिय कुल की मर्यादा पुनः स्थापित की। इस प्रकार तूंने अपने गौरव को कलियुग रूपी जंग (लोहे का मैल) से दूर रख प्रखर कर दिया है।

हे योद्धाओं में सर्व श्रेष्ठ, बख्तर धारण करने वाले योद्धा ! तूं प्रचण्ड बलवान और तलवार चलाने में प्रवीण है। हे सर्वश्रेष्ठ राजा ! तूं क्षत्रिय कुल गौरव से परिपूर्ण रहता है; इस लिये दीर्घायु रह जिससे, क्षत्रिय कुल का गौरव संसार में अनंत काल तक रहे।

२७ शक्तावत केशव दास

गीत (सिंह चला)

वळी भाजिगा बळ बंधरो बेली ।
भार थयां भुज सारी ॥
काढी भाण तणै गज केहर ।
केसव दास कटारी ॥ १ ॥

विषमी वार खड़ग झड़ बाजे ।
इसड़ी बहै अटारी ॥
माथों धरण गयां मेवाड़ै ।
सोने रणी संभारी ॥ २ ॥

विरद अगार अभ नमै बळ भद्र,
रिण रहि अचल रहा ही ॥

वढिये कमल् पछै वाढ़ाली ।
वंकूढ़ै रावत वाही ॥ ३ ॥

सामल् सूर जहीं सांगाहर ।
सांची पैज सम्हाली ॥
रूंधे दुसमण रे उर रोपी ।
पूचाल्‌ै प्रत माली ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थः-वीर पुरुषों को युद्ध भूमि में वढ़ते हुए देख कर केशव दास के सहायक बहादुरों ने युद्ध भूमि छोड़ दी। भाण-पुत्र केशवदास ने सिंह के समान हाथी-रूपी क्षेत्र पर आक्रमण करने के लिये क्रुद्ध होकर अपने पास से कटारी निकाली ॥ १ ॥

भयंकर युद्ध की गति में तलवारों की बौछारें हो रही थीं, उस समय वीर सिशोदिया ने अपने सिर के कट कर गिरने के बाद स्वर्णिम कटारी निकाली ॥ २ ॥

दूसरे वीर वलभद्र के समान युद्ध भूमि में अडिग रहकर तूंने अपने कुल-उज्जलता की सीमा कर दी है। वांके वीर रावत, तूंने अपने सिर कटने के पश्चात् भी शत्रु के सिर में कटारी का वार किया ॥३॥

वीर सामल दास, सूरज मल जैसे है सांगाके पौत्र, युद्ध में सावधानी पूर्वक खड़ा रह कर भुजवल से शत्रु-हृदय में कटारी का वार किया ॥४॥

२८ शक्तावत प्रताप सिंह

गीत (वड़ा सावभड़ा)

धमस बाज ऐराकियाँ अरानां धड़ हड़ै ।
कावली हू ह गे जूह चड़िया कड़ै ॥

आज मैदान पतिसाह दोय आथड़ै ।
पातला ऊपरै फूल धागां पड़ै ॥ १ ॥

वेवड़ा, चौवड़ा, वेध पड़ बावरां ।
औफड़ां फड़ा तूटै छड़ां असम्मरां ॥
चौसरां थरां आडंबरां चम्मरां ।
नरां रै उपरै आभ फाटो नरां ॥ २ ॥

खल पल खेचरां वीर नाचद खले ।
ऊपरा ऊपरी गैंढलां ऊथलैं ॥
चाय गुरु अचल दादो तको का मचूचले ।
पतसाही कटक कंथियो पातले ॥ ३ ॥

राणा गजड़ तणै मार कै रावत ।
अह लेके वलू रे अनै अचालावतै ॥
मरण वालै लियो जरद अण मावतै ।
सीलियौ आवगो भार समतावततै ॥ ४ ॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ:—तोप तलवार चलने की धड़ धड़ा हट होते ही काबुल वासी यवन वीर हुँक्कार करते हुए गजा रोही हो युद्धार्थ चढ़ाई करने लगे। युद्ध में आज बादशाह और प्रतापसिंह भिड़ने लगे । प्रताप सिंह पर पैनी तलवार का वार होने लगा।

दोहरी-चौहरी बाबर खानदान के साथ होने वाली शत्रुता से झगड़ा बढ़ा । शत्रुओं के तलवार और भालों के प्रहार से वीरों की अंतड़ियाँ बाहर पड़ने लगीं। यह आक्रमण ऐसा भयंकर था मानों आकाश टूट पड़ा हो। मुगल बादशाह पर उस समय शाही आडंबर से चँवर ढुल रहे थे।

(शत्रुदल के) ढालों सहित योद्धा एवं हाथी एक दूसरे पर गिरने लगे जिन्हें भक्षण करने प्रेतादि वीर एवं पक्षी उमड़ पड़े। नारद नृत्य करने लगे। अचलदासोत पत्ता क्या कभी दब सकता है ? उसने शाही सेना को रौंद कर रोक दिया।

राणा राजसिंह के सामंत बल्लू, अचलदास के वंशज ने (पत्ता ने) युद्धोत्साह से फूले न समाते हुए बदन पर कवच पहना और शत्रुओं का बदला चुकाने का भार अपने कंधों पर उठा विपक्षियों का चुकारा (सफाया) किया।

२६ शक्तावत करमसिंह और खेंगार

गीत (बड़ा सावझड़ा)

प्रथम बोल परियां तणा तेज सुध पालिया ।
आज रा गैण लग कूंत उलालिया ॥
बांकड़े भाण रे बलु. रे वालिया ।
उरां ऊपरी खेंग ओतोलिया ॥१॥

धीर पामे नहीं तेग ऊँची धरे ।
कने धमरोलिया मीर तोबा करे ॥
तूर जांगी घूर बोम लागा तरे ।
ऊडिया बूर खंगार सिर ऊपरे ॥२॥

वाढिया लड़थड़े घड़े धड़ दोवला ।
गांथला लीजिये बाघला गोकलां ॥
भाइयां बिहूँ भुज भार सा हुए भला ।
माडा तणै घाय मरड़के मैंगलां ॥३॥

राखियौ रूप मेंडारै रावते ।
चापड़े थापड़े तुरी चलाउते ॥
ईहगां थयो उदमाद घर आवने ।
साहिजां तणी जीत सगताउते ॥४॥

(रचयिता :— अज्ञात)

हे भाण के पुत्र बल्लू ! तूं ने शीघ्र ही आकाश की ओर भाले उठा कर पूर्वजों के गौरव का निर्वाह किया है और शत्रुओं के सामने घोड़ों को बढ़ा कर अपना नाम विख्यात कर दिया है ।

हे करमसिंह ! तूं ने मुगलों को घायल कर तोबा-तोबा कहलवा दिया और तलवार को कभी भी खूंटी पर विश्राम और शांति नहीं दी । युद्ध के समय रण वाद्य की ध्वनि से आकाश गूंज उठा और उसी समय वीर खंगार का मस्तक भी शस्त्र से कट कर भूमि पर गिर पड़ा ।

हे गोकुलसिंह ! सिंह की भाँति तूं ने शौर्य का प्रदर्शन किया जिस से धड़ से कटे हुए अङ्ग चारों ओर लटक रहे हैं । भाइयों ने अपनी दोनों भुजाओं पर युद्ध भार धारण कर 'माड़ा' स्थान के हाथियों को शस्त्र द्वारा आहत कर धराशायी कर दिया है ।

हे मेडा के स्वामी शक्तावत, तूं ने शत्रुओं के सामने बढ़ कर वीरत्व का रूप दर्शाया और बादशाह को पराजित कर, विजय प्राप्त की । जिस से कवियों के घर २ में उत्सुकता से यशोगान गाये जाने लगे ।

टिप्पणी:—ये दोनों भाई थे और महाराणा उदयसिंह के छोटे पुत्र शक्तिसिंह के पौत्र थे । महाराणा अमर सिंह (प्रथम) के समय ऊंठाला (वल्लभ नगर) दुर्ग के मुगल प्रतिनिधि कयूम खाँ के साथ युद्ध हुआ । जिसमें बल्लू सिंह ने दुर्ग द्वार के किवाड़ों में लगे भालों के साथ अपने को सटा कर हाथी द्वारा आक्रमण करवाया; जिससे किवाड़ तो टूट गये परन्तु बल्लू सिंह भालों से छिद गये और वीर गति प्राप्त की । इसी प्रकार करम सिंह और खंगार ने भी उक्त महाराणा के समय हुए युद्धों में वीरता पूर्वक भाग लिया । इस गीत में दोनों की वीरता का वर्णन है ।

३० राजा भीमसिंह सिशोदिया, टोड़ा १

गीत (छोटा साणोर)

जुग चार हुआ भो भारत जोतां,
अरक कहै ऐ वात अथाह।
भीम तणों भांजे धड़ भवसां,
माथौ साबा से रण मांह॥ १ ॥

सीसोदिया तणों सूरा पण,
भाण गयण पति साख भरें।
दल अफड़ैं दलां दुहुं दुजड़ी,
कमल कल्हे वाखाण करे॥ २ ॥

विढतौ भीम साथियां वधतौ,
साखी सूर उडं ते सास।
धड़ पड़ियौ धड़चै अरि धारां,
सिर पड़ियौ आखे साबास॥ ३ ॥

ये वातां अखियात अमरावत,
कैरव---पांडवां जेम कर।
पड़तो धड़ पाड़तौ पंचाहर,
सिव वींधियो बोलतौ सिर॥ ४ ॥

(रचयिताः- कल्याणदास, महड़ू)

टिप्पणीः- १. यह प्रसिद्ध महाराणा प्रतापसिंह का पौत्र और महाराणा अमरसिंह (प्रथम) का छोटा पुत्र था। महाराणा प्रताप के स्वर्गारोहण के पश्चात भी महाराणा अमरसिंह ने दिल्ली की मुगल सल्तनत से निरन्तर लोहा लिया और छोटे-बड़े सतरह युद्ध किये। जिनमें कुछ चढाइया तो भीषण रही। इस समय बादशाह अकबर का

भावार्थः– सूर्य कहता है कि मुझे युद्ध देखते देखते चार युग हो गये हैं किंतु इस युद्ध की बात अनोखी ही है। युद्ध क्षेत्र में भीमसिंह का धड़ धराशायी हुआ है और सिर उत्साहित होकर बोल रहा है।

आकाश का स्वामी सूर्य सिशोदिया की वीरता की साक्षी देता हुआ कहता है कि कबंध दोनों सेनाओं के बीच में लड़ता हुआ तलवार से कट गया किंतु उसका सिर उसकी प्रशंसा कर रहा है।

देहांत हो चुका था और नुरुद्दीन जहांगीर दिल्ली के तख्त पर आसीन था। अपने अपने पिताओं के कृत संकल्प को पूरा करने के लिये जहांगीर और अमरसिंह के बीच दांव-पेच चल रहे थे, जिसमें उपरोक्त भीमसिंह ने कई बार शत्रु सेना के ऊपर शौर्य स्थापित किया था। वि० सं० १६७१ (ई० स० १५७४) में मेवाड़ और दिल्ली दरबार के बीच संधि होगई। महाराणा अमरसिंह का ज्येष्ठ महाराज कुमार कर्णसिंह, शाहजादा खुर्रम के साथ अजमेर के मकाम शाही दरबार में जाकर बादशाह पास पहुँचा। इसके बाद महाराणाओं के एक सहस्र सवार जमीयत के रूप में दक्षिण में रहने लगे और महाराणा के बड़े बड़े उमरावों, सरदारों, भाइयों तथा राजकुमारों का शाही दर्बार में आमोदरफ्त होने लगा। अपने वीरता पूर्ण कार्यों के कारण उपरोक्त भीमसिंह की शाही दर्बार में अच्छी पहुंच हो कर उसने मेड़ता का इलाका जागीर में पाया वह राजा-उपाधि प्राप्त कर पाच हजारी मंसबदार बन गया, तथा वह शाहजादा खुर्रम का तो अत्यन्त ही विश्वास पात्र होगया। तदनन्तर राजा भीमसिंह को टोंक-टोडा आदि परगने उपलब्ध हुए। बादशाह जहाँगीर के पिछले समय में नूरजहाँ बेगम के बहकाने में आकर बादशाह खुर्रम से अप्रसन्न होगया तथा उसको सजा देने के लिये शाही सेना रवाना हुई। खुर्रम के पक्ष पर वीर भीमसिंह शाही सेना से, जिसका सेनापति शाहजादा परवेज था और महाबतखाँ, मिली राजा जयसिंह तथा राजा राजसिंह आदि कितने ही वीर साथ थे, भिड़ गया वि० सं० १६८१ कार्तिक शुक्ला १५ को बनारस के समीप टोंस नदी के किनारे हाजीपुर के पास शाहजादा परवेज तथा भीमसिंह की सेना से भयंकर युद्ध हुआ प्रबंलवेग से तलवार चलाते हुए भीमसिंह ने शत्रु सैन्य को विचलित कर दिया। शाही सेना के पैर उठ गये ही थे कि भीमसिंह जोधपुर के राजा गजसिंह से उलझ पड़ा और टुकड़े टुकड़े होकर रणक्षेत्र में कट पड़ा। उसके साथी शक्तावत मानसिंह, गोकुलदास आदि बहुत से वीर मारे गये तथा आहत हुए। भीमसिंह के संबंध के गीतों में इसी विषय का विस्तृत वर्णन है।

भीमसिंह कटते २ भी अपने साथियों से आगे बढ़ गया, उसके उड़ते हुए (टूटते हुए) श्वासों की साक्षी सूर्य दे रहा है। उसका धड़ शत्रुओं की (आहसे) धार द्वारा छिल-छिल (कट-कट) कर पड़ गया है और उसका सिर पड़ा पड़ा भी उसे शाबासी दे रहा है।

तेरे भिड़ते हुए धड़ ने भी पांच हजार शत्रुओं को धराशाई कर दिया और तेरे बोलते सिर को शिव ने अपनी मुण्ड माला में पिरो लिया। हे अमरसिंह ! तू ने अपना यश कौरव-पांडवों की भाँति अमर कर दिया है।

३१. राजा भीमसिंह सिशोदिया टोड़ा

गीत

अंग लगै बाण जूजुवा उडै।
गै गाजै बाजै गुरज ॥
भाजै नहँ दली दल भड़तां।
भीमड़ा हणमत तणा भुज ॥ १ ॥

त्रुट पड़ै ऊधड़ै बगतर।
चौधारां धारां खग चोट ॥
ओट होय मंडियौ अमरावत।
कालो पड़ै न मैमत कोट ॥ १ ॥

गोली तीर आछटै गोला।
दोला आलम तणा दल ॥
पड़ दड़ियड़ चड़ियड़ चहुँ पासै।
खुमाणौ लूंबिया खल ॥ ३ ॥

पातल हरा ऊपरा पराभव।
खल खूटा टूटा खड़ग ॥

पंडव नामी नीठ पाड़ियाँ ।
लग उगमण आथंमण लग ॥ ४ ॥

(रचयिताः- अज्ञात)

भावार्थः—युद्ध भूमि में वीरों के बाण लगने लगे, तोपें चलने लगीं और वज्र के समान प्रहार से हाथी चिंघाड़ने लगे । इस स्थिति में दिल्ली की सेना को पीठ न दिखा कर भिड़ते हुए हे भीमसिंह ! तूँ हनुमान के समान दिखाई दिया ॥१॥

तेरे वीरों की तलवारों से घोड़े धराशायी होकर प्रति पत्तियों के बगतर टूट-टूट कर पड़ने लगे और शत्रुओं की तलवारों से तेरी ओर के वीरों के शरीरों मे चारों ओर रक्त प्रवाहित होने लगा । अमरसिंह का पुत्र मदमस्त काल-सदृश, शहर कोट की तरह अडिग रह कर शत्रु-समूह से युद्ध करने लगा ॥२॥

चारों ओर से शाही सेना से घिरे हुए तेरे वीरों पर तीरों, गोलियों और गोलों की बौछारें होने लगीं और योद्धाओं के सिर गेंद के समान युद्ध-भूमि में पैरों तले भटकने लगे । हे सिशोदिया ! तेरे चारों ओर इस प्रकार शत्रु भूम गये थे ॥३॥

हे प्रतापसिंह के पौत्र ! तेरे परलोक जाते जाते शत्रुओं का विनाश होने ही वाला था कि इतने में तेरे हाथ में से खड्ग टूट पड़ा और हे यौद्धा भीम, पाण्डु-पुत्र भीम की भांति प्रातः से सायंकाल तक युद्ध करता हुआ कठिनाई के साथ तूं धराशायी हुआ ॥४॥

३२ राजा भीमसिंह सीसोदिया, टोडा

गीत (वड़ा साणौर)

प्रलै होवँ भड़ भिड़ज रिणताल लेग्वा पखें,
खत्रीपत भीम आवाहतें खाग ।

गिरन्द वजराखियां तणी परियड़ी गज,
नीजूड़े सूंड पांखाळा नाग ॥१॥

अरि चंचल घणा लाखां गने आवटे,
अमर रे खाग आवाहते एम।
ढालिया सिखर गिर जेम हसती ढहै,
तूंड तूटै वहै परी रह तेम ॥२॥

पिसण हेमर कचर नीथा कायल पुरे,
निवह खग पछटते वलव नामी।
गिरंद वजराखियां पांखियां भुयंग पत,
गजधरां पोगरां गयण गामी ॥३॥

मिटते खूरम भीमेण मृत दिन मछर,
विढै वीछोड़ियां खाग वांहै।
पड़े गज सवल धड़ मंडल ऊपरा,
मिले गज कमल वाउ मंडल माहै ॥४॥

(रचयिता:- चतरा मोतीसर)

भावर्थ:- हे क्षत्रिय धर्म की रक्षा करने वालों में शिरोमणि भीमसिंह; खुर्रम की सहायतार्थ तेरी तलवार चलते समय युद्ध-भूमि में असंख्य वीर और घोड़े प्रलय काल के समान नष्ट होने लगे। तेरी तलवार द्वारा पर्वत की चोटी के समान हाथियों के शरीर धराशायी होने लगे तथा हाथियों की शुण्ड, 'पर' आये हुए सर्प की भांति आकाश में इधर उधर उड़ने लगीं ॥ १ ॥

नोट:- नीचे के तीनों ही पद्य-खण्डों का भावार्थ एक उपमान और उपमेय इसी प्रकार से चले आते हैं।

३३ राजा भीमसिंह सीशोदिया, टोड़ा

गीत (छोटा साणोर)

भाखे धिन मरण तुहालो भीमा,
मुड़ि संचरता भाग मठे।
जल झूलियां मिटे ग्रभ जेथी,
तूं धारा झीलियो तटे ॥ १ ॥

अंत अखियात वात अमरा सुत,
अवरे नरे न होए आन।
वार सनान जठे जगि वांछे,
सार तटे तें कियो सनान ॥ २ ॥

सिसोदिया सुग्रित कीत सारीख,
अण दल हुओ वहंतै घाय।
तांतें लोह छोह गंगा तट,
मंजन कियो महा रिण माय ॥ ३ ॥

(रचयिता:- चतरा मोतीसर)

भावार्थ:- हे भीमसिंह, तेरी मृत्यु को सभी देखकर धन्य धन्य कहते हैं और सराहना करते हैं। जिस भांति इस भूमि के गंगा स्नान से सांसारिक मनुष्यों का आवगमन मिट जाता है, उसी भूमि में तूं ने युद्ध कर घावों से रक्त रंजित हो शोणित की धार से तथा गंगा जल से स्नान कर, तूं पवित्र हो गया है। इस प्रकार की भूमि से तथा रण से विमुख होकर भागने वाले मन्द भागी ही होते हैं ॥ १ ॥

हे अमरसिंह के पुत्र भीमसिंह, जिस गंगाजल से स्नान करने की वांछा मनुष्य करते हैं। उसी गंगा के किनारे पर तूंने युद्धारंभ कर,

तलवार की धार से रक्त रंजित हो, स्नान किया। ऐसे सौभाग्य अन्य व्यक्ति को कम प्राप्त होते हैं। तूं ने इस युद्ध में भाग लेकर अपना नाम अमर कर दिया ॥ २॥

हे सिशोदिया, तूं आवेश में आकर शत्रुओं की असंख्य सेना में युद्ध कर, गंगा तट की युद्ध भूमि में शस्त्रों के आघात से धराशायी होकर वीर गति को प्राप्त हुआ ॥ ३॥

३४ शक्तावत मान सिंह
(वड़ा साणौर)

समन्द पूछियौ गंग सूं रूप पेखे सुजल ।
वहै जमना किसूं नवल वांनै ॥
ऊजली धार पतसाह धड़ आछटै ।
मेलियो रातड़ौ नीर माने ॥ १ ॥

महोदय पूछियौ कहौ मो सहस मुख ।
जमुन की नवौ सँणगार जुड़ियौ ॥
भाण रै लोह सुरताण धड़ भेलियो ।
चलौ वल पंड मो पूर चड़ियौ ॥ २ ॥

टिप्पणी:– १ इस गीत का नायक मानसिंह महाराणा उदयसिंह का प्रपौत्र, और शक्तिसिंह का पौत्र तथा भाण का पुत्र था। यह वड़ा वीर और शक्तिशाली था। शाहजादा खुर्रम ने दिल्ली के खिलाफ जब विद्रोह किया और पटना हाजीपुर के पास गंगा के किनारे विक्रमी सं० १६८१ ई० सन् १६२४ मे शाहजादापरवेज से युद्ध हुआ तब महाराजा भीमसिंह के नायकत्व में मानसिंह ने वड़ा पराक्रम वताया और [illegible] सिधार गया। इस गीत में उसी का उल्लेख है

थागियल पूछियौ भणौ भागीरथी ।
सांवला नीर किसां समोहां ॥
साहरी फौज सगता हरे सांवली ।
लाल रंग चढ़ियो मार लोहां ॥ ३ ॥

जोय जमुना जुगत रीजियो समंद जल ।
त्रिगत हेकण वड़ी गंग वाती ॥
हिन्दुवै राव ओतालियो लोह हद ।
रगत मेछां तणौ नदी राती ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:— समुद्र पूछ रहा है कि हे गंगा ! यमुना आज नया रूप (लाल रंग) धारण कर कैसे वह रही है ? गंगा (इसका) उत्तर देती है— मान सिंह ने चमकती तलवार से शाही सेना विनष्ट कर दी है । अतः उसकी रक्त धारा से यमुना ने नया वाना धारण किया है ।

समुद्र पूछता है कि हे सहस्र मुखी यमुना ! तूने यह नया शृंगार क्यों किया है ? (इस पर) यमुना उत्तर देती है कि भाण के पुत्र ने शाही दल पर शस्त्र प्रहार किया है । अतः मैंने नया शृंगार बनाया है ।

समुद्र पूछता है कि हे गंगा ! श्याम जल में लाल रंग कैसे आ गया ? गंगा उत्तर देती है— नर-केसरी पुत्र शक्ति सिंह ने शाही सेना विनष्ट कर दी है अतः उसके रक्त प्रवाह से लालिमा आगई है ।

गंगा की यह उक्ति सुन समुद्र प्रसन्न हुआ । कवि कहता है कि— हिंदुओं के स्वामी ने मुगलों पर प्रबल शस्त्र प्रहार किया है; उससे यमुना का नीर रक्त रंजित हो गया है ।

३५ शक्तावत मानसिंह

गीत

सूरा वहसिया कारिमा खूसिया।
नेहसिया नीसाणै॥
मानड़ा! तो जस मेलियो।
आज रौ अवसाणै॥ १॥

जाल खाधौ सहि जादे।
ढाल गज तूं ढाहि॥
मानड़ा दल तणा मंडण।
मांडि पग रिण मांहि॥ २॥

खूरम खान दराव खीसिया।
वहासिया वांवाट॥
अवियाट दूजा वल अचला।
थोभियो गज थाट॥ ३॥

फिरै मुहड़ै गजां फोजां।
धजां नेजां ढाहि॥
भाण रौ गो गयण भेदे।
मान हरी पुर माहि॥ ४॥

(रचयिताः– जैता महियारिया)

भावार्थः– हे मानसिंह! कितने ही विपक्षी योद्धाओं को रणभेरी बजा कर तूं ने भयभीत कर दिया तथा कितने ही योद्धाओं को तलवार के घाट उतार दिया। इसी कारण आज तेरा बहुत यश है।

हे वीर ! शाहज़ादा खुर्रम ने जहाँगीर से धोखा खाया। उस समय जहाँगीर पक्षीय योद्धाओं को ढालों सहित हाथी से गिराने में तूं समर्थ हुआ। रणभूमि में बड़ी दृढ़ता के साथ तूने युद्ध किया।

हे भाण के पुत्र मानसिंह ! शाहज़ादा खुर्रम बादशाही दरबार से रूठ कर भाग गया। इसका पीछा करने के लिये बादशाह जहाँगीर ने नगारे बजवा कर आक्रमण किया। उस समय बल्लू और अचलदास जैसे हे वीर! तूने प्रतिपक्षी जहाँगीर की गजारूढ़ सेना को रोक दिया।

हे भाण के पुत्र! तूने विरोधी सेना की ध्वजा गिरा कर उस सेना को पुनः लौटा दिया। हे मानसिंह ! तूने शत्रुओं के शस्त्रों द्वारा वीर गति प्राप्त कर आकाश के परे स्वर्ग में निवास किया।

३६. शक्तावत मानसिंह

गीत (छोटा साणोर)

मेवाड़ थकौ पुरब खंड मांहे।
अड़्यो सगतहरा अनुमान ॥
जुग पर ढेस जीवणा जाई।
मरणा गयो कणारो मांन ॥ २ ॥

माटी पणो तुहालो मांना।
रहियो धण धणा दिन रोस ॥
कोस हेक मरणा जाई कुण ?
कविलो गयो हजारां कोस ॥ २ ॥

पहोवाद जहाँ गीर पातसा।
कहियो धिन गाणे करण ॥

ईहगां वचाया जठै दाखिया विरद एहा।
सगत्ताणी चिरंजीवो वंस रा सिंगार॥
दूसरा नरिन्दां हूँत कहावो दातार दूणा।
जंगा सार धार वागां चौगुणा जुंभार॥६॥

(रचयिता :— अज्ञात)

भावार्थ:- दिल्लीश्वर शाहजहाँ सेना सजा कर युद्ध विजय की उमङ्ग लेकर सीधा अजमेर आया। वहाँ बड़े प्रेम और उत्साह से कवियों को बुलाया और उनके लिये बख्शीस वृष्टि का फरमान निकाला।

इन कवियों को कुरान पढ़ा कर अच्छी तरह मुसलमान बना कर लाख-लाख की संपत्ति के साथ जागीर बख्शीस में दी जावे। इस बात को सुन कर सब कवि नूर-हीन हो कहने लगे-दीन बंधु ! हमें मुक्त कर दीजिये; हम आपका दान नहीं लेना चाहते।

परन्तु बादशाह ने क्रुद्ध हो कर कवियों को कारागृह में बंद कर परेशान किया; बिना अन्न जल के वे व्याकुल हो गये। उस समय ईश्वर स्वरूप शक्तिसिंह का पौत्र गोकुलदास आया और (उसने सम्मान के साथ) कर बद्ध हो सहानुभूति से सारी चर्चा सुनी।

(सब कुछ सुन कर) बादशाह से कहने लगा- इन कवियों को शीघ्र छोड़ दीजिये; क्योंकि ये सनातन हिन्दु-धर्म का त्याग नहीं करेंगे।

टिप्पणी:— १. यह वीर तो था ही, साथ ही कवियों का सम्मान करने वाला और दानी भी था। एक बार शाही दरबार में चर्चा चली कि राजस्थान के कवियों को मुसलमान बना कर कुरान पढाई जाय। इसके लिये कवियों को जेल में बंद भी कर दिया गया। गोकुलदास ने इसका बड़ा विरोध किया और कवियों को छुड़वाया।

इस गीत में उसी घटना का वर्णन है।

बादशाह ने उत्तर दिया—हे भाण पुत्र! कवियों को कैसे छुड़ाते हो! इनकी मुक्ति के लिये एक-एक के बदले एक एक सिर चाहिये।

बादशाह का उत्तर सुन गोकुलदास ने प्रतिज्ञा की और सारी बात मंजूर कर अपनी कीर्ति के हेतु कई सामन्तों के सिर उतार कर इस तरह देने लगा—जैसे द्रोपदी को भगवान ने चीर प्रदान किया था।

कवियों को बचाने से इस प्रकार उन्होंने यश फैलाया कि हे कुल भूषण शक्तावत! तुम दीर्घ जीवी हो, अन्य दानी राजाओं से दुगुने दानी और युद्ध करने वालों से चौगुने वीर हो।

३८ शक्तावत गोकुल दास, सावर

गीत (छोटा साणौर)

भीमा जल मोहोर भेलिया भारत,
घणे पेसि गज बोह घणौं।
लागा गोकल तणे जे लोहड़,
ताड़ दूखे भागिलो तणौं॥ १॥

त्रिजु जलां खूलां थिहरेतो,
मेलिया घाव पड़ंतां मार।
भजिया अंग तणौं भाणावत,
सालै पोहो तजिया त्यां सार॥ २॥

सगता हरा तणौं समरी गण,
बणिया तन व्है खंड त्रिहँड।
रूक न लागा तियां रावतां,
पीड़ा न मिटै तियां पंड॥ ३॥

कूंत वाण केवाण कटारी,
कैलपुरे खामिया कंठीर ।
राजा मेल्हे गया तिके रण,
साजा न हुऐ तियां सरीर ॥ ४ ॥

(रचयिता:- मोतीसर चतरजी)

भावार्थ:- हे गोकुलदास, राजा भीमसिंह के युद्ध-काल में तूँने सेना के अग्र भाग में रह कर हाथियों के अनेकों समूहों में प्रविष्ट हो कर उस युद्ध का पूर्ण उत्तरदायित्व अपनी भुजाओं पर ले लिया था । उस युद्ध में विरोधियों के शस्त्राघात से तेरे शरीर में घाव लगे थे किन्तु उन घावों की पीड़ा युद्ध भूमि को छोड़ कर चले जाने वाले भीरू सैनिकों के शरीर में विशेष वेदना करने लगी ॥ १ ॥

टिप्पणी:— मेवाड़ के वीर शिरोमणि महाराणा प्रतापसिंह के छोटे भाई शक्तिसिंह का पौत्र और भाण का छोटा पुत्र गोकुलदास था । वि० सं० १६७१ ई० सन् १५१४ के आस पास मेवाड़ के महाराणा अमरसिंह (प्रथम) और दिल्ली के बादशाह जहाँगीर के बीच में जब सन्धि हुई तब, महाराणा के पुत्र कर्णसिंह शाही दरबार में गये । इनके बाद अन्य सरदार भी शाही दरबार में प्रविष्ठ हुए । ई० सन १६२३ में जहाँगीर के तीसरे शाहजादा खुर्रम (बाद मे बादशाह शाहजहाँ) ने विद्रोह किया तब, दूसरे शाहजादा परवेज की अध्यक्षता में पटना के समीप हाजीपुर के पास टोन्स नदी (गंगा) के किनारे शाही सेना का खुर्रम से युद्ध हुआ । इस युद्ध में मेवाड़ के वीरों ने महाराणा कर्णसिंह के छोटे भाई भीमसिंह के सेनापतित्व में शाहज़ादा खुर्रम का पक्ष लिया । इस शाही सेना में आमेर (जयपुर) के मिर्ज़ा राजा जयसिंह और जोधपुर के राजा गजसिंह भी सम्मिलित थे जिन के साथ लड़ाई हुई । परिणाम यह हुआ कि राजा भीमसिंह शाहज़ादा खुर्रम के पक्ष मे युद्ध करता हुआ, शक्तावत मानसिंह आदि वीरों के साथ वीर-गति को प्राप्त हुआ । इन्हीं के साथ लड़ने मे गोकुलदास आदि वीर भी थे । इस युद्ध मे गोकुलदास भी घायल हुआ । उसी का वर्णन इस गीत में किया गया है । इनके वंशज सावर ठिकाने में हैं ।

हे भाण के पुत्र, जिस समय तूं शत्रुओं को तलवारों से नष्ट करने लगा उस समय तलवारों की पड़ती हुई धार से बच कर अन्य नरेश चले गये। तेरे शरीर पर शत्रुओं के शस्त्रों द्वारा घाव लगे थे उनकी पीड़ा भीरू सैनिकों के हृदय में खटकती है ॥ २ ॥

हे शक्तिसिंह के पौत्र, तेरा शरीर शस्त्रों के घावों द्वारा बहुत क्षत विक्षत होगया परन्तु इस युद्ध में जिन क्षत्रियों के घाव नहीं लगे और जो भाग गये थे, उन के हृदय से तेरे घावों की पीड़ा नहीं मिटी है ॥ ३ ॥

हे सिंह रूपी वीर सिशोदिया, तूंने शत्रुओं की तलवारों व भालों, कटारियों और बाणों के वार अपने शरीर पर सहे और घावों से रक्त रंजित हुआ। ऐसे घावों से बच कर वे राजा छोड़कर चले गये किन्तु तेरे घावों की पीड़ा के कारण उनका शरीर कभी भी स्वस्थ नहीं हुआ। अर्थात् अपनी भीरुता और अपयश का घाव उनके हृदय में बराबर पीड़ा देता रहा ॥ ४ ॥

२६ राठौड़ गोपालसिंह मेड़तिया, जावला १

गीत (छोटा साणोर)

अत अचड़ां करण सात्रवां मारण।
कटकां हटक आमुरां काल ॥
भागां तूझ तणौ भणकारो।
गोपाला न करे गोपाल ॥ १ ॥

सुरताणोत लियण ग्रद सबला।
सबलां सत्र उतारण सीस ॥
मुड़ियां तूझ तणौ मेड़तिया।
दुनियण नहँ कहाड़ै जगदीस ॥ २ ॥

अन मुड़तां जुड़तां आवाहे।
सिरदारां मोहरे समसेर ॥
मरणौ दीह गजग्राह मंडाणौ।
मुड़ियौ न कहाणौ गिर मेर ॥ ३ ॥

जयमल हरा जाणता जिसड़ौ।
सांच पचो पूछियो सही ॥
विढे मुवौ कागदे वंचाणौ।
नीसरियौ वांचियो नहीं ॥ ४ ॥

(रचयिताः- गोकुलदास शक्तावत)

भावार्थः- गोपालसिंह ! युद्धभूमि में शत्रुओं को मारने हेतु मुगल सेना का काल बन कर तूने अपनी मृत्यु अमर करदी। किन्तु तेरा शत्रुओं से विमुख होने सम्बन्धी भी रुपन का स्वर जगदीश्वर ने कभी भी नहीं सुनने दिया।

हे सुल्तानसिंह के पुत्र ! तूने वीरता की परम्परा को रखने हेतु प्रबल शत्रु योद्धाओं के मस्तक शरीर से उतार दिये। हे मेड़तिया ! उन शत्रुओं के सामने युद्ध भूमि से पलायन करने के क्षीण-स्वर ईश्वर ने किसी के द्वारा भी नही सुन पाये।

हे वीर योद्धा ! युद्ध भूमि से विमुख न होने वाले शूरोंका सामना करने के लिये अपने सैनिक सरदारों के आगे रह कर तूने ही तलवार चलाई। उस समय गजग्राह युद्ध की भांति तेरा युद्ध शत्रुओं से छिड़ा।

टिप्पणीः- १. सम्भव है इस गीत का नायक गोपालसिंह मेड़तिया गीत के रचयिता गोकुल दास शक्तावत का कोई मित्र अथवा सम्बन्धी रहा हो। जिसकी प्रशंसा में गोकुल दास ने यह गीत बनाया।

इस युद्ध में तूं पर्वत के समान, अचल रहा, और शत्रुओं से लोहा लेता रहा। किन्त युद्ध से तेरा पलायन किसी के द्वारा नहीं सुनाई दिया गया।

हे जयमल के पौत्र! जैसा मैं तुझे जानता था वैसा ही तूं सत्य दिखाई दिया। शस्त्राघात से तेरी मृत्यु-सूचना प्राप्त हुई। किन्तु युद्ध भूमि त्याग कर जाने का पत्र मुझे कभी भी प्राप्त नहीं हुआ।

४० रावत मानसिंह सलूम्बर १

गीत (वड़ा साणोर)

धरे थोक खत्रवाट खुरसाण चाढै धकै।
एक एकाध पत वडौ औनाड़॥
वांकड़ै लीध पतिसाह डाढ़ां विचा।
मान वाराह जेम धरा मेवाड़॥ १॥
असमरां धारि आधारि दाढां अगरि।
वढियौ गाढ फोजां विड़ाणी॥
हलल हेकल जिहि दियंते चुणड हर।
ऊथल पाथल हुई धरा आणी॥ २॥
भेट दाव तणौ धकै आवै भिड़ण।
चाल वांधै न को जुड़ण चालै॥
काल दाढां महा धरापुड़ काढते।
कियौ गिड़ जेम उग्राह कालै॥ ३॥
मान सुरताण हरणां मृग मेटवा।
छोह व्हे वे असुर भोम छांडी॥

जायती रसातल भुजां बलि जैत रै।
मेर चित्तौड़ गल आण मांडी ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- एक प्रमुख विशाल काय वीर मानसिंह ने क्षात्रकुल गौरव एवं स्व भूमि के लिये अश्वारोही हो कर बादशाह के सामने चढ़ाई की और बाराह रूप बन कर अपनी भूमि दाढ़ों में रक्खी (अपने ही अधिकार में रक्खी) ॥ १ ॥

शत्रु की विशाल सेना में साहस धारण कर स्वयं घाव लगाये और तलवार की धार स्वरूप जमीन दांतों पर उठा कर बचा ली। चुण्डा का पौत्र एक ही शूकर के सदृश टक्कर लगा कर उथल पुथल हुई जमीन को ले आया ॥ २ ॥

उस शत्रु के सामने दांव पेच से भिड़ने के लिये कोई सैन्य-समूह नहीं आ सकता, ऐसे (प्रबल) काल-स्वरूपी यवन की डाढ़ों (अधिकार) से पृथ्वी को निकालने के लिये बाराह (शूकर) के तुल्य काल-पुरुष बन कर रावत ने जमीन बचा ली ॥ ३ ॥

वीर चुण्डा ने जोश में आकर दैत्य हिरणकश्यप रूपी बादशाह से मेवाड़ की जमीन छीन कर उसे गौरव हीन कर दिया और पाताल में जाती हुई पृथ्वी को जैत्रसिंह के पुत्र ने अपनी भुजाओं से विजय कर चित्तौड़ दुर्ग के अधिकार में की ॥ ४ ॥

टिप्पणी:- १. रावत मानसिंह सलूम्बर ठिकाने का स्वामी था और विक्रम संवत् की १७ वीं शताब्दी के अन्त में महाराणा जगतसिंह (प्रथम) के समय कई युद्धों में इसने भाग लिया।

४१ झाला चंद्र सेण, बड़ी सादड़ी

गीत (बड़ा साणौर)

अईची मैं भीत चंद्र सैण राणा अकल ।
आज संसार सहि कीत आखैं ॥
अमर जैं सींध बेल मेल औरंग अगैं ।
राज पावैं न को धरा राखैं ॥ १ ॥

सोढ रा प्रवाड़ा भाग तो सारखा ।
पहलका अहलका प्रिथी पुणिया ॥
राणा रैं साह रैं थकैं थिर राखतें ।
बड़ा धर बाहरू बिरद बाणिया ॥ २ ॥

मुदे हूँता तिसाँ काम कीधाँ मुदे ।
बधै बाखाण दुनियाण बीयाँ ॥
धणी चित्तौड़ रा बोझ भुज धारियां ।
दलीपत भुजां तो बोझ दीयाँ ॥ ३ ॥

छात चीतौड़ साथर राखे छता ।
जिका तो बात संसार जाणैं ॥

टिप्पणी:—१ चंद्र सिंह, महाराणा का सामंत और बड़ी सादड़ी का स्वामी था । यह ठिकाना सोलह के उमरावों में प्रथम माना जाता है । मेवाड़ के महाराणा राजसिंह (प्रथम) का समकालीन था औरंगजेब ने जब मेवाड़ पर आक्रमण किया तो यह बराबर युद्ध करता रहा । इस संबंधी वीरता का कवियों ने वर्णन किया है-उसमें से यह एक है ।

खेसि औरंग पहल विखो मेटे खत्री ।
राखियौ देस दुइ बार राणौ ॥ ४ ॥

(रचयिता:- पता आशिया, मंदार)

भावार्थ:- हे वीर चंद्र सिंह ! तेरी बुद्धि की प्रशंसा आज संसार में हो रही है। राणा अमर सिंह व जय सिंह की प्रथ्वी पर औरंगजेब अपना प्रभाव तेरी सहायता के अभाव में नहीं रख सकता था।

सोढ़ा के समान हे पराक्रमी वीर ! तेरे जैसे भाग्यशाली के गौरव की प्रशंसा पृथ्वी पर भूत और वर्तमान सभी करते हैं। महाराणा की वार्ता को बादशाह के सन्मुख व्यवस्थित रूप से रखने के कारण तूं राज घराने का सहायक माना गया।

जिस प्रकार का तूं वीर था उसी प्रकार का वीरत्व तूंने दर्शाया। तेरी इस प्रकार की चतुराई का वर्णन यत्र-तत्र सर्वत्र होने लगा। तेरी भुजाओं के सहारे ही चित्तौड़ पति महाराणा ने चित्तौड़ का कार्य-भार दिया। यह जान कर दिल्लीश्वर ने भी तेरी सम्मति को मान्यता प्रदान की।

हे राजराणा ! तूंने उदयपुर के महाराणा का स्वामित्व स्थाई रखने में जो सहयोग दिया। वह सर्व विदित है। हे राजराणा ! औरंगजेब के आक्रमणों को अपनी चतुरता से शान्त कर दो वार मेवाड़ देश के संकट को टाला।

४२. शक्तावत रावत घासीराम, बावल का १

गीत (छोटा साणौर)

देवलियो वंस नयर अनै पुर डूँगर,
त्रिहूँ ऐ भूप अभावो ताम।
बांधै तेग घणा बरदायो,
राण वसायो घासीराम ॥१॥

सूरज मलां रावलां साले,
 सांले घणां केवियां घांण।
आंगम नरां दूसिरां नावी,
 पर घर घर आणी खग पाण ॥२॥

मंडियाँ मेर अडिग मेवाड़ो,
 जुड़े दुरंग त्रिहुँ कीधा जेर।
औं जुध वेर हणू जिम आखां,
 सुतन सुद्रसण पाखर सेर ॥३॥

थह पातल अजवा रामा थह,
 दहल पड़ै दिन माहि दह।
आगल थको राण घर आडो,
 थंहियो डागल् नणौ थह ॥४॥

(रचयिताः- पता आशिया)

भावार्थः- कुल उजागर, खड्ग धारी, महाराणा का वंशज घासीराम देवलिया, बांसवाड़ा और डूँगरपुर के तीनों नरेशो के दिल में निरंतर खटकता रहता है ॥ १ ॥

टिप्पणीः— १ इस गीत का नायक घासीराम महाराणा उदयसिंह के छोटे पुत्र शक्तिसिंह के पुत्र दलपतसिंह का वंशधर था और महाराणा राजसिंह प्रथम के समय विद्यमान था। यह राज्य के बड़े सरदारों में से था और शाही दरबार में भेजा गया था। इसने डूंगरपुर, बांसवाड़ा और देवलिया प्रतापगढ़ को आधीन करने की कार्यवाही में उदयपुर के महाराणा की ओर से भाग लिया।

इस गीत में उसी का वर्णन है।

महाराणा के अन्य वीरों ने शत्रु भूमि पर अधिकार करने की जिम्मेवरी खुद पर ली, किंतु वे भूमि अधिकार में न कर सके तब इस वीर घासीराम ने अपनी खड्ग-शक्ति से शत्रु-संहार कर उन की भूमि पर महाराणा का आधिपत्य स्थापित किया। जिस से यह देवलिया के सूर्य्यमल एवं डूँगरपुर के रावल के दिल में खटकता रहता है ॥ २ ॥

मेदपाट के इस वीर पुरुष ने पहाड़-स्वरूप युद्ध स्थल में अडिग रह कर तीनों गढ़ों को आधीन कर लिया। युद्ध-स्थल पर पाखर पहने हुए यह सुदर्शन के पुत्र, जैसे खड्ग लिये और वीर हनुमान के सदृश दिखाई देता है ॥ ३ ॥

रामसिंह, अजबसिंह और प्रतापसिंह के दिल में घासीराम के आतंक से प्रतिदिन जलन होती है। महाराणा के कार्य के लिये शत्रुओं के सम्मुख खड़ा हुआ यह वीर रावत अपने सिंह पिता के समान ही मालूम होता था।

४३. शक्तावत कानसिंह

गीत (वड़ा सावझड़ा)

मरण देख कोरो न कियौ करे वडा मतो।
अवलै वले मोसर अणी आवते ॥
रूक धम चक धमक घड़ विहंड रावते।
सावलै खेलियौ फाग सगताउते ॥१॥

तूटि गिड़ ऊथलां गजां मिरजा तुरै।
सार वरगल वगल फूटी उर सौं सरे ॥
भाइयां हके हिकां मोहरी ऊभरै।
पतंग अत खेलियौ वसंता कायल पुरे ॥२॥

आज फोजा गजां बीच लोकां बकी ।
हू बकै ऊबकां कूंत हाको हकी ॥
जसौ नै काल जगमाल पीथो जिकै ।
चौल होली हुवा रूक गह चकै ॥३॥

नरां रा वरां छील तन वज्र नीसरै ।
बाघ रा खाग कुलां वाट नहँ बीस रै ॥
किलंब दोय सहस अस खांत आंकल करे ।
गाहि हुय ताली वाढी रहिया गरे ॥४॥

(रचयिता:- अज्ञात)

हे शक्तावत ! तूने यौवनारंभ में जब तेरी मूछें बढ़ कर वक्राकार भौंहों की ओर उठ रही थी, ऐसे समय में केवल युद्ध में जाने का विचार ही नहीं किया, अपितु युद्ध में जा कर तलवार और भालों से होली के रास की भांति युद्ध क्रीड़ा की और उस में धूम धाम मचाकर शत्रुओं को मौत के घाट उतार दिया ।

हे सीसोदिया ! तेरे वीरों की तलवारें और भाले यवनों के कंधों में प्रवेश कर वक्षःस्थल के पार निकलने लगे । शस्त्राघात से हाथी व घोड़े धराशायी होने लगे । रणांगण में तेरे बंधुओं ने एक से एक आगे बढ़ कर वसंत ऋतु में खेले जाने वाले 'गैर' (लकड़ियों से खेला जाने वाला ग्रामीण नृत्य) में अबीर २ छिड़कने से जो ललाई फैलजाती है उसी प्रकार तूने और उन्होंने शत्रुओं को रक्त रंजित कर लाल कर दिया ।

टिप्पणी:-गीत में वर्णित कानसिंह, महाराणा प्रतापसिंह के भाई शक्तिसिंह के पुत्र भाणसिंह की चौथी पीढ़ी में था । १८ वीं शताब्दी में जब औरङ्गजेब से युद्ध हुआ तब उस युद्ध में यह शामिल था । यही इस गीत में है ।

हे शक्तावत वीर ! जसराज, काना, जगमाल और पीथा, तुम शत्रुओं के ऊपर तलवार चलाते हुए स्वयं भी रक्त रंजित होगये और भालों के प्रहार से शत्रुओं के शरीर से रक्त प्रवाहित होने लगा।

नर-देहों को वज्र के समान तलवार छीलती हुई पार हो जाती थी और सिंह के समान हे शक्तावत वीर ! तूं तलवार चलाने में और शौर्य प्रदर्शन करने की अपने कुल की रीति को नहीं भूला और दो हजार शत्रुओं के घोड़ों के दग्ध चिन्ह लगाकर और उनके वीरों को आहतकर घर पर लौट आया।

४४ शक्तावत विट्ठलदास

गीत (छोटा साणोर)

सकता हर साधिर निमो सूरा तन ।
प्रिथी सराहे तेण प्रमाण ॥
विट्ठलदास देखि धड़ विढ़तौ ।
विट्ठल माथौ करे वाखाण ॥ १ ॥

कलहण दोखि तणो केल पुर ।
आखै साह कोई अचड़ ॥
मेयण गो हलकारै माथौ ।
धार वाव रै कहै धड़ ॥ २ ॥

खंगारोत तूझ धिन खत्रवट ।
आखे जगि हुई अविध ॥
वसुधा थकौ सीस वाखाणौ ।
कमंधां सूं कलहै कमंध ॥ ३ ॥

(रचयिताः- अज्ञात)

भावार्थः—हे शक्ति सिंह के पौत्र ! तेरी धीरता एवं वीरता को नमस्कार है। तेरे इन गुणों की संसार प्रशंसा करता है। हे विट्ठल दास ! तेरा धड़ शत्रुओं पर प्रहार कर रहा है और मस्तक पृथ्वीपर पड़ा हुआ उसकी प्रशंसा करता दिखाई दे रहा है।

हे सिशोदिया ! तेरे रण कौशल को देखकर सभी तेरी प्रशंसा करते हैं। धरती पर पड़ा हुआ तेरा मस्तक वीरों को ललकारता है तथा धड़ शत्रु संहार कर रहा है।

हे खंगार सिंह के पुत्र तेरे क्षत्रियत्व का लोहा सभी लोग मानते हैं। पृथ्वी पर पड़ा हुआ तेरा मस्तक धड़ की प्रशंसा करता है और धड़ शत्रु से भिड़ रहा है।

४५ उगरसिंह राठोड़

गीत (छोटा साणौर)

जल़ चाढण अगर धरा जोधाणे ।
छल़ राणा कुल़वाट छल़ ॥
र. वदां तणा खांभिया रहिया ।
दहवारी थांभिया दल़ ॥ १ ॥
राखण रूप वड़ा राठोड़ा ।
चितौड़ा दाखण चटक ॥

टिप्पणी:— वि० सं० १७३६ ई० सन् १६१६ में महाराणा राजसिंह प्रथम के समय दिल्ली के बादशाह औरङ्गजेब ने चढ़ाई की और देबारी के पास युद्ध हुआ। जिस में अनेक राठोड़ वीर शाही सेना से लड़ते हुए काम आये। उनमें इस गीत का नायक अगरसिंह राठोड़ भी एक था।

रणमल थाटी वार रोकिया ।
किल माचा घाटी कटक ॥ २ ॥

उदा हरा वडौ अब आखां ।
पाया हद सु तूठा परम्म ॥
मही राखी जाड़ी मेवाड़ा ।
सबल पहाड़ां तणी सरम्म ॥ ३ ॥

सावल तणा ऊपर जे सारा ।
धूमै अवरंग साह घड़ ॥
काल मरण सिंघाल कीधौ ।
उदयापुर वाला अनड़ ॥ ४ ॥

(रचयिताः– अज्ञात)

भावार्थः— हे उग्रसिंह देवारी के निकट पहाड़ों की आड़ में मुगल सेना को रोक कर तुम ने महाराणा के राज्य की रक्षा की, जिससे अपने कुल–गौरव को बढ़ाया और जोधपुर राज्य की प्रतिष्ठा रखी ॥ १ ॥

हे रणमल के वंशज ! तूंने सिशोदिया के वचन सुनकर शीघ्रता पूर्वक देवारी की घाटी में मुगल सेना के समूह को रोक लिया और राठौड़ों के गौरव क बनाये रखा ॥ २ ॥

हे उदयसिंह के पौत्र ! वह दिन तेरे लिये बड़े पुण्य का था, जब तुम ने मेवाड़ के विकराल पहाड़ों और उस जमीन की लाज रखी थी ॥ ३ ॥

हे सांवलसिंह के पुत्र ! जब औरंजेब की समस्त सेना तुम पर टूट पड़ी थी, उस समय साक्षात यमराज और सिंह के समान तूं युद्ध कर उदयपुर के पहाड़ों में धराशायी हुआ ॥ ४ ॥

४६. भाटी माहसिंह, मोही

गीत (वड़ा साणौर)

समर धुवे त्रांवाट होय नाद सिंधू सवद,
खहण लागै गयण सुगत खाथै ।
सँग ओतोलियौ सवल रै वड़ खत्री,
माहवै मूगलां वड़ा माथै ॥१॥

राण छल करण भारथ एकण रहण,
थर करे यला सिर क्रीत थाटी ।
अरी आड़ा खंडां वहण जुध ओरियौ,
भिड़ज जाडा थंडां वीच भाटी ॥२॥

जुड़े अर तंडल राण दूजा जगड़,
ढाहण दलां वीजू जलां ढांण ।
अभंग राण तणौ नमख अजुआलियौ,
पमंग आतां लियो वीच पीठाण ॥३॥

वरे रंभ मन वंछत वसे सुर थान वच,
एला सर सुजस दध कड़ां अड़ियौ ।
भसण खग पाछट समर माहव पड़े,
चाए जेसल गरां नीर चढ़ियौ ॥४॥

(रचयिता:- अज्ञात)

टिप्पणी:— भाटी माह सिंह जैसलमेर के रावल मनोहर दास का पौत्र और सबलसिंह का पुत्र था । महाराणा राजसिंह (प्रथम) का विवाह जैसलमेर हुआ था । उसी के कारण यह मेवाड़ में आकर रहने लगा । राजनगर के पास मोही ठिकाने के ठिकानेदार इसके वंशज हैं । संभव है कि ये महाराणा जगतसिंह दूसरे के समय नादिर-शाह के चढ़ाई करने पर युद्ध करते हुए मारे गये हों ।

भावार्थः— युद्ध में जोशीले नक्कारों के साथ वीर रस की सिंधुराग की ध्वनि सुनाई देने लगी। युद्ध स्थल में वीरों के सिर आकाश की ओर स्पर्श करते हुए आतुरता से लगे और वीर क्षत्रीय माहवसिंह ने उस युद्ध-भूमि में मुगलों की सेना में अपने घोड़ों को प्रविष्ट किया।

इस देश को राणा के अधिकार में रखने के लिये उन की सहायता कर अचल रूप से भूमि रखने के लिये युद्ध कर माहवसिंह ने सुयश प्राप्त किया। अश्वारोही वीर भाटी ने सैन्य-समूह को नष्ट कर सेना में प्रवेश किया।

दूसरे जगतसिंह के समान वीर क्षत्रीय ने शत्रु-सेना से भिड़कर अपनी तलवार द्वारा शत्रुओं के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। वीर भाटी ने महाराणा का नमक उज्जवल (सार्थक) करने के लिये सेना में प्रविष्ट होकर घमासान युद्ध किया।

अप्सराओं ने स्वेच्छानुसार वीरों का वरण किया, वीरों ने अपना यश समुद्र पार पहुँचा दिया और वीर माहवसिंह ने शत्रु-संहार कर जैसलमेर का गौरव बढ़ा, वीर गति प्राप्त की।

४७ रावत कान्धल चुण्डावत (द्वितीय), सलूम्बर १

गीत (बड़ा साणोर)

अदलियोबदलोनिकु रावग्योउधारी।
राव इम मार जे जांणियों राण॥
केहरी झड़ी कांधल ऊपर कटारी।
चूक मझ उवारी अचड़ चहुवांण॥ १॥

प्रवाड़ो खाट दरबार न आयो सुपह।
कथन आय नरां दूसरा कहिया॥
पाचलणी झड़ी कमर सूं पाकड़े।
राव रावत खिनै खेत रहिया॥ २॥

राम रो साझनां यो कुशल रेण रो ।
दुवांने एक साथै दियो दाग ॥
उहीज रावत तणो घरे आलाप्रियो ।
रावरे घरे गायो जिको राग ॥ ३ ॥

वैर रो शोध मेले न ग्यो वांसला ।
वलू हर पिसण लेगो भरै वाथ ॥
भीच सुत मीत भाई अनै भतीजा ।
हमै जस सुणो मूछां धरै हाथ ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:—रावत ने उधार न रख राव को मार कर अच्छा बदला लिया, जिस की जानकारी महाराणा को भी हो गई । चौहान केसरीसिंह ने चुण्डावत कांधल के वक्षःस्थल पर कटारी से वार किया उसके कारण कांधल ने भी चौहान केसरीसिंह पर वार कर यह कीर्ति अमर कर दी ॥ १ ॥

युद्ध विजय कर राव केसरी सिंह, महाराणा के पास जीवित नहीं आ सका, जिस से यह वृत्तान्त दूसरे मनुष्यों ने आकर उन्हें सुनाया। रावत ने कमर से कटारी निकाल वार किया, जिससे राव और रावत दोनों युद्ध-क्षेत्र में ही रह गये ॥ २ ॥

कांधल ने केसरीसिंह को ईश्वर की ज्योति में मिला दिया परन्तु वह भी घर पर रहने के लिये कुशलता से नहीं आ सका और दोनों का एक

टिप्पणी:- १. यह रावत रतनसिंह दूसरे का पुत्र था और महाराणा जयसिंह का समकालीन था। वि० सं० १७४८ के पीछे थूर (उदयपुर से ६ मील दूर) के तालाब पर चहुआन राव केसरीसिंह को मार कर स्वयं भी मारा गया। इस गीत में इसी घटना का वर्णन है।

साथ ही दाह-संस्कार किया गया। जिस प्रकार रावत के घर रोना धोना हुआ उसी प्रकार राव के घर भी रोने की आवाज सुनाई दी॥ ३॥

आपसी शत्रुता को वे पीछे छोड़ कर नहीं गये। अपितु केसरीसिंह और कांधल दोनों अपनी शत्रुता को बाथ (अपने साथ) में भर कर ले गये, जिस से दोनों पक्षों के शूरवीर, पुत्रादि, मित्र और भाई-भतीजे आदि अपने अपने पक्ष की ख्याति सुन कर मूछों पर ताव देते रहे।

४८. रावत माधोसिंह चुण्डावत, आमेट १

गीत

माधै हेलवी दखणी दल़ माहिं,
मुगलां ठलां मझारी।
अरियाँ उअरि विचै धसि आधी,
कूंपलै चरे कटारी॥१॥

भूखी डाकणी जेम भभकंती,
रहे न रोकी रूकां।
ढुक गिलै कालिज धागली,
जूथ न मेल्हे वृकां॥२॥

पातल हरा निमो पुरुषातन,
कल़ दल़ सबल़ कल़ासै।
उरड़ै फौज धजा विच आवी,
गुण की गजां गरासै॥३॥

माडिया मार अनड़ मानावत,
कलिहण वार कराली।
मँगल कवां चगचगा मथ कर,
धांपावी आराली ॥ ४ ॥

(रचयिता:- नाहरसिंह आशिया)

भावार्थ:- माधवसिंह ने दक्षिणी मुगल सेना के समूह पर वार किया और कटारी को शत्रुओं के हृदय में प्रवेश कर उनके कलेजे का आहार कर वाया ॥ १ ॥

क्षुधा-युक्त डाकिणी जैसी आतुर हो, रोकने पर भी न रुक शक्ति जैसी धार वाली कटारी ने दुश्मनों के वक्षःस्थल में घुस कर कलेजे का आहार करना शुरू किया और शत्रुओं के मांसव दिल को खाती हुई पार हो गई ॥ २ ॥

युद्ध-काल में सेन के बीच प्रविष्ट हो बहादुरी दिखाते हुए झण्डे तक पहुँच कर तूने भाले और कटारी के सम्मुख शत्रुओं के हाथियों का निवाला करवा दिया। हे प्रतापसिंह के पुत्र ! तेरे पुरुषार्थ को नमस्कार है ॥ ३ ॥

हे मानसिंह के वीर पुत्र ! युद्धारम्भ में तूने वार कर मद चूते, और गुञ्जार करते हुए गज कुम्भ स्थलों को कटारी का निवाला बना (उसकी) क्षुधा शान्त की ॥ ४ ॥

टिप्पणी:- रावत मानसिंह का माधवसिंह पुत्र था। आमेट के रावत चुण्डावतों की जगावत शाखा के वंशज है। औरङ्गजेब ने मेवाड़ पर चढ़ाई की तब इसने बड़ा शौर्य दिखाया।

इस गीत में इसी सम्बन्ध का उल्लेख है।

४६. रावत केसरीसिंह चूण्डावत [प्रथम], सलूम्बर १

गीत (बड़ा साणोर)

कहर मेल् लसकर डमर जेतहर कलोधर,
अवर नहँ धरपतां धरै आंटा।
केहरी ग्रहै करमाल् कांधालरै,
कीध ऊथल् पथल् बन्दे कांठा ॥ १ ॥

वांस पुर भांजतां रोच पड़ चहूँ वल्,
सकल् खल् भाग तज मेर माथै।
दुरै डूँगर परां थर कियां देव गरै,
बाँह भर भलां तूं खड्ग बांधै ॥ २ ॥

धमकतां पाखरां वसण लीधां वणा,
पोहव गज धजां तूं खेत पाड़ै।
सझर मन मेल् सकतेस पाधर मुड़ै,
जूंझ कर खगां चहुवाण झाड़ै ॥ ३ ॥

सुरिन्द सीसोद दिल समंद रावत सकज,
गढ़ पती गांजिया जयह बड़ गात।
प्रगट दइवाण दीवाण भुज पूजिया,
छलै खत्र वट चूण्डा तणी छात ॥ ४ ॥

(रचयिता:- मानसिंह आशिया)

टिप्पणी:— १ यह रावत कांधल दूसरे का पुत्र था। १८ वीं शताब्दी के मध्य युग में मेवाड़ के महाराणा ने डूंगर पुर और बांसवाड़ा पर चढ़ाई की तब यह सेनापति बनकर गया था। उसी का गीत में उल्लेख है।

भावार्थः– हे जैतसिंह के कुलीन पौत्र ! तूं आडम्बर के साथ सैना का संगठन कर हाथ में तलवार धारण करता है। तेरे साहस को देख कर अन्य नरेश तुझ से शत्रुता नहीं करते। हे कांधल पुत्र केसरसिंह ! तूने हाथ में तलवार लेकर मेवाड़ के पड़ोसी नरेशों को उथल पुथल (डाँवाडोल) कर दिया ॥ १ ॥

बांसवाड़ा को परास्त करने पर चारों ओर के नरेशों पर आतंक छा गया और सब शत्रुओं ने गौरव हीन हो तेरी दासता स्वीकार करली हे प्रबल–श्रेष्ठ बाहु वाले वीर ! तूं तलवार कसता है सो अच्छा ही है, तेरे तलवार कसते ही डूँगरपुर और देवलिया तक कंपायमान हो जाते हैं ॥ २ ॥

पाखरों से सज्जित भड़भड़ा हट करता हुआ अश्व–सैन्य–समूह तेरे साथ है, तूँ शत्रु–सैन्य के हाथियों पर जो ध्वजाएं लहरा रही हैं उन्हें झुकाता है। तेरे साथी शक्तावत चाहुआनों से सांठ–गांठ कर सीधे मुड़ गये और तूने अपने बाहुबल से युद्ध कर तलवारों द्वारा चाहुआनों का नाश किया ॥ ३ ॥

हे दरियादिल वाले इन्द्र तुल्य सिसोदिया ! तीनों बड़े नामधारी राजाओं को पराजित करने का अच्छा कार्य किया। क्षात्र कुल गौरव से छलते हुए महाराणा और देश के प्रधान ने हे चूण्डा–कुल मणि ! तेरे बाहुओं की पूजा की।

५०. रावत संग्रामसिंह चुण्डावत, देवगढ़ १

गीत (छोटा साणोर)

थापै वखतौर खगां बल थांणा।
थागरां तणा धूजिया सेर ॥
खान तणा हिया बिच खटकै।
सांगा ! तूझ तणी समसेर ॥ १ ॥

पावैं सुख प्रजा, राण सुख पावैं।
दोख्यां घरे गलंतो डाव ॥
द्वारां तणां करैं नत देखो।
चुण्डा करैं अचूण्डा चाव ॥२॥

बांदे वाट घाट पण बांदे।
जालम किया भीसणां जेर ॥
आपो डंड न हुओ आगलियां।
मांटी पणैं न छूटा मेर ॥३॥

मारे लिया सेद फल माहैं।
आवे कटकां मेर अणी ॥
सेलां पाण धूपटी सांगा।
तैं संभर सुरताण तणी ॥४॥

गढ़ रखपाल दूसरा गोकल।
पालण सत्र दिली दल पूर ॥
रावत तणैं भरोसे राणा।
सैलां रमै हिंदवां सूर ॥५॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ :— खड्ग बल से बदनौर के ऊपर अपना थाना नियुक्त किया, जिससे वहाँ के पहाड़ी-मेर लोग कम्पायमान हो गये, हे सांगा! तेरी तलवार मुगलों के हृदय में हमेशा खटकती रहती है ॥ १ ॥

टिप्पणी:- यह देवगढ़ के रावत द्वारिकादास का पुत्र और गोकुलदास का पौत्र था। महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के समय में मेरवाड़ा के मेरों को दबाने में इसने वीरता दिखाई थी जिसका उक्त गीत में वर्णन है।

बहादुरी एवं दाव-पेंच से शत्रुओं का गर्व नाश होजाता है। राणा और उनकी प्रजा सुख प्राप्त करती है। चुण्डा द्वारिकादास का पुत्र शत्रुओं के साथ नित्य अजीब तरह का युद्ध करने को इच्छुक रहता है ॥ २ ॥

जुल्म करने वाले शत्रुओं को रास्ते और घाटियों की मोर्चा बन्दी कर (उन्हें) जकड़ देता है। प्रान्तीय स्थानों के मेर शत्रु न तो दंड देकर मुक्त हो सकते हैं; न बल बताकर पीछा छुड़ा सकते हैं—अर्थात् उन्हें पराजय माननी पड़ती है।

हे सांगा! मेरों की जितनी सेना तेरे सामने आती थी उसे साधारण कष्ट से मार ली। तूने भालों की ताकत से बादशाह की सैंभर नदी पर भी अपना अधिकार जमा लिया।

हे दूसरे गोकुल सिंह! शत्रुओं को पराजित कर स्वामी के गढ़-देश की तूं रक्षा करने वाला है, तूं दिल्ली पति की सेना को रोकने वाला है। इसलिये तेरे भरोसे हिंदु-सूर्य महाराणा निश्चिन्त हो पहाड़ों पर सहज-शिकार करता है।

५१. ठाकुर जयसिंह राठोड़ (मेड़तिया), बदनोर १

गीत (बड़ा साणोर)

खड़े ज्यार महाराज, मगरां सरै खेड़िया।
लागियां चार चक अपत लागां ॥
बोल जैसाह हूंता जिके बोलियां।
थिर रह्या बोल जे साह थारा ॥ १ ॥

धणी माहरो नह कूरम, राणो धणी।
अवरता वयण नह तूझ आलूं ॥
आपरा वयण हूं थाणो नहँ आदरूं।
आदरूं वयण जो राण बालूं ॥ २ ॥

सरोतर अंब नयर मिढतो सदा ही।
घाय घड़ मोड़िया आद आणों॥
एक छत्र पत तणों हुकम नहँ थापियों।
थापियों राण रै हुकम थाणों॥ ३॥

आंट रा कोट मन-मोट मेरू अचल।
सूर तन ताप दे सीत सवायों॥
कहै जैसिंघ-जैसिंघ! राणा कटक।
एक रजपूत मों नजर आयों॥ ४॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:–जयपुर के महाराजा मेवाड़ की सीमा का पहाड़ी प्रदेश मेरवाड़ा के ऊपर अपना अधिकार स्थापित किया। चारों ओर के नरेश इस प्रकार से हठ पूर्वक अधिकार करने के कारण जयपुर नरेश से रुष्ट थे। उस समय हे राठौड़ जयसिंह! तूने अपने वचन का बड़ी दृढ़ता के साथ निर्वाह किया।

हे जयसिंह! तूने जयपुर नरेश से कहा कि मेरे स्वामी कछवाहा जयसिंह नहीं किन्तु मेरे स्वामी महाराणा हैं। इन वचनों को तूने असत्य नहीं होने दिया। साथ ही जयपुर नरेश की यह आज्ञा कि अमुक स्थान

टिप्पणी:- यह बदनौर के ठाकुर जसवंतसिंह का पुत्र था और राणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के समय रणबाजखां मेवाती से बांदरवाड़ा में युद्ध हुआ, उस में इस जैतसिंह ने वीरता पूर्वक युद्ध कर रणबाजखां को मार कर उसकी ढाल छीनली (जो विजय चिन्ह स्वरूप बदनौर में मौजूद है)।

जयपुर महाराजा सवाई जयसिंह ने मेरवाड़ा में अपने थाने नियुक्त करने चाहे थे जिसका इसने प्रतिरोध किया। उक्त गीत में यही बतलाया गया है।

पर थाणा (सैनिक व्यवस्था) स्थापित करो, न मान कर महाराणा की आज्ञा के अनुसार ही तूने थाणा स्थापित किया।

जयसिंह ने जयपुर नरेश से कहा-कि "आप आमेर और उदयपुर को समान स्तर का नहीं समझ सकते क्यों कि उदयपुर शत्रुओं को रण-भूमि में परास्त करने वाला है।"

इस प्रकार जयसिंह ने कछवाहा जयपुर नरेश की आज्ञा की अवहेलना की और मेवाड़ नरेश की ही आज्ञा को शिरोधार्य किया।

हे राठौड़ जयसिंह ! तूने वीरता का परकोटा बन कर और पर्वत के समान अटल रह कर अपनी वीरता का प्रभाव चारों ओर फैला दिया। जिस से जयपुर नरेश कहने लगा कि "मेरी दृष्टि में महाराणा की सेना में जयसिंह राठौड़ एक ही क्षत्रिय है॥"

५२. ठाकुर जयसिंह राठौड़ (मेड़तिया), बदनोर

गीत [सु पङ्क]

गाजै त्रंबाळां निहाव घाव पिनाकां भगांके गांण।
आखियां उनाग खाग खत्री ध्रंम धोड़॥
दृढ जमो हुओ हेक आखिया दकखणी दळां।
राणा दळां आडो कोट सारंभै राठोड़॥ १॥

फरक्कै झंड नेजां आखिया लड़ंग फौजां।
वूरतां त्रंबाळां रणं तालां दाव-घाव॥
लोहड़ा देयंतो झाट ऊससे गैणाग लागां,
सेवा भड़ां हूंत वागो जैमाल सुजाव॥ २॥

बंदूकां गोलियां सोक झोक कूंता सोक बाणा।
साकुरां तड़च्छै लोहां तूटे खलां संघ॥

डोह घड़ां चौवड़ां अभंग भीच चाड़ राणा।
केवा हूँत जुटो वेवाणां कमंध ॥ ३ ॥

मेदपाटां तणै नीर राखियों दूसरा मथा।
साम ध्रमा तणी वेल रहाड़ी सकत्त ॥
सोहिया विरद मोटा जेसाह जीव संभ।
पाई फतै जीत जंग रहाई ध्रमत्त ॥ ४ ॥

(रचयिता:- दानाजी. चोगसा)

हे राठौड़ जयसिंह ! नक्कारों के निनाद से और धनुष बाण के शब्दों से आकाश गूंज उठा। उस समय तूं क्षत्रिय धर्म के पालनार्थ नग्न तलवार ले कर युद्ध स्थल में उपस्थित हुआ। दक्षिण के आक्रमण कारी सेनाओं के सामने तूं काल के समान रहा और महाराणा की सेना की रक्षा के लिये तूं लोह-दीवार के समान खड़ा हो गया।

हे जयमल के पुत्र ! लहराते हुए ध्वज और नक्कारे बजाती हुई सैना के साथ तूने रण भूमि में प्रवेश किया। उस समय तूं शत्रुओं के सैनिकों के शरीर में शस्त्रों द्वारा घाव लगाने लगा और वीर योद्धा की भांति गर्व से आकाश की ओर मस्तक ऊँचा करता हुआ युद्ध करने लगा।

हे राठौड़ ! तूं बन्दूकों की गोलियों और तीक्ष्ण तीरों द्वारा शत्रुओं के अश्वारोहियों के तिरछे घाव लगा कर उनको नष्ट करने लगा। जिससे अश्वारोही और घोड़े दोनों ही धराशायी होने लग गये और राणा के हे अजेय वीर ! योद्धा राठौड़ ! तूं शत्रुओं की चतुरङ्गिनी सेना को शस्त्राघात द्वारा विचलित करने लगा।

माधवसिंह के सामने हे वीर ! स्वामी धर्म पालन करने हेतु तुझे शक्ति ने सहायता दी; जिससे तूने मेवाड़ के गौरव को बढ़ाया। हे

जयसिंह ! युद्ध में विजय प्राप्त कर अपने वंश को चिरायु करता हुआ लौट आया। जिससे तेरे शौर्य का यश चारों ओर फैल गया।

५३. रावत माहसिंह सारंगदेवोत, कानोड़ १

गीत [वड़ा साणोर]

धूवे रोद सीसोद धर वेद मच धमाधम,
पीड़ न खमे कर जतन पाटैं।
माहवा सुवर कज अछर वर आंटे मले,
मल रुद्र अग्यारह कमल माटैं ॥ १ ॥

चौल चख किया असमर धूवै चाचरैं,
सुनर भमके पड़ैं कुनर सांसे।
सदन कज फरैं ग्रहिया फलां सुरत्रियां,
वदन कज वड़ा सिंध फरैं वासैं ॥ २ ॥

उरड़ भड़ सुभट थट मांन सुत ऊपरां,
खगां झट धावरट रमे खेला।
ऊमें खट सुवर वट निकट देखे अछर,
अगुट वट जोवे झट धार भेला ॥ ३ ॥

टिप्पणी:— १ माहसिंह, आठरड़ा के रावत मानसिंह का पुत्र था। वि० सं० १७६८ में महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय के समय मेवाती रणबाज खां ने पुर और मांडल के परगने पर अधिकार करने के लिये चढ़ाई की। उस समय बांदरवाड़ा (खारी नदी) के पास होने वाले युद्ध में माहसिंह महाराणा के पक्ष में लड़ा और काम आया, जिसका इस गीत में वर्णन है।

भावार्थः-युद्ध के नक्कारे की आवाज और सिंधु राग सुन कर वीर सारंगदेव घोड़े पर चढ़ उस विषम युद्धः स्थली में आगया और दक्षिण की सेना के आने पर पराजित नहीं होने वाला वह वीर चित्तौड़ की भूमि के लिये दीवार (आड़ स्वरूप बन गया।

धनुष की टंकार और तोपों की गड़ गड़ाहट के समय महाराणा के राज्य के निमित्त, वीर भाण के समान घोड़े सहित, कड़कती हुई बिजली के समान शत्रुओं पर क्रुद्ध होकर वीर सारंग देव ने उस भयंकर युद्ध में प्रवेश किया।

महावसिंह के अपराजित पुत्र ने घोड़े सहित हाथियों के समूह में प्रवेश किया और विपक्षियों को तलवार के घाट उतारते हुए शत्रुओं को धराशाई कर स्वयं जीवित रहा। उस समय सिरोदिया ने अपने देश की लज्जा (रक्षा) सारंग देव के हाथों में सौंप दी।

हिन्दुओं के स्वामी राणा ने अपनी ओर से उसे धन्यवाद दिया। सारंग देव अपने कुल का गौरव बढ़ाता हुआ और शत्रुओं को जीतता हुआ तथा विजय वाद्य बजाता हुआ वापस घर लौट आया, जिससे उसकी कीर्ति समुद्र पर्यन्त फैल गई।

५५. रावत सारंगदेव (दूसरा) कानोड़

गीत—(बड़ा साणोर)

तुरां पाखरां सझे सलहां भड़ां तत्तखरां,
दुजड़ जुध अर हरां वहण दावे।
थाट थंभ अभंग सारंग नाहरां थाहरां,
अला तो सारखां हाथ आवे ॥ १ ॥
अभनमां भांण धमसाण जीपण अभंग,
सुजस जग रखण दध कड़ां सारे।

कलम दल वहण खग भीड़ छकड़ा कड़ां,
धरा तो सारखां भड़ां धारे ॥ २ ॥
तई सुपहां घड़ा मोड़ माहव तणा,
न्हसै अर किता रहिया होण लोग ।
जड लगां पाण माना हाग तो जसा,
भरै कमलां जियां ऊजला भोग ॥ ३ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- हे सिंह रूपी योद्धा सारंगदेव, तूं युद्ध-काल में शत्रुओं पर खड्ग चलाने के लिये पाखर (लोहे का चार जामा) सहित वख्तर से (वीरों की लोह निर्मित वेश भूषा) शूर वीरों को सुसज्जित रखने वाला है। प्रति-पक्षियों के समूह में स्तम्भ के समान पूर्ण रूप से अडिग रहने वाले हे योद्धा, यह पृथ्वी तेरे समान वीरों के ही हस्तगत होती है।

हे भाण के समान ही वीर, तूं ने शत्रुओं से युद्ध में विजयी होकर, समुद्र के उस पार अपने यश को फैला दिया है। तूं वख्तर बांध कर मुगल सेना पर तलवार चलाने वाला है। यह पृथ्वी तेरे जैसे वीरों का ही आधिपत्य स्वीकार करती है।

हे माहवसिंह के पुत्र, तेरे सम्मुख अनेकों नरेश युद्ध भूमि से पलायण कर गये और कितने ही युद्ध-स्थल से भाग कर तेरी जनता के साथ दर्शकों में मिल गये। हे मानसिंह के पौत्र, तलवारों की शक्ति से ही तेरे जैसे योद्धा देदीप्यमान होकर इस धरती का उपभोग करते हैं।

टिप्पणी:- १ वि० सं० की १८ वीं शताब्दि के अन्त में महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के सामन्त कानोड़ के रावत सारंगदेव (द्वितीय) ने युद्ध आदि किये और तत्कालीन दिल्ली-दरबार में जाकर अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया था। इस गीत में अज्ञात कवि ने सारंगदेव के गुणों पर प्रकाश डाला है।

५६. रावत सारंगदेव (दूसरा), कानोड़

गीत (सु पंख)

सदा चढाड़े सीसोदा नीर विरदां दीहाड़े सांझे।
दशावे सहंसा धणी रहाड़े दुरंग॥
गजां ढाल पाड़ै जुड़ै गवाड़ै सवाड़ा गीत।
रूकडां विमाड़े रोदां अखाड़े सारंग॥ १॥

गड़ंवके जंगालां नालां कुण्डालां भणंके गोण।
तोड़वे तेजाला रणं ताला मे नवीठ॥
दलां पेलां वालां सजै दंतालां ढाहते दिये।
राव तो वंगालां मांथे करम्मांला रीठ॥ २॥

कहाड़ै वीरद वंका भीड़ियां छकड़ा कड़ां।
वधै रोले भड़ां आगा वाथे वंशवान॥
विछोड़े गयंदां घड़ा दूजड़ां ओझड़ां वाह।
मुगल्ला मूंडड़ां दड़ां मेले दूजो मांनं॥ ३॥

ताइयां विभाड़ खगां ओनाड़ माहव तणा।
मातंगां वरीस राजे पहां सारां मोड़॥
अंस धारी हिदवांण रांण भांण एम आखे।
चितौड़ा तो हाली भुजां नचितो चितोड़॥ ४॥

(रचयिताः- अज्ञात)

भावार्थः- हे सिशोदिया। तूं प्रतिदिन वहादुरी के साथ अपने स्वामी के दुर्ग की रक्षा करता है और अपने कुल-गौरव को वढ़ाता है। हे सारङ्गदेव! अखाड़े के समान युद्धःस्थल में गजा रूढ़ ढालों

सहित मुगल वीरों को, तूं अपनी तलवार से धराशायी कर सिन्धु राग के गीत गवाता है ॥ १ ॥

जिस समय युद्धःस्थल में नक्कारों और बन्दूकों की भयंकर गर्जना से आकाश गूंज उठता है, उस समय क्रुद्ध होकर तूं, शत्रुओं के टुकड़े टुकड़े कर देता है। हे रावत, तूं विपक्षियों की सेना के सजे हुए हाथियों और उन पर-आरूढ़ बङ्गालियों के सिर पर तलवार चला कर उन्हें धराशायी कर देता है ॥ २ ॥

शिर-त्राण कसे हुए हे वीर ! तूं प्रतिष्ठा (विरूद) प्राप्त करने के लिये शत्रु वीरों से युद्ध कर उनको छिन्न भिन्न कर अपने कुल-गौरव की वृद्धि करता है। मानसिंह के समान हे दूसरे वीर ! तूं, मुगलों की सेना के हाथियों सहित यौद्धाओं पर तलवार-वर्षा कर दड़ियों के समान उनके मस्तकों को जमीन पर गिरा देता है ॥ ३ ॥

हे माहवसिंह के पुत्र ! तूं, ऐसे वीरों का विनाश कर हाथियों को दान में देता है और युद्ध-वीरता तथा दान वीरता में दूसरें राजाओं का सिर ताज है। हे शक्ति शाली यौद्धा ! इसी कारण चित्तौड़ के स्वामी हिन्दुआ सूर्य महाराणा ने अपने राज्य का समस्त उत्तरदायित्व तेरे कन्धों पर डाल रखा है ॥ ४ ॥

५७. रावत-सारंग देव (द्वितीय), कानौड़

गीत (बड़ा सावझड़ा)

बिरद धारियां भुजां भड़ लियां ऊभारां ।
हचै खल ढाल पांखर जड़ै हेमरा ॥
धणी छल स्याम भ्रम रखण चत्र गढ़ धरा ।
धुपटी नाहरे खगां ईडर धरा ॥ १ ॥

मरद घमसाण पुह लिये आलोमलां ।
वढण कज वाढ भेरी जीये वीजलां ॥
डोह घड़ चोवड़ा फतह जंग खलां डलां ।
खत्री गुर रौ छएल करै नत धूंकलां ॥ २ ॥

कलह अवियाट धन सूर माहव काल ।
वाजता त्र्यंबाटां सत्रा रां फाटै वकां ॥
धूण जे दुरंग फौजां लड़ंग हिक धकां ।
असुरची धरा मझ पड़ै नत ऊदकां ॥ ३ ॥

वहादर कुल छलां रखण सारंग विया ।
कैलपुर ऊधरा करां जग सिर किया ॥
लोहड़ां साहरा मुलक लूटे लिया ।
पटा वहतां गजां राण भुज पूजिया ॥ ४ ॥

(रचयिताः-अज्ञात)

भावार्थः- शत्रुओं की सेना ढाल-तलवारों सहित घोड़ों पर पाखरें सजाकर पड़ी थी, वहाँ अपनी भुजाओं की कीर्ति लिये हुए उमरावों सहित वीर सारंगदेव चढ़ चला। स्वामी भक्त नाहरसिंह ने चित्तौड़ के भू भाग को रखने के लिये ईडर राज्य पर आक्रमण किया।

उल्टी रीति से युद्ध करता हुआ वीर सारंग देव शत्रुओं को मारने योग्य घाव देता हुआ तलवार चलाने लगा। शत्रु-सेना को चार-चार वार विचलित कर युद्ध स्थल में विजय प्राप्त करने के लिये शत्रुओं के टुकड़ेर करने लगा। इस प्रकार क्षत्रिय-कुल के गौरव की रक्षा करने वाला गुरु (मुखिया) अपनी मर्यादा की रक्षा के लिये नित्य शत्रुओं से युद्ध आरंभ करता रहता है।

हे महासिंह के पुत्र! तेरी युद्ध की तैयारी के लिये बजाये हुए नक्कारे की घोषणा सुन कर शत्रु बेहोश हो जाते हैं। ऐसे हे वीर पुरुष! तू धन्य है! शत्रुओं के दुर्ग को सेना की एक ही टक्कर से तू विचलित कर देता है, जिससे शत्रु शिविरों में सदैव अशान्ति बनी रहती है।

हे (द्वितीय) सारंगदेव वीर! अपने कुल की रक्षा के लिये तुमने दान वीरता और युद्ध वीरता प्रदर्शित कर संसार में अपना यश फैलाया है और बादशाह के प्रदेशों को हाथियों द्वारा लूट लिया; जिससे महाराणा ने तेरी भुजाओं की पूजा की।

५८. रावत पृथ्वीसिंह सारंगदेवोत, कानोड़ १

गीत-(बड़ा साणोर)

खरा हेमरा भड़ां पीथल चढ़े खेड़िया।
दूरत गत वेरीया फरे दोले॥
रूकड़ां पाण उफडां खियां रोलिया।
घोलिया धकाया दीह घोले॥ १॥

समर रा भमर सारंग तणा सींध ली।
कहर गत बजाड़े गजर केवाण॥
होलियां जेम फर दो लिया होभिया।
अरि हरां ध्रुबिया भला आथाण॥ २॥

महा उमराव राणा तणे मेहरा।
वेहरा डाव वप चड़वानी॥
शाखरा भड़ां मिड़ज्जां चढ़े शाश्वता।
मरद मेवाशियां हार मानी॥ ३॥

धके शिशोद मेवास चढ़िया धटा।
गोलियां गाज नड राग गवता॥
हामला धगं छल कीया माहव हचे।
राण रे मामला जीत रखता॥ ४॥

(रचयिता:—दल्ला मोतीसर)

भावार्थः— हे वीर पृथ्वीसिंह, तूं ने अपने योद्धाओं के साथ अश्व पर चढ़कर प्रयाण किया और चारों ओर घेरा डालकर भयंकर गति से मेर जाति को घेर लिया। तलवार की शक्ति से, धोलिया गोत्र के उन मेर उद्दण्डों का सर्वनाश करने हेतु दिन दहाड़े उन्हें ललकारने लगा॥ १॥

हे सारंग देव के पुत्र, युद्ध-भूमि में तीव्र-गति से खड्ग चलाकर मानो पुष्प-रूपी युद्ध का तूं भ्रमर बन युद्ध के आनन्द-रूपी रस का पान करने लगा। शत्रुओं को चारों ओर से घेर कर 'फाग' (फाल्गुन का नृत्य विशेष "गेर") रूपी आक्रमण कर तूंने भली प्रकार उनके स्थानों को नष्ट कर दिया॥ २॥

हे उच्च श्रेणी के उमराव, महाराणा के समान ही सम्मान पाने वाले, तूने युद्ध में विलक्षण प्रहार कर अपने शरीर की प्रचण्ड शक्ति सिद्ध कर दी और भिन्न-भिन्न जाति के अश्वारोही वीरों को सुसज्जित कर शत्रुओं पर आक्रमण किया, जिससे शत्रु तेरे सामने पराजित हो गये॥ ३॥

टिप्पणी:— १. महाराणा संग्रामसिंह (द्वितीय) के समय मेरवाड़े का उपद्रव बढ़ गया था। तब कानोड़ के रावत पृथ्वीसिंह के नायकत्व में 'मेरों' को दबाने के लिये सेना भेजी गई थी। इस युद्ध में पृथ्वसिंह ने अपना शौर्य प्रदर्शित किया; उसी का वर्णन इस गीत में है।

हे सिशोदिया, उन मेर जाति के उद्दण्ड आक्रमण-कर्ताओं पर तूने ललकार कर गोलियों की वर्षा करदी। हे माहवसिंह के वंशज, तूने सिन्धु राग गाते हुए, पृथ्वी की रक्षा के हेतु युद्ध कर महाराणा को विजय प्रदान की ॥ ४ ॥

५६. रावत पृथ्वीसिंह सारंगदेवोत, कानोड़

गीत (वड़ा साणोर)

पड़े वेध क्रूरमजद राण छल पीथलो ।
खलां सर वीज जिम वहै खवतां ॥
जागरण भड़ा भड़ छूट गोलां जठै ।
रुक झड़ डंडे हड़ रमैं रवतां ॥ १ ॥
पीथलो राण रा भड़ां सारंग पहल ।
वरे वड़ कुँआरी आय वागो ॥
थसे आगो करे खाग नागो धजां ।
लड़ै सीसोद असमान लागो ॥ २ ॥
वहै गोलां हुलां कून्त झटकां वहै ।
अनत रूधरा वहै नीक अझड़ां ॥
वरण श्रमसाण दल हीक चाड़े वणां ।
दिये सारंग तणों झीक टुजड़ां ॥ ३ ॥
छवे गोलो भुजां करे रोलां अछक ।
फते कर ऊगरे धरम फलियो ॥
कहावे बोल माहव हरै कीतरां ।
नजावे जीत रा वरां वलियो ॥ ४ ॥

(रचयिता–[illegible])

भावार्थः– हे पृथ्वीसिंह ! महाराणा और कछवाहों के मध्य युद्ध प्रारंभ होते समय, तूं महाराणा की सहायतार्थ रणभूमि में तत्पर होकर बिजली के समान कड़कड़ाहट करता हुआ शत्रु-सेना पर टूट पड़ा। हे रावत ! युद्ध भूमि में भयंकर तोपों की गर्जना के मध्य तू तलवारों से 'गेर' (ग्रामीण नृत्य विशेष) खेलता हुआ युद्ध में लगा रहा।

हे पृथ्वीसिंह सारंगदेव ! महाराणा के युद्ध आरंभ करने के पूर्व ही तू ने युद्ध में तलवार चलाना प्रारंभ कर दिया, अबला और अबोध कन्या के समान सेना के साथ तूने एक अनुभवी वर की भाँति सभी उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर युद्ध आरंभ कर दिया।

हे सारङ्गदेव ! उस भयंकर युद्ध में शत्रुओं के तोप के गोले, भालों तथा तलवारों के घाव लगाने लगा। जिससे शत्रुओं की सेना क्रुद्ध होकर भयंकर युद्ध करने लगी। परन्तु तूने फिर तलवार के वार की झड़ी लगा दी, जिस से उनके घावों में से अविरल रक्त धारा प्रवाहित होने लगी।

हे महासिंह के पौत्र ! युद्ध भूमि में भयंकर तोपों के गोले आकाश में आच्छादित हो गये; किन्तु फिर भी तूं अपने पुण्य तथा रण-कौशल से विजयी होकर नगारे बजाता हुआ अपने निवासःस्थल पर लौट आया।

६०. रावत पृथ्वीसिंह चुण्डावत, आमेट १

गीत (छोटा साणौर)

पुह रावत धनो पराक्रम पीथल।
घण बल पौरस दाख घणा॥
भड़तै समर भांजिया भाला।
तें जुड़ दल दखणियां तणा॥ १॥

निछट पांण घड़ड़ धुव नालां।
 घर राणा होए तो धक चाल़॥
 माभी अवर मुड़तां मंडियाँ।
 तूं तेगां पाथर रण ताल़॥ २॥

चौरंग वार अचल़ चूण्डावत।
 वागो काहल़ चाहूँ वल़॥
 सदा भड़ां हरवल दूलह सुत।
 दुजड़ां भांजै – सवा दल़॥ ३॥

कुल़ अजुआल़ अभ नवा मधुकर।
 सव थाटां गांजै सवण॥
 वसुह सुजस दुनियाण वदीतो।
 रूकां जीतो माहा रण॥ ४॥

(रचयिता:–अज्ञात)

भावार्थ:– हे राना के उमराव पृथ्वीसिंह ! तेरे पराक्रम को धन्यवाद है। तुझ में साहस शक्ति विशेष दिखाई देती है तूं दक्षिणियों की सेना से भिड़ने को युद्ध स्थल में प्रविष्ट हुआ और उनके भालों के टुकड़े कर दिये।

तीरों की बौछार, बन्दूकों की भयंकर आवाज होने लगी और महाराणा की देश भूमि को शत्रु शोणित से रंजित कर दिया और सेना

टिप्पणी:– १. यह रावत दुलहसिंह का पुत्र था और राणा संग्रामसिंह के समय मालवा की रक्षा के निमित्त होने वाले युद्ध में उक्त रावत ने भाग ले कर जीरण का गढ़ (परगना) अपनी जागीर में प्राप्त किया।

के वीर नायकों के मुड़ने पर तूने तलवारों की बौछार करते करते तलवारें भी तोड़ दीं।

हे चूण्डावत! चतुरङ्गिनी सेनामें अडिग रहने वाले तूने युद्ध स्थल में वीर वाद्यत्रादि की भयंकर आवाज होते समय अग्रभाग में रह कर अपनी तलवार से शत्रु सेना को विनष्ट कर दिया।

हे माधवसिंह (द्वितीय)! अपने कुल को उज्ज्वल रखने के लिये शत्रु-समूह को तूने पराजित कर दिया और तलवार की ताकत से विजय प्राप्त कर इस संसार में अपना यश फैलाया।

६१. रावत जसवंत सिंह चूंडावत देवगढ़ १

गीत (बड़ा साणौर)

अभंग पाथ हातां जसा खलां ला आंगमण।
कहहर नर का जलं भड़ं काम॥
आठ ही नगारा ।ंथ हेकण उरड़।
हीक घर ले गयो निया हाम॥ १॥

सालिया घणा छाती वचन साल रा।
वेतरफ कालरा नाद वागा॥
हटाला सांदवत मोहर भड़ हाल रा।
भीम जै माल रा त्रिने भागा॥ २॥

खगाटां भाट वैंडाक तीखा खड़े।
मगज करता जिके गणूं मन में॥
जसा धजरेल हूंतां समर जेटियाँ।
दोय तड़ हेटिया हेक दन में॥ ३॥

अणोड़ा सहत कीध समर जूझ वट।
कूंडला झोक नग जड़त कूण्डा ॥
अभंग कमंध तणौ गुमर उतारियौ।
चमर बंध धारियौ गुमर चूण्डा ॥ ४ ॥

(रचयिताः–अज्ञात)

भावार्थः– द्वितीय हम्मीर सिंह के समान हे योद्धा ! तूं वीर अर्जुन के समान बलशाली हाथों वाला है और किसी से भी परास्त नहीं होने वाला–अजेय है। तू ने शत्रुओं का सामना करते हुए कितने ही योद्धाओं को नष्ट कर दिया है।

शत्रुओं के कटु वचन तेरे हृदय में खटकने लगे और तूने नगारे बजवा कर शत्रुओं से सामना किया उस समय दोनों पक्षों के नगारे बज रहे थे। हे सांगा के वंशज ! प्रण पालन करने वाले ! तूं सेना के अग्रभाग में स्थित होकर युद्ध करने लगा। उस समय तेरे सामने से भीम सिंह बनेड़ा वाले ने तथा जयमल के वंशज बदनौर वाले दोनों योद्धाओं ने रण भूमि छोड़ दी।

तेरे विपक्षी–अश्वारोहण और तलवार चलाने की कला में अपने आपको निपुण समझते थे। उनको तूने ही अपने रण–कौशल से युद्ध भूमि से भगा दिया।

हे चूण्डा ! बनेड़ा के राजा शत्रुओं के घाव लगाने में निपुण कहे जाते थे तथा युद्ध भूमि में शत्रुओं के सम्मुख अडिग रहने वाले योद्धा

टिप्पणीः–१–यह रावत संग्राम सिंह का पुत्र था और अठारहवीं शताब्दी के अंत में होने वाले मेवाड़ के सरदारों में विद्रोही दल का प्रमुख व्यक्ति था। महाराणा प्रताप सिंह (द्वितीय) से लगा कर अरिसिंह तक प्रायः उसके बीच विरोध ही रहा। जिसका इस गीत में वर्णन है।

समझे जाते थे। इसी प्रकार बदनौर के राठौड़ भी अजेय योद्धा समझे जाते थे। उनका सारा अभिमान उन्हें परास्त कर तूने नष्ट कर दिया। तत्पश्चात् तूं चँवर ढुलाता हुआ युद्ध भूमि से विजय प्राप्त कर घर पर आया।

६२. रावत बुद्धसिंह चौहान, कोठारिया [१]

गीत (छोटा साणौर)

सलहां समझड़ां पाखरां साकुर।
धड़ चण खलां बीजलां थंग॥
ऊदा हरौ अंद्र छजे अत।
साजे दन राजे बुध सांग॥ १॥

कंगल भड़ां वड़े केकांणा।
धाय भाजण किलमां घमसाण॥
सुजस रखण दईवाण भाणव सुत।
चक्रवत एम बोजे चहुवाण॥ २॥

सुजल् वरद चाढण धर सैंभर।
अण भंग आप वंस अजुआल्॥
रूकां जीत अखाड़ै रावत।
रांणा तणां धरां रखवाल्॥ ३॥

(रचयिता:-अज्ञात)

टिप्पणः-१-यह रावतदेवभाण का पुत्र था और महाराणा अरिसिंह के समय में टोपल मगरी के पास होने वाले युद्ध में विद्रोहियों को दबाने में महाराणा के साथ रहा। जिसका गीत में वर्णन है।

भावार्थः- हे उदय भाण के पौत्र बुद्धसिंह ! तूं शूर वीर के समान वीर वेष धारण कर घोड़ों पर पाखर डाल कर युद्ध में गया। इन्द्र के समान तेरा जीवन यशस्वी है, मानो तूं ने अच्छे नक्षत्रों में जन्म प्राप्त किया है।

हे भाण के पुत्र ! कवच धारी योद्धा ! तूं मुगल सेना को शस्त्राघात द्वारा नष्ट करने हेतु घोड़ों पर पाखर डाल कर युद्ध भूमि में प्रवेश करता है। हे चाहुआन ! तूं चक्रवर्ती के समान महाराणा के यश को चिरायु करने वाला है।

हे रावत ! (चाहुआनों की राजधानी के यश को) तूं अजेय रह कर सांभर के यश को बढ़ाने वाला है। अपने वंश को उज्ज्वल, महाराणा की पृथ्वी की रक्षा करने के लिये युद्ध भूमि में तलवारों की शक्ति से विजय प्राप्त करता है।

६३. महाराज कुशालसिंह शक्तावत, भीण्डर १

गीत [सु पङ्ख]

मिले गनीमां अक्कारी फौज भयंकारी हींता माथै।
ढल्लकै सवारी भारी सूंडां डंड ढाल॥
धीवतौ दुधारी खलां अहंकारी दीह धोलै।
खारी वार रासा वेल आवियौ कुसाल॥ १॥

वाजतां त्रंबालौ धीह नरातालां खड़े वाज।
तोलियां छडालौ पाण पंखालै सुताण॥
वा कारियौ पाट री हटालौ खलां भूरो वाव।
आवियौ उमेद वालौ सींघालौ आराण॥ २॥

धीवतौ अटेल सेल गजां वेल फूल धारां।
झेलतो पेलतो साथां सामंतां उझेल॥

रूक झाटां वेल थियां गनीमां अठेल राजा।
निरदां अवायां आयां महाराज वेल॥ ३॥

खेड़िया न नीठ वाज पीठ कीना भड़ां सूर।
दहूँ दिल्ली दीठ धीठ सांटी पणां दाव॥
जाणता भरोसो थारो गरीठ दूसरा जैता।
रीठ वाग वला माथै दीनो गाड़ राव॥ ४॥

कीरती जहाज गढ़ां-कोटां कविराज करे।
तपौ सगतेस दूजो सूरेस दराज॥
आगै कर राजनेस काज महाराव आयो।
लोहां पाज बांध पाड़ै सतारा री लाज॥ ५॥

(रचयिता:-पहाड़ खान आढा)

भावार्थ:- शत्रुओं ने तीव्रगति से विशाल सेना का संगठन कर हींता ग्राम पर आक्रमण किया। उस समय गजारोही शत्रु सैनिक एवं विशाल काय हाथी धराशाई होने लगे। हे क्रुद्ध कुशाल-सिंह! उस समय दुधारी तलवार चलाकर केवल तूं ही रण-भूमि में उन्नत रहा।

हे उम्मेदसिंह के पुत्र! जिस समय युद्ध वाद्य व नगारे बजने लगे उस समय वायु के समान वेग वाले घोड़ों को युद्ध स्थल में उपस्थित किया। तब पक्षी के समान द्रुत गति से शत्रु सेना पर भाले से प्रहार किया और भूरेसिंह की भाँति शत्रुओं को ललकारता हुआ तूं युद्ध भूमि में उपस्थित हुआ।

टिप्पणी:-१-यह महाराज उम्मेदसिंह शक्तावत का पुत्र था और महाराणा राजसिंह (द्वितीय) के समय मरहठों के युद्ध में इसने अपना शौर्य बताया था। जिसका इस गीत में वर्णन है।

हाथियों के समूह की पंक्ति पर तीक्ष्ण भालों से प्रहार करते हुए तथा साथियों सहित स्वयं शत्रुओं के वार को सहन करते हुए तूंने अपने कुल गौरव को अधिक बढ़ा दिया। तलवारों के वार से शत्रुओं को धकेलता हुआ, गौरवान्वित हो तूंने महाराजा की सहायता की।

द्रुतगामी घोड़ों से शत्रुओं का पीछा कर तूंने दिल्ली पति को अपने शौर्य और साहस का परिचय दिया। हे जैत्रसिंह के समान योद्धा! जिस तरह का लोगों का तेरे पर विश्वास था ठीक उसी के अनुसार तूने कर दिखाया।

हे शक्तावत! समुद्र के उस पार कवियों ने तेरे यश को व्याप्त कर दिया है। दूसरे शक्तिसिंह के समान हे वीर! तूं इन्द्र के समान, शस्त्रों की बौछार करता हुआ, महाराणा राजसिंह का कार्य करने में अग्रगण्य हुआ है। हे महाराजा! तेरे शस्त्रों की भीषण वर्षा से शत्रुओं के शस्त्रों द्वारा बनाई हुई पाल को तूंने तोड़ डाला और उनके गौरव रूपी जलाशय को नष्ट कर डाला।

६४. शक्तावत कुशलसिंह, विजयपुर [१]

गीत (छोटा साणोर)

नारियण जोय पछे दूसरै नर हर।
देखो सगता भाल दुआ॥
भारत कुसलै बलां भरड़िया।
खल दांतां खोखला हुआ॥१॥

टिप्पणी:—[१]—यह महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिंह के बेटे अचलदास का पौत्र और विजयसिंह का पुत्र था। विजयपुर वाले इसी के वंशज हैं। मारहठों के आक्रमण होने पर युद्धादि में इस ने बड़ी वीरता दिखाई थी और सतारा के बादशाह के पास महाराणा ने इसे अपने प्रतिनिधि (वकील) के रूप में भेजा था।

माहेचा अकेला जुध मारे।
रूक वजाड़ वदीतो राण॥
केवी तणा गलिया कैल पुरा।
डाठां डगमगती दहवाण॥२॥

रूक दुवाह विजावत रावत।
वीस हती जोय दियो वर॥
जूनी डाढ़ां कमंध जारिया।
नवल वतीसी तणा नर॥३॥

(रचयिताः-मोतीसर पूर जी)

भावार्थः- हे कुशल सिंह शक्तावत ! तेरे पूर्वज नारायण दास और नर हर दास के वाद उन जैसा योद्धा तूं ही दृष्टि गोचर हुआ है। तूंने युद्ध में प्रति पक्षियों को चूर-चूर कर दिया, और उनके दांत ढीले कर दिये हैं।

माहेचा गोत्र के अकेले वीर ने युद्ध भूमि में तलवार चलाकर शत्रुओं को नष्ट कर महाराणा को विजयी किया, जिससे उस (महाराणा) ने उसे (वीर को) धन्यवाद दिया। सिशोदिया दंत-रूपी तलवार से शत्रुओं को उसने विनष्ट कर दिया, जिससे उस वृद्ध वीर की डाढ़ें हिलने लगीं।

हे विजयसिंह के पुत्र ! तलवार चलाने का तेरा साहस देख कर युद्ध-चंडी ने तुझे वरदान दिया, जिस से बूढ़ी दंत रूपी तलवार से नये दांतों वाले राठौड़ों व उनकी सेना को विनष्ट कर दिया।

६५. आशिया चारण दयाराम १

गीत (छोटा साणोर)

हुए उदेपुर राड़ नर असत चल चल हुए,
गहर वल वल हुए जांगियां घाव।

ईस ऊभो कहे सीस दे आशिया,
अछर कहि आसिया विवाणां आव ॥१॥

राण दल् कमंध खागां खहै रूसिया,
ढहै धरां धकै मैगलां ढाल।
कमल् दै आस नत चवै ग्रूं कमाली,
चवे रंभ आस उत रथां चढ़ चाल ॥२॥

वाहता खग जुध दिवस दोय वदीता,
गढ़ां कोटां सुणी वात वड़ गात।
पुणे सिवनाथ धारांम माथो समप,
पुणे रंभ नाथ तू रथां चढ़ पात ॥३॥

सत्रहरां रहे रण महे पदमेस संग,
समपियो ईसनूं सीस साहे।
चढे रथ पात अछरां वरे चालियो,
मालियो इंदरा पुरा मांहे ॥४॥

(रचयिता:—अज्ञात)

भावार्थ:- उदयपुर में युद्ध–आरंभ होते समय बार बार नगारों की भयंकर ध्वनि होने लगी और नगर-निवासी भयभीत होकर इधर

टिप्पणी:—१–वि० सं० १८०२ ई० सन् १७४५ में घाणेराव के ठाकुर राठौड़ पद्मसिंह पर उदयपुर के महाराणा जगतसिंह (द्वितीय) ने सेना भेजी और उदयपुर स्थित उनके निवास-स्थान को घेर लिया तब, ठाकुर पद्मसिंह राठौड़ अपने साथियों सहित युद्ध करता हुआ मारा गया। राठौड़ ठाकुर के पास रहने वाला चारण कवि आशिया दयाराम अपने स्वामी के साथ युद्ध करता हुआ रण खेत रहा। उसी दयाराम की स्वामीभक्ति का वर्णन इस गीत में किया गया है।

उधर भागने लगे। उस समय संग्राम के मध्य शंकर स्वयं खड़े होकर पुकारने लगे, "हे आशिया, मेरे कण्ठ में धारण करने के लिये तेरा मस्तक मुझे समर्पित कर–अप्सराएं कहने लगी "हे आशिया तूं हमारे विमान में आकर बैठ जा" ॥ १ ॥

महाराणा की सेना राठौड़ों पर क्रुद्ध होकर तलवारें चलाने लगीं और तलवारों के वार से गजारूढ़ योद्धाओं को ढालों सहित धराशायी करने लगी। उस समय शंकर पुकार–पुकार कर कहने लगे, "हे वीर! तेरे शोश के लिये सदैव मैं इच्छुक रहता था, इसलिये आज तूँ मेरी मनोकामना पूर्ण कर। इसी भांति अप्साराएं भी पुकार कर कहती हैं–कि–हे आशा के पुत्र, तूं विमान में बैठ कर हमारे साथ प्रयाण कर। ॥ २ ॥

युद्ध होते–होते दो दिवस व्यतीत हो गये। चारों दिशाओं के दुर्ग–स्वामियों तक इस का स्वर (समाचार) पहुँच गया। पार्वती नाथ कहते हैं, कि हे दयाराम, तेरा मस्तक मुझे अर्पित कर और मेरे कण्ठ को उससे सुशोभित कर। अप्सराएं तुझे 'स्वामी के नाम से संबोधित कर कहने लगी हे चारण कवि, हमारे रथ (विमान) में चल कर हमारे साथ स्वर्ग के लिये प्रस्थान कर ॥ ३ ॥

वीर दयाराम शत्रुओं का विनाश करता हुआ अपने स्वामी राठौड़ पद्मसिंह के साथ युद्ध–स्थल में धराशायी हुआ और अपने हाथ से शंकर को मस्तक समर्पित कर, अप्सराओं को वरण कर इन्द्रपुरी में निवास करने लगा ॥ ४ ॥

६६. आशिया चारण दयाराम

गीत (छोटा साणौर)

नाला़ पड़ धमक त्रंबलां नीद्रस।
राण जगो कम धज सिर रूठ ॥

भार पड़ंत पदम नहँ भागौ।
दया राम खग वागौ दूठ ॥ १ ॥

ऊडै धोम आरबां आतस।
खल दल सबल लूंबिया खूर ॥
पातल तणा मोहर उदया पुर।
सुत आसा टलियो नहँ सूर ॥ २ ॥

तोपां धड़क जाग जल तोड़ां।
रीठ पड़ँ गोलां धुज रैंण ॥
वीरम देव हरी रिण विढतां—
मिलियौ लोह हरो भीभैण ॥ ३ ॥

आसल कमंध लूंण उजवाले।
खिसियौ नहीं वंदे चहुँ खूंट ॥
राजां पदम पातग्ण रसिया।
वर अपछर वसिया वैकूंट ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:-हे दया राम, जिस समय महाराणा जगतसिंह ने क्रुद्ध होकर राठौड़ पद्मसिंह पर आक्रमण किया तब वीरता से सामना करता हुआ राठौड़ रणभूमि में अडिग बना रहा उस समय तूंने भी बड़ी बहादुरी से तलवार चलाई।

हे वीर! आतिशबाजी के समान आकाश में असंख्य तोप के गोले छागये, चारों ओर धुंआ छा गया और शत्रु सेना झूमने लगी, उसमें प्रतापसिंह का पुत्र पद्मसिंह बराबर युद्ध कर रहा था तूंने भी उसका साथ दिया और बड़ी वीरता से युद्ध करता रहा।

जलते हुए तोड़ों से चलने वाली तोपों की गर्जना से उनके गोलों की सनसनाहट से पृथ्वी कंपित होने लगी। वीरम देव के पोत्र पद्मसिंह घावों से आहत होकर वीर गति को प्राप्त हुए और साथ ही भीमराज का पौत्र दयाराम आशिया भी उसी के साथ शत्रुओं को नष्ट करता हुआ धराशाई हुआ।

हे आशिया! तूंने अपने स्वामी राठौड़ का नमक सच्चा करने हेतु, युद्ध भूमि को नहीं त्यागा, जिससे चारों ओर तेरी प्रशंसा हुई। राजा पद्मसिंह और उसका कवि दयाराम ने युद्ध-रस के उपभोग करते हुए तथा अप्सराओं का वरण कर वैकुण्ठ निवास किया।

६७. चहुआन उदयसिंह, गढी-बांसवाड़ा

गीत (सु पंख)

चंडी छाक ले आमखां गूद कोण चीलां रंजा चले।
धू काज दाकले गणां भूत राट धींग॥
पैराक चमूरां केक ऐराक छाक ले पूरी।
साकुरां हाकले उसी बेलां उदै सींग॥१॥

सनाहां खणंकै कड़ी वड़ी वड़ी नचे सूरां।
हूरां रंभ खड़ी खड़ी रचे सुभ्र हार हीर॥
महा घोर घड़ी वागां लागां जोर अड़ी मेले।
वाजंदां ऊपड़ी वागां चाहुआण वीर॥२॥

कोम पीठ भोम भार घूमै घड़ा नाग काळां।
वरं माळा लूंबै रथां रंभ चाळा वेस॥
त्राजतां त्रंबाळा के क्रर माळा झाळां वीच।
नेज त्राजां नरा ताळां संभरी नरेस॥३॥

धू तोम मंडी रें वीरां लाग हाक लोह थोम।
थोम घड़ा चड़ी रे उम्मरु डाक वाग ॥

रोस आग जाग भलें रूद्र से अड़ी रैं रूप।
विड़गां गडी रैं दूजो केहरी अजाग ॥४॥

वज्र छूटो इन्द्र के, विछूटो रामचंद्र-बाण।
कूदवा सामंद्र वाण टूटो हणू क्रोध ॥

कालीनाग घड़ा हूँ विहँग नाथ जूटो कना-
जटी की जटा सूं छूटो भद्र जोध ॥५॥

वाजै बंकी गोड़ के अखाड़ै रूथों लास बाड़।
जंगी होदां सूथा के पनागां पाड़ैं जूथ ॥

जोम आड़ै लागो चौड़े धाड़ैं भाड़े विजू जलां।
विधू से भिभाड़े ताड़े गनीमां विरूध ॥६॥

तेग झालां छोड़े केक विछोड़े वैकूंट ताला।
गोड़े गणा धीस माला जोड़े धार गंग ॥

तेगां पाण अग्रनंद सतारा नाथ सूं तोड़े।
मोड़े मारहट्टां घड़ा मरोड़े मतंग ॥७॥

टिप्पणी:-१-यह उदयसिंह अगरसिंह, चहुआण का पुत्र, और अच्छा वीर था। यह वागड़ इलाके का रहने वाला था। उक्त गीत में उसके वीरत्व और युद्ध कौशल का वर्णन है। अपनी वीरता से इसने सूंथ के कुछ इलाके पर अधिकार कर गद्दी का ठिकाना बना लिया।

६८ राज राघवदेव सिंह झाला, देलवाड़ा [१]

गीत (बड़ा साणोर)

अलग हूँत आया भला राणरा ऊमरा,
नगारां बाजतां प्रशण नमिया ।
रुधे कुरम कटक डगंतो राखियो,
डींगरा धणीरा कटक डगिया ॥१॥

मानसुत धनो फोजां तणो मोड़वी,
वाग ऊपाड़तां खाग वागो ।
पाटरा धणीरा थाट रहिया पगां,
झाटरा कटक सिर आग जागी ॥२॥

वहोत अरियांण तु'हीज समंद विरोले,
तूं ही दल डूबता थका तारे ।
राण रा भीच ढुढाड ओले रहे,
धणी चीत्तौड़ रो अंजस धारे ॥३॥

आदरे नहीं भारत सजा अभ नमा,
छडालां खवंता वात छोटी ।

टिप्पणी:—१ जब जयपुर के महाराजा माधोसिंह और भरतपुर नरेश जवाहिरमल जाट के बीच वि० सं० १८२४ ई० सन् १७६७ में युद्ध हुआ। तब जयपुर के राजा माधोसिंह ने उदयपुर के महाराणा अरिसिंह के साथ सैनिक समझोता किया । इस समझोते के अनुसार महाराणा की सेना जयपुर की सहायतार्थ भेजी गई जिसमें देलवाड़ा का सामन्त राघवदेव भी था। इस युद्ध में झाला राघवदेव ने जिस वीरता का परिचय दिया; उसी का इस गीत में उल्लेख किया गया है।

समर री जाण बाजी भली सुधारी,
महीपत व धारी बात मोटी ॥४॥

कुल उजलो करे घरे आया कुशल,
भड़ां सह कमुम्बल कीध भाला ।
हीये अवर मसण घणो हालियो,
झालियो उगंतो आम झाला ॥५॥

भलो जल चाडियो चितौड़ रा भाखरां,
लाखरा दलां विच उरस लागो ।
तेंही जीताड़ियो धणी जैंपुर तणो,
भरतपुर तणो सिरदार भागो ॥६॥

पाटड़ी छात रजवाट धर्म राखतां,
करतां उनेलगा घणी कीधी ।
हेक राजा तणी पीठ सबली हुई,
हूट राजा बीयां पीठ दीधी ॥७॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:- हे रावत देव ! जयपुर के कछवाह नरेश की सेना के चरण, शत्रुओं के सामने युद्ध-भूमि से डिगने लगे । उस समय हे राणा के उमराव, इतनी दूर से अपनी सेना लेकर ओज पूर्ण नगारे बजाता हुआ तूं जयपुर के युद्ध में जा पहुँचा, तेरे प्रेरणादायक नगारों के स्वर सुनकर प्रति पत्तियों ने शीश झुका दिये और जयपुर की सेना का पक्ष प्रबल कर तूंने डींगर के स्वामी की सेना के पग डिगा कर उन्हें भगा दिया ॥१॥

शत्रु सेना को भगा देने वाले हे मानसिंह के पुत्र ! तूं धन्य है। तूंने अश्वारोही होकर घोड़ों की रासें तानते हुए शत्रुओं पर तलवारों की वर्षा करदी। जिससे जयपुर नरेश की सेना के चरण दृढ़ होने लगे, और जाट सैनिकों (वीरों) में क्रोधाग्नि भड़क उठी ॥२॥

हे महाराणा के योद्धा ! समुद्र के समान अपार सेना को विचलित करने वाला और जयपुर नरेश की रक्षा करने वाला-तू ही था। तेरी वीरता के कारण ही ढूंढाड़ प्रदेश की रक्षा संभव हुई और इससे चित्तौड़ के नरेश भी गौरवान्वित हुए ॥३॥

श्री राजा ! (राघवदेव के प्रपितामह) के समान ही हे वीर राघव-देव, तू कभी साधारण युद्धों में भालों का प्रहार नहीं करता है। तूने इस भयंकर युद्ध को असाधारण जान कर जयपुर नरेश के सम्मान को रख लिया ॥४॥

हे झाला ! गिरते हुए आकाश के समान तूने इस युद्ध का भार अपनी प्रबल भुजाओं पर उठा लिया। जिससे प्रति पक्षियों के हृदय में तेरा साहस खटकने लगा। तू सभी वीरों सहित भालों को रक्त रंजित कर अपने कुल को उज्जवल कर पुनः आ गया ॥५॥

हे वीर ! तूने असंख्य सैना में आकाश की ओर अपना शीश ऊपर उठा कर युद्ध किया। जिस का गौरव चित्तौड़ की शैल मालाओं तक छा गया। तूने ही भरतपुर नरेश को पराजित कर जयपुर नरेश की विजय-ध्वजा फहराई ॥६॥

हे पाटड़ी-स्वामी के वंशज ! तूने जयपुर नरेश की सहायता कर क्षत्रिय-कुल-गौरव एवं धर्म की रक्षा करली। हे नरेश ! इस युद्ध में अन्य नरेश पीठ दिखाकर विमुख हो गये .केवल तेरी सहायता ही हुई ॥७॥

६९. राजा उम्मेदसिंह सिशोदिया, शाहपुरा [१]

गीत– (सु पंख)

वग आवरत पवन महाराज वखते विढण,
सरोतर तोलतां पाण अवसाण ।
नगां पत कूरमां नाथ चलतां नगां,
खगां पत हुऔ अवछाड़ खूमाण ॥ १ ॥

वायधिक अधिक दूजो गजण वाजतां,
हूंता दहुवै तरफ पाण हमराह ।
मेर गिर चल-विचल थयौ जैसींध महि,
गुरड़ भारथ रै ढके गज गाह ॥ २ ॥

अनिल बल चहूँ वहतां प्रबल अजावत,
सिखर नूं ऊपड़ै गज धजा सामेत ।
गिरन्द कछवाह होतां कदम चलत गत,
खगिन्द्र दूजे दले ढाँकिया खेत ॥ ३ ॥

समर महि धाड़ अवनाड़ ऊमेदसी,
इतो जग तोल जोतां सबल आज ।

टिप्पणी:—१—वि० सं० १७९७ ई० सन् १७४० में अजमेर के पास गंगवाणे में जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह और जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के बीच युद्ध हुआ, उसमें नागोर का स्वामी राजा बख्तसिंह भी शामिल था। इस युद्ध में जयपुर की ओर से शाहपुरा के राजाधिराज उम्मीदसिंह ने भी भाग लिया और अपने प्रचण्ड पराक्रम से नागोर के स्वामी बख्तसिंह को परास्त कर उसकी सामग्री छीनली । इस गीत में उपर्युक्त युद्ध का उल्लेख है !

आठमो भाग गिर-राज रो गयो उड,
राखियो अडिग अणियाँ सहित राज ॥ ४ ॥
(रचयिता:-कविया अनूपराम)

भावार्थ:- हे सिशोदिया उम्मेदसिंह, जिस समय जोधपुर नरेश-वख्तसिंह ने तुलारूपी भुजाओं पर अपना साहस तोलते हुए, पवन के के समान प्रचण्ड वेग से जयपुर की ओर युद्ध करने हेतु प्रस्थान किया, उस समय पर्वत के समान अटल जयपुर के स्वामी के चरण भी डग मगाने लगे। तब तूँ ने गरूड़ के समान द्रुत-गति से जाकर युद्ध-भूमि में जयसिंह की रक्षा की ॥ १ ॥

हे भारतसिंह के पुत्र। जिस समय गजसिंह का वंशज प्रचण्ड पवन के समान जयपुर नरेश-रूपी पर्वत को विचलित करने लगा था। उस समय तूने भी, जिस प्रकार गरूड़ पर्वत की अपने पंखों से रक्षा करता है, उसी प्रकार पर-रूपी अपनी भुजाओं से जयपुर नरेश की रक्षा कर उसके गौरव को बचाया ॥ २ ॥

द्वितीय दलेलसिंह के समान हे वीर उम्मेदसिंह, जिस समय अजीत-सिंह का पुत्र प्रचण्ड पवन के समान युद्ध भूमि में पर्वत के समान अटल जयपुर-नरेश के ध्वज को उखाड़ने लगा और जयसिंह के पैर डग मगाने लगे, उस समय तूने गरूड़ के समान द्रुतगति से आकर जयपुर नरेश की रक्षा की ॥ ३ ॥

हे उम्मेदसिंह, जिस समय युद्ध मि में मेरु के समान जयसिंह की सेना का आठवां भाग नष्ट हो गया और सेना सहित कछवाहा युद्ध-भूमि से पराजित हो भागने लगा, उस समय रणांगण में जयपुर नरेश की भीरूता को तूने छिपा लिया। राज्य की भूमि रक्षा हेतु इस प्रकार वीरता और शौर्य द्वारा जो तू ने किया, उसकी सब प्राणी प्रशंसा करते हैं ॥ ४

७० राजा उम्मेदसिंह सिशोदिया, शाहपुरा

गीत [सु पङ्ख]

झंडौ ऊवड़ै ग्रयंडां वाट तंडां सूरवीरां झुण्डै,
भासै मार तंडां पूर पतंगां सुमेद।
जाडा थंडां क्रोध चाढ मिलाया वखते जोध,
आडा खंडां मारू थंड़ां जिलाया उमेद ॥१॥

आतसां जागियां झाला झंगां चाढ़ कूलां ऊंडै,
दंडांला कराला दान रूड़ै धोलै दीह।
नीमजे वाणासां आयो अजारो विहूतो नाग,
सार वोहरतो खेत भारथ रौ सीह ॥२॥

चोल में वणावं मूरां कायरां अकूटा चाला,
एकठा वारंगां झुण्डां होवंतां उछाह।
छूटां धोम आत सां दुरदां तूटां कंध छकै,
वूठा लोहा अणी धारां रूठा महा वाह ॥३॥

हाको हाका ऊपड़ै वैंडाकां साम्हा खेत हक्कै,
छाकां सूर लोहां वोहां दुरदां विछोड़।
डाकां वागां ईजालै जोधाण जोध धौले दीह,
चाका वंध भल्ला भलो दिखाड़े चितौड़ ॥४॥

जमा डाढां साचवै हकालै वलां महा जोध,
नीहसै वाणां सां वाढ़ गाजियो निहाव।

अघायो उमेद रोलै गाढ़ थंभ रहे ऊभौ,
रोलै धाप हालियाँ गाढे मारू राव ॥५॥

(रचयिताः—भादा हरदान)

भावार्थः— शंकर के ताण्डव नृत्य के समान युद्ध क्रीड़ा करने के लिये शत्रुओं का समूह घोड़ों पर अपनी ध्वजा लहराता हुआ एकत्रित हुआ और इस कुतूहल प्रद युद्ध को देखने के लिये सूर्य भी स्थिर हो गया। तब अपने बलवान वीर-समूह के साथ क्रोध में आकर वख्तसिंह भी युद्ध-भूमि में आ शामिल हुआ और उम्मेदसिंह शत्रु-वीर-समूह के तिरछे घाव लगाकर उसे युद्ध-भूमि में घुमाने लगा ॥ १ ॥

आतिश बाजी की तरह तोपें और बन्दूकें चलने लगीं। उनके बारुद से प्रकाश होने लगा। वीर अपने कुल-गौरव को ऊँचा उठाने के लिये मध्यान्ह में भयंकर नगारे बजाने लगे। उस समय ऐसे भयंकर सैन्य-समूह से भिड़ने के लिये खिजाये हुए सर्प की तरह अजीतसिंह का पुत्र बख्तसिंह हाथ में तलवार उठा कर आया और इधर से भारतसिंह के पुत्र उम्मेद सिंह ने तलवार से रणक्षेत्र झाड़ते हुए सामना किया ॥ २ ॥

लाल वस्त्र धारण किये हुए कायरों के साथ वीर-गण बेहद छेड़छाड़ करने लगे। उस समय अप्सराओं का समूह एकत्रित हो गया और प्रचण्ड वीरों द्वारा शस्त्रों की चोटों से, तोपों और बन्दूकों के प्रबल प्रहार से-मदोन्मत्त हाथियों के कंधे टूटने लगे ॥ ३ ॥

अश्वारोही योद्धा वीर हुंकार करते हुए युद्ध-क्षेत्र में प्रविष्ट हुए और घावों से छके हुए वीरों ने हाथियों को धड़ों से अलग कर दिया मध्यान्ह में नगारे बजाकर जोधपुर-नरेश के सैनिक वीर जोधपुर को उज्जवल करने लगे और उधर चित्तौड़-पति के वीर भी उन्हें चारों ओर से घेर कर विशेष बहादुरी दिखाने लगे ॥ ४ ॥

युद्ध में बड़े-बड़े योद्धा, सैनिक वीरों को ललकारते हुए कटारियों के वार करने लगे और शत्रुओं के घाव करती हुई तलवारों की झंकार

से आकाश गूंज उठा। ऐसे समय में उम्मेदसिंह युद्ध-कौतूहल के बीच स्तंभ की तरह अडिग पैर जमा कर खड़ा रहा और युद्ध से तृप्त होकर अडिग रहने वाला राठौड़ रणांगण से वापस लौट गया ॥ ५ ॥

७१. राजा उम्मेदसिंह सिशोदिया, शाहपुरा

गीत

पंथिया वातड़ी न जिण तणी पह, जिण दिन भारथ जागा।
दिखण दलां राण छल दारण, विजड़ां कुण कुण वागा ॥ १ ॥
लाखां तणा पटायत लड़िया, चूंडा झाला चंगा।
एकण भूप उमेद ऊपरा, असमर वगा अढंगा ॥ २ ॥
माधोराव तणा भड़ माझी, वल मवलां त्रिप वूठा।
भारथ तणा तणै सिर भारा, विजड़ां अगणित तूठा ॥ ३ ॥
खुल्यां जहीं अभनमो खूजो, कलहण गजां कलेगो।
भड़ अजवड़ां मिलेगो धागां, मनसा जैत्र मिलेगो ॥ ४ ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- कवि पूछता है कि "हे पथिकों, अन्य बातों को छोड़कर, महाराणा और दक्षिणियों के मध्य भयंकर युद्ध हुआ, उस में किन किन वीरों ने तलवार चलाई, उसका वृत्तान्त मेरे सम्मुख करो ॥ १ ॥

उज्जैन से आने वाले पथिकों ने कहा "शिरोमणि चुण्डावत एवं झाला जो कि लाखों रुपये की सम्पत्ति के जागीरदार हैं" उन्होंने तलवार चलाई। किन्तु केवल मात्र उम्मेदसिंह के ऊपर ही शत्रुगण भयंकर तलवार चलाते थे ॥ २ ॥

माधवराव की सेना के मुख्य-मुख्य साहसी यौद्धाओं ने शस्त्रों की बोछार कर दी और भारतसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह पर असंख्य तलवारों को प्रहार करते करते तोड़ डाली ॥ ३ ॥

सुजानसिंह और सूर्यमल के समान वीर उम्मेदसिंह, तूं शत्रुओं के हाथियों को धराशायी करता हुआ, अन्त में वीर गति को प्राप्त हुआ। उम्मेदसिंह के शरीर के अंग छिन्न भिन्न होकर रण भूमि में मिल गये तथा उनकी आत्मा परमात्मा की दिव्य ज्योति में लीन हो गई ॥ ४ ॥

७३. राजा उम्मेदसिंह सिशोदिया, शाहपुरा

गीत (वड़ा साणोर)

लियां भूप ऊमेद गज गाह लड़ लोहड़ां,
लागियाँ डाण गज गाह लटकै।
वेख गजराज गत राणियाँ वखतसी,
खांत तण हिये गज राज खटकै ॥१॥

तड़ कमंध गाँजिया लिया भारथ तणौ,
भांजिया कटक वनराव भूखै।
सम गयन्द नारियाँ चाल पेखे सुपह,
हुआ रड़माल उर गयन्द दूखै ॥२॥

पामिया मोड़ सामंत कायल पुरे,
मग त्रणौ दंत वग पंथ माला।
कामणी गवण मैमंत उमंगां करै,
कंथ चित चुभै मैमंत काला ॥३॥

गजां गत वेख गजराज चूड़ा गरक,
सोभ गज मोतियाँ भार सारा।

जीवड़ै आद गिरि गजां जाणिया,
वखतसी राणियाँ न दे वारा ॥४॥

(रचयिता:-कृपाराम महड़ु)

भावार्थ:-हे उम्मेदसिंह; तू ने शत्रुओं से लड़ कर शस्त्रों द्वारा हाथियों को कुचलते हुए कुछ हाथियों को अपने पराक्रम से हस्तगत कर लिया तथा कुछ को घायल कर जब जोधपुर के राजा वख्तसिंह अन्त:पुर में जाता था तो उसे गज- गामिनी रानियों को देख कर, युद्ध स्थल के हाथी स्मरण में आते थे। जिससे हाथियों की स्मृति निरन्तर हृदय में खटकती थी ॥ १ ॥

हे भारतसिंह के पुत्र ! तू क्षुधातुर सिंह की भांति सेना को पराजित कर तू ने राठोड़ नरेश को परास्त कर दिया। हे दूसरे रणमल के समान वीर वख्तसिंह, जिस समय अन्त:पुर की गजगामिनि रानियों की चाल देखता तो उसे युद्ध स्थल में खोये हुए हाथियों की स्मृति हो आती थी। यह स्मृति उसके हृदय में बड़ी पीड़ा करती रहती थी ॥ २ ॥

हे सिशोदिया, उम्मेदसिंह तेरे द्वारा नष्ट किये हुए हाथियों के दांत इस प्रकार पंक्ति में पड़े हुए थे मानों श्वेत बगुलों की पंक्ति हो। इस पंक्ति को देख कर उनके मदोन्मत्त हाथी की स्मृति हृदय में खटकती रही ॥३॥

वख्तसिंह-जिस समय अन्त: पुर में जाता उस समय गज-गामिनि रानियों के वक्षस्थल पर गजमुक्ताओं के हार तथा हाथों में हाथी दांत की चूड़ियों को देखता तो उसे अपनी पराजय और हाथियों की स्मृति हो आती थी। अत: वह रानियों को अपने अन्त:पुर में निश्चित तिथि और समय पर भी आने से मना कर देता था ॥४॥

७२ राजा उम्मेदसिंह सिशोदिया, शाहपुरा

गीत-(सु पंख)

दोला दूसरा उमेदसिंघ आवला मेलिये दला ।
चोट इक हकै सु चंचला धकै चाढ़ ॥
मेली खाक साख में अंजली जोड़ आण मली ।
वली डली डली की खुमांण खला वाढ़ ॥१॥

कटांविस्त झाड़ झाड़ा पहाड़ सैंलोट कीधा ।
वंस रांण मेवाड़ा अहाड़ा चढ़े वांन ॥
वड़ा आसवासी जिके वांकी ठोड़ तणां वासी ।
मीणां खासी रेत किया मेवासी अमान ॥२॥

धाड़-धाड़ पाथ रुपी भाराथ रां गादी धणी ।
पंजाया देखाया मेले सेनां साथ पूर ॥
अरी वाढ काढिया आढ़ ऐराकियां ।
सूधा कियां वंवाकियां वजावै राजा सूर ॥३॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:- दूसरे दौलत सिंह के समान उम्मेदसिंह ने सेना सहित एक ही वार घोड़े पर चढ़ कर शत्रुओं पर आक्रमण किया और विपत्तियों की शाखा को खाक में मिला दिया जिससे शत्रु हाथ जोड़ कर सामने आ गया । सिशोदिया ने युद्ध स्थल में प्रवेश कर शत्रुओं के घाव लगा उनके टुकड़े २ कर दिये ॥

मेवाड़ के राणावंशज सिशोदिया ने अपने गौरव को बढ़ाने के लिये पहाड़ों के झाड़ झंखाड़ों को साफ करा खुला मैदान बना दिया और विकट पहाड़ों में रहने वाले मीणों, गरासियों और भीलों (जो डाके डाला करते थे) को अपने अधीन कर लिया ।

हे भारत सिंह के उत्ताराधिकारी उम्मेदसिंह ! अर्जुन के समान तेरे साहस को धन्य है । हे शूरवीर नरेश ! तुमने आठ अश्वारोहियों से शत्रुओं को मार कर निकाल दिया और न जाने कितनों को नक्कारे बजवा कर सीधा कर दिया ॥

७४ राजा उम्मेदसिंह सिशोदिया, शाहपुरा

गीत [वड़ा साणोर]

दुरंग बणाहड़ा सहित सरदार अड़ते दियो ।
जमी असमान बिच सबद जड़ियौ ॥
हाथियां तणौ उमेद वड़ हीड़ाऊ ।
पड़ाऊ लियण रौ व्यसन पड़ियौ ॥ १ ॥
वरूथां वीर चाला करण बुलावै ।
थरहरां डुलावै पिसण थांनां ॥
मदझरां भारथ रौ टका नहँ मुलावै ।
खाग बल खुलावै फील खानां ॥ २ ॥
सूजहर मिले अश्रिपामण साज सूं ।
जैत खंभ आज रौ किला जेरै ॥
वारण लियण हेरे नहं विसाती ।
हथीड़ां दूकलां खला हेरै ॥ ३ ॥
तड़ां अन तड़ां सीसोद कीधां तंडल ।
रहचकां रांण सुरताण रीधां ॥
सिंधुरां पड़ाउ लियण बंध सेहुरां ।
देहुरां देहुरां चाढ़ दीधां ॥ ४ ॥

[रचयिता:—अज्ञात]

भावार्थ—युद्धारंभ होते ही सरदारसिंह ने बनेड़ा सहित किला सौंप दिया। जिससे हे उम्मेदसिंह ! धरती और आसमान के बीच तेरी कीर्ति फैल गई है। बड़े २ हाथियों को खुलवा कर छीनने की तेरी आदत ही पड़ गई है।

शूरवीर शत्रुओं से छेड़छाड़ कर उनको अपने स्थान से डांवा डोल कर देता है और कंपा देता है। हे भरतसिंह के पुत्र ! तूं मूल्य देकर हाथियों को खरीदता नहीं है। तूं तो अपनी तलवार की ताकत से ही दुश्मनों की हस्तिशाला से हाथी खुलवा लेता है।

हे सुजानसिंह के पौत्र ! तूं अजीब तरह से अपनी सेना को सजाकर चढ़ाई करता है और विजय का स्तंभ बन कर शत्रुओं के किलों को जीत लेता है। तूं हाथियों को खरीदने के लिये उनके व्यापारियों को ढूंढता किंतु तूं हाथियों सहित शत्रुओं को खोजता है।

संगठित और असंगठित शत्रुओं को तूं ने नष्ट कर दिया है। तेरे शौर्य को देखकर बादशाह आश्चर्यान्वित हो गया और राणा ने प्रसन्नता प्रकट की। हे उम्मेदसिंह तूं ने शत्रुओं से हाथियों को लेकर बहुत से देव मंदिरों को भेंट कर दिया है।

७५ राजा उम्मेद सिंह सिशोदिया, शाहपुरा

गीत (छोटा साणोर)

सफरा असनान खाग धारां सिर—
उतरा रवि क्रम क्रम असमेद ॥
जुध में भड़ा चाहिजे जतरा।
अतरां ग्रब पामिया उमेद ॥१॥
बांधे नेत राण छल बागो।
मग मग जग साधे धर मोद ॥

ईसर-गवर मिलिय आराधे ।
सही मो सिर लाधौ सीसोद ॥ २ ॥

जसड़ो हो तो देग वट जाहर ।
तेग वगां मृत कियो तिसो ॥
भारी लोण रांण छल भिड़ियो ।
जुड़ियो खेत उजेंण जसो ॥ ३ ॥

केलपुरा कमंधां कछवाहां ।
आविया ऊगे सदा धन ॥
जुड़वे मरण हुवो जूड़ारां ।
दातारां तणौ इसो दन ॥ ४ ॥

सूरां नरां मरण रौ सरायो ।
कवि गाथा सुजस जे कंठ ॥
भारी छल पाया भारथाणी ।
वधाविया देवां वैकुंठ ॥ ५ ॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थः- क्षिप्रा नदी के पवित्र स्थान की गंगा का स्नान, तलवार की धार से रक्त रंजित होना, सूर्य की चाल उत्तरायण को देख कर युद्ध भूमि में तूं प्रति कदम अश्व मेध यज्ञ का फल प्राप्त करते हुए हे उम्मेद-सिंह, तूं ने ऐसे पुण्य का दिन प्राप्त किया। वीरों के लिये युद्ध भूमि में पुण्य प्राप्त करने के लिये जितने साधन होने चाहिये उतने ही तुझे उपलब्ध हुए ॥

की साधना की। हे सिशोदिया! युद्ध भूमि में शंकर और पार्वती मिल कर तेरे मस्तक के हेतु तेरी आराधना करते थे उसी प्रकार उनको तेरे सिर का लाभ मिला॥

गौरव के साथ जैसा तू युद्ध करता है वैसा ही तू शत्रुओं पर तलवार चलाता है और महाराणा का नमक उज्ज्वल करने के लिये तू ने प्रतिपक्षियों के शस्त्रों द्वारा अपनी मृत्यु प्राप्त की॥

हे सिशोदिया! राठौड़ और कछवाहा नरेशों से समय समय पर तू लोहा लेता रहता था। हे वीर! तूं दानवीर और युद्ध वीरता में निपुण था, जिससे तुझे यह पुण्य समय प्राप्त हुआ॥

स्वर्ग लोक में देवताओं ने और पृथ्वी पर मनुष्यों ने तेरे इस मृत्यु के अवसर को देख कर तेरी सराहना की और कवि लोगों ने मुक्त कंठ से तेरा यशोगान किया है। हे भारतसिंह के पुत्र। उक्त समय अच्छा प्राप्त किया जिससे स्वर्ग में देवता लोगों ने तेरा भली प्रकार स्वागत किया॥

७५. राजा उम्मेदसिंह सिशोदिया, शाहपुरा

गीत—(सुपंख)

पला बांध रायजादा पणे दोय सोवा पातसाई।
खहे कला हूंत जे उथाप दीधा खेद॥
माण धारे दूजा भूप इस हेक मामला सूं।
अनेक मामला सूं इसा खाटिया उमेद॥१॥

जसो नाथ कुरम्भां कमंधां अभो जेठी।
बानेत चीतोड़ नाथ जगो महावीर॥
केही वेलां खिजाया या तीना हूंतां झूठो कले।
केही वेलां हरोलां व्हे रिझाया कणठीर॥२॥

बखतेस वाला दलां वांढाक बाण सा वागो ।
हुवो बूंदी हूंतो दलो काढाक हीकोट ॥
बारा सूं भूठो कोध गाढाक गनीमां आगे ।
माभी धके चांढाक गनीमां माल कोट ॥३॥

भाराथ ढीकोला कीधा भांजिया भुरखो भीच ।
सेन दोला कीधां कीधो जनकूं साकेल ॥
रावोदेव सुधां सोला आगे सात गोलो कीधा ।
ओलो लीधा जसो बाथ ऊबरे आंकेल ॥४॥

जाजनेरां, सांवरा, नूं लूटिया जहान जाणे ।
सारा जोम हीण होय छूटिया सीमाड़ ॥
बणोडो, कोठियां कला तूटिया जे धके बागां ।
वलीरा मेवासां माण ग्वूटिया वेछाड़ ॥५॥

दे दे रीभ हजारां कविन्दां नूं नवाज दीधा ।
सोभाग हजारां लीधा तालो सोभवान ॥
हजारां भाराथ कीधा भूरै ऊभे राहां हूंत ।
ऊभे राहां हूंतां कीधा हजारां आसान ॥६॥

हिंदवाण नाथ हूंता हिंदवाण द्रोही व्हेता ।
जोधाण आंम्बेर सोही पालटे जे वार ॥
दाखियो दिवाण राज मो थंभे न कोही दूजो ।
भारात रा महावीर तोही भुजां भार ॥७॥

बाज डंकां त्रंबाला आतंका लाग वेरी हरा ।
रसा बोध काज धंकां धारियां सीरी सोद ॥
पृथी नाथ बाला बांज बाबां माथै वेल पूगौ ।
सदा वीर हाकां माथै बाहरू सीसोद ॥८॥

आंबानेर जोधाण नाथरौ भेद खेद ऊठो ।
सतारा नाथरौ भूल हे जमां समाग ॥
ऊठी सारा साम द्रोहां साथ रौ संगाथ एतो ।
भाराथ रौ अठी हेका हेकी भूरौ बाघ ॥९॥

खूंटा भंडां हबोला हे थंडां भू वेहरी खुरां ।
सूर ढंकां खेहरी भू मंजं नसा तेस ॥
रोला काज तेहरी थटेत आया राजा माथै ।
जटेल केहरी दोला फीलां टोल जेम ॥१०॥

एहा थोक लाखां उदेनेर दोला आंय लागे ।
ताम तोपां ताव बागै कायरां धू तांम ॥
पतो वीजो चढ़े रूकां न्याय बागे जठे पैलां ।
सारा एके धाय भागै पाधरै संग्राम ॥११॥

मार दीधा हेकले नीसाण लम्बी मूछा किया ।
तेग पाण सूधा किया छाकिया तो सेल ॥
ईखे तेज राजारो धाखिया संधी ओट लधी ।
जठे राजा संधी माथे हाकिया जो सेल ॥१२॥

खुरा मेल घटालां पतालां घू नेजालां खूटा ।
रव तालां माथ चालां दीठा काल रूप ॥
लाय झालां क्रोध भूरो चूठतो बरालां लोह ।
भूरो वीर चालां काज पूगो एम भूप ॥१३॥

जोधारां तोखारां व्हे दवासूं भेखां जरदालां ।
दवा सूँ करालां नाद वाजिया दुजीह ॥
कड़े चढ़े भड़ां फौजां दवासूं देठालां कीधा ।
आंमां सांमा फीलां झंड़ा फाविया अबीह ॥१४॥

ईखे वेढ लंका ज्यां अपारां कंकां थोक आया ।
काली वीर कलक्के श्रोण का प्याला काज ॥
हूरा रंभ हजारां गैणाग ढका रथां हूंत ।
सोभ गांकां नाथ धाया नाथ डेरू डंका साज ॥१५॥

लाखां बाण गोलां खें नखत्रां ज्यूं तूटवा लागा ।
सेसरा तूटवा लागा भार हूँ सुमेद ॥
लागा सरां सेला फील सजोड़े फ़टवा लागा ।
यूं चौड़े जूटवा लागा माथ ने उमेद ॥१६॥

दृठ ऊभां वाकारे पेखतां काचा प्राण दाझे ।
भड़ां नाथ जागे तेज जाणे जेठ भाण ॥
रूक वाजे वां अनेक हजारां गनीमां रोले ।
साजे एक हजारां सूं दूसरो सुजाण ॥१७॥

भूमे धोम अरावां गेणाग तांई धोम लागे ।
कंध कोम लागो फोजां मचोल काराथ ॥

राघोदेव झाला और सौलह उमरावों द्वारा महाराणा ने देवगढ़ वाले जसवन्तसिंह के ऊपर आक्रमण करवाया। उस समय हे वीर उम्मेदसिंह, तू ने जसवन्तसिंह का पक्ष लेकर उसकी ओर से युद्ध किया ॥ ४ ॥

हे वीर, तू ने जहाजपुर व सावर को लूट कर सारे प्रान्त में आतंक फैला दिया। जिस से शाहपुरा के समीपवर्ती राजा इधर उधर भयभीत होकर आश्रय लेने लगे। वनेड़ा नरेश ने तेरा सामना किया पर तू ने बड़ी वीरता से नरेश का राजप्रासादों सहित विनाश किया। पर्वत प्रदेशीय डाकुओं को नष्ट कर उनके अभिमान को नष्ट कर दिया ॥ ५ ॥

हे भाग्यशाली वीर, तूने सहस्त्रों कवियों को दान देकर उन से प्रशंसा प्राप्त की। हिन्दुओं और मुगलों से अनेकों समय तू ने युद्ध कर निर्वल पक्ष की सहायता की। जिससे तूने दोनों जातियों से समय-समय पर प्रशंसा प्राप्त की ॥ ६ ॥

जोधपुर और आमेर नरेश ने जब मिल कर मेवाड़ के महाराणा के ऊपर आक्रमण किया। उस समय हे वीर, महाराणा ने मेवाड़ की रक्षार्थ, इस युद्ध का समस्त उत्तरदायित्व तेरे कंधों पर ही छोड़ा। महाराणा कहने लगे कि, हे भारतसिंह के वीर पुत्र, मेवाड़ राज्य का भार तेरे ही कंधो पर छोड़ता हूँ क्योंकि अन्य में इस भार को वहन करने की सामर्थ्य नहीं हैं ॥ ७ ॥

हे यौद्धा, तेरे नगारों के घोष से शत्रु भय से कम्पित हो जाते थे। मेवाड़-भूमि की रक्षा के लिये तू ने चारों ओर आतंक फैला दिया। हे सिशोदिया, तू ने नक्कारे बजाते हुए योगियों से भी युद्ध किया। इसी प्रकार तू सदैव निर्बल पक्ष की सहायता रण-भूमि में बड़ी वीरता के साथ करता था ॥ ८ ॥

जयपुर के कछवाहा एवं जोधपुर के राठोड़ वीरों के मन में ईर्ष्या होने के कारण सिंधिया के साथ मिल कर जिन में मेवाड़ के विद्रोही

सामन्त भी थे, मेवाड़ के ऊपर आक्रमण किया। उस समय हे भारत-सिंह के पुत्र, तूने सिंह के समान क्रुद्ध होकर स्वामी के हेतु-रणस्थल में प्रयाण किया ॥ ९ ॥

उस समय रण-भूमि में झंडे लहराने लगे और अश्वों के खुरों से पृथ्वी कुचली जाने लगी। घोड़ों के पैरों द्वारा उड़ती धूलिकण की आड़ में सूर्य छिप गया और पृथ्वी पर अन्धकार ही अन्धकार छा गया। जयपुर, जोधपुर और सिंधिया आदि सैनिक वीरों से शाहपुरा के विरुद्ध युद्ध करने के लिये सिंह रूपी शाहपुरा नरेश को गजरूपी सैनिकों ने चारों ओर से घेर लिया ॥ १० ॥

हे उम्मेदसिंह, प्रतापसिंह के समान वीर, अनेकों समय शत्रुओं द्वारा उदयपुर को घेरे जाने पर तू ने प्रचंड तोपों की गर्जना के मध्य युद्ध किया। अपनी तलवार के वार से शत्रुओं के शरीर में तू ने अनेकों घाव लगाये, यह देख कर भीरु सैनिक कम्पित होने लगे ॥११॥

हे वीर, तू अकेला ही शत्रु सेना से युद्ध करता हुआ, उनके नगारे और झण्डों को नीचे गिराने लगा। इस प्रकार सिंधिया सैनिकों पर क्रुद्ध होकर हे उम्मेदसिंह तू आक्रमण करने लगा। जिस से सिंधिया के सैनिक अपनी प्राण रक्षा हेतु आश्रय लेने लगे ॥ १२ ॥

माधवराव सिंधिया की सेना में घोड़ों की इतनी भरमार थी कि घोड़ों के खुर से खुर मिलने लग गये तथा हाथियों पर अनेकों ध्वज लहराने लगे। सिंधिया की सेना का विराट समूह काल के सदृश दृष्टि गोचर होने लगा। उस समय प्रज्वलित अग्नि के समान क्रोध में आकर तू शत्रु सेना पर प्रहार करने लगा और हे वीर, विरोधियों को चुनौती देने के लिये उनके सम्मुख जा पहुँचा ॥ १३ ॥

रण भूमि में दोनों ओर के अश्वारोही बख्तर पहने हुए अद्भुत वेष घोड़ों पर पाखर डाले हुए नगारे बजने लगे। दोनों पक्ष की ओर हाथियों

पर ध्वज लहराने लगे। इस प्रकार दोनों ही पक्ष के योद्धा अपने-अपने निश्चय पर दृढ़ प्रतीत होने लगे ॥ १४ ॥

लंका के युद्ध के समान भयंकर युद्ध जानकर गिद्धनियों के समूह दौड़ दौड़ कर आने लगे। कालिका और वीर रक्तपान करने के लिये अट्टहास करने लगे। आकाश-मार्ग से सहस्रों अप्सराएँ विमान से आकाश को आच्छादित करती हुई रण-भूमि में उपस्थित हुई। उस समय नौ नाथ सहित शंकर भी डाक के डंका लगाते हुए शीघ्र ही रण-भूमि में उपस्थित हुए ॥ १५ ॥

लाखों तीर और तोप के गोले युद्ध में इस प्रकार से गिरा रहे थे मानो आकाश मार्ग से तारे टूट टूट कर गिर रहे हों। इस प्रकार की युद्ध की धूमधाम से शेष नाग का मस्तक डोलने लगा। वीरों के तीक्ष्ण भालों और बाणों के वार से दो-दो हाथी एक साथ धराशायी होने लगे। हे उम्मेदसिंह, तू ने इस प्रकार की भयंकरता से माधवराव-सिंधिया से युद्ध किया ॥ १६ ॥

इस प्रकार शूरवीर यमराज के समान भयंकर रूप धारण कर परस्पर ललकारने लगे। इस भयंकरता को देखकर भीरु सैनिक के प्राण धक्-धक् करने लगे। हे उम्मेदसिंह शूर वीरों का स्वामी, तू ने ज्येष्ठ मास के सूर्य के ताप के समान तेज धारण करते हुए युद्ध जागृत कर, अपने हजारों सैनिक वीरों द्वारा शत्रुओं का नाश किया। हे सुजानसिंह के समान वीर, तूं ने केवल एक हजार सैनिकों से ही युद्ध प्रारंभ कर दिया ॥ १७ ॥

भयंकर घोष का उत्पन्न करने वाले नगारों के बजने से आकाश गूंज उठा। दोनों ओर की सेनाओं के भार से तथा परस्पर टक्कर से कछुए की पीठ लचकने लग गई। उस समय हे वीर तू क्रुद्ध होकर आकाश की ओर अपना मस्तक उन्नत कर शत्रुओं के संमूह में जाकर युद्ध करने लगा ॥ १८ ॥

उस समय हे वीर क्रोध के आवेश में आकर आकाश की ओर उन्नत मस्तक किये हुए और घावों को सहन करते हुए विरोधियों को शस्त्राघात द्वारा रक्त रंजित करने लगा। विरोधियों की सेना के काले पर्वताकार हाथियों के समूह पर आकाश की बिजली के समान प्रहार करते हुए उनको धराशायी किया। जिससे हाथियों के मस्तक रण-भूमि में टूट-टूट कर गिरने लगे ॥ १६ ॥

रण-भूमि में योद्धा "काटो" मारो शब्द का उच्चारण करते हुए तलवारों से शीघ्रता पूर्वक प्रहार करने लगे। अनेकों योद्धा शत्रु सैनिकों के वक्षः स्थल में कटारी का तीक्ष्ण वार कर पीठ के पीछे कटारी को निकालने लगे हे योद्धा, जिस प्रकार पृथ्वीराज चौहान के सामन्तों ने युद्ध किया था उसी प्रकार तेरे योद्धा तेरे प्रति पक्षियों केसामने युद्ध करने लगे ॥ २० ॥

रण-भूमि में असीम रक्तप्रवाह नदी के रूप में बहने लगा। चण्डी और योगनियों ने समूह पंक्ति बनाकर रक्त-पात्र भर कर रक्त पीना आरंभ किया। भालों व तलवारों के वार से शत्रु सैन्य का संहार होने लगा। युद्ध भूमि में मृत हाथियों के शव को गिद्ध खाने लगे और युद्ध भूमि में त्रिकोणाकार नुकीलेदार तीक्ष्ण भाले परस्पर वीरों द्वारा चलाये जाने लगे ॥ २१ ॥

शूर वीरों ने सूर्य एवं नारद ऋषि को युद्ध का कौतुहल देखने का अवसर दिया तथा शंकर को कण्ठ में मुण्ड-माल धारण कराने हेतु अपने मस्तक काट कर समर्पित किये। सभी तीर्थों में श्रेष्ठ तीर्थ उज्जैन की रण-भूमि में, भयंकर युद्ध करता हुआ ऋषि राज के समान रक्त धारा में और सफरा नदी की धारा में तू ने स्नान किया ॥ २२ ॥

महाभारत और लंका के समान तू ने यह तीसरा भयंकर युद्ध कर, अपने कुल के गौरव को बढ़ाया। हे सामन्त, तू ने नगारों की भीषण गर्जना के मध्य शत्रुओं का नाश कर अन्त में तू शत्रुओं के भालों

के वार से वीर गति को प्राप्त हुआ, अप्सराओं के विमान में विचरण करने लगा।

स्वर्ग लोक से गजा रूढ़ होकर इन्द्र आदि देवता तेरे स्वागत के लिये सम्मुख आये और स्वागत किया। हे सेना नायक उम्मेदसिंह, तू ने लाखों शत्रुओं को नष्ट कर कुल को उज्जवल करते हुए तलवार से कटकर सेना सहित विमानों पर आसीन होकर स्वर्ग की ओर प्रयाण किया ॥२४॥

जब तक सूर्य हिन्दुओं और मुगलों को प्रकाश देता रहेगा तब तक तेरा यश इस संसार में व्याप्त रहेगा। हे योद्धा इन्द्रलोक के अद्भुत झरोखे में बैठने के लिये आकाश मार्ग से तू पहुँच गया। हे वीर, जिस प्रकार रण के लिये तू प्रसिद्ध था उसी प्रकार से तू ने रण-भूमि में युद्ध किया। जिस की प्रशंसा संसार में विद्यमान रहेगी ॥ २५ ॥

७७. रावत पहाड़सिंह चुण्डावत, सलूम्बर [१]

गीत—(सुपंख)

आयो उरेड़ियो जोम रौ पटेल माथै धारे आंट।
 रवरोस दूर हूँ तेड़ियौ काथै राग॥
  सांकलां हूँ लांधणीक हेड़ियो वीहतो सेर।
   पूंछ चांप सूतो फेर छेड़िया पैनाग॥ १ ॥

घाट ओढी पाहड़ेस धकेलतो नोढी धड़ा।
 जड़ां खलां ऊखेलतो धरा छलां जाग॥
  गजां वोह बीच तुरी भेलतो बराथी गाढो।
   लोह जाय मेलतो उरांथी द्रोह लाग॥ २ ॥

बजाई कुबेर चढ़े बींद ज्यूं अनोप बाने।
 अगोप गे भांजे यसो हाथलां उठाय॥

अताला करंतो होफ जंगां रोसा धक्र ओप,
कोप-तोप भालां लोप आयो महा काय ॥ ३ ॥

भूंत नालां उछाजतो भांजतो हाथियां धक्के,
धारू जलां गांजते अनेक घड़ा धींग।
काल क्रीट ऊभांजतो ऊठियो लोयणां कोप,
नरवेधा दोयणां खंभ गांजतो त्रसींग ॥ ४ ॥

चूंडे सोवादार किया खागरा उछाज चौड़े,
दिहूँ पासे चसम्मा आग रा तेज दीस।
हेमरां अजेज वेग वाग रा उठाण हूँत,
मको हुआ नागरा मजेज हीण सीस ॥ ५ ॥

सन्नाहां न मावै सूर चड़ी-चड़ी नाच सूंडे,
आग भड़ी द्रोह ऊंडै चसम्मा अटेल।
भड़ी खड़ी मूंछ अहां लोहरे हडूंड भांत,
पड़ी अड़ी गड़ चूरड़े अचूरडै पटेल ॥ ६ ॥

आस मेद जागरा अमाप पांव देत आवा,
आछै खांप हूँत देत ओनागा अत्रीठ।
लड़ाक सीसोद नेम गनीमां अहेत लागा,
नेत बंध वागा खेत अखाड़े नत्रीठ ॥ ७ ॥

रोक रोक तुगी भाण आराण विलोक रीझे,
विभ्र मोक त्रलोक नंवोक घोक वाज।
वेध वेध सोक झोक तोक वाण सेल खाग,
सीसोद गनीम तणा थोक हूँ चोक सकाज ॥ ८ ॥

वारंगां उमंगां रंगां विमाणंगा सोक वाज,
रारंगां अभंगां भड़ां दमंगां रो सार ।
पनंगां विहंगां ढंगां नारंगां अभीच पड़ा,
सारंगां खतंगां अंगा मातंगां दू सार ॥ ६ ॥

खत्री कंध जेम केही रो सार चसम्मां खोले,
सार तोले केही सार साचवै समंध ।
वार पड़े पूठ केही माथा मार-मार बोले,
काया तेग धार ऊठ डोले के कमंध ॥१०॥

सूर गैण वाथ वाले घणा तेग छूटै संध,
रोस छूटा घण सूर माले गाडे रात्र ।
वणा सेल फूटां सीस करे खाग वाढां घांव,
वणा खाग टूटां करे जम्मां डाढां घाव ॥११॥

नारांजां के झड़े सूर अच्छरां लगावे नेह,
छेह पेले केही सूर आभड़े न छोत ।
देह त्यागै केही सूर जीरणां वसत्रां दाय,
सैं देह वेवाणां वैठ जावे के साजोत ॥१२॥

दुक्काल रा संध ज्यूं रहे न कोइ खीज ओटी,
करे के लाल रा जके छोटी वूथ कूंत ।
धाराला झालरा नागां अगोठी काल रा धूवै,
हाल रा चौसटी दे अनोठी वाण हूंत ॥१३॥

महाराग छंडेव छंडेव व्हे न दे न गूंड,
वजंडेव डम्मरु चंडेव हत्ती वीस ।

संडेव छंडेव मेख पाथ वाण पाय साच,
उमंडेव मंडेव तंडेव नाच ईस ॥१४॥

ईस लंका चेत्रां त्रेता जुगेतां सग्राम असो,
उरधरेत केता धू अनेता उनन्द्र।
रुद्र छाक लेता वीर देता राह जेता फरे,
मल हास हेता वेता अनेता मृनन्द्र ॥१५॥

पंथ आसमाण हूंत झपट्टी अपट्टी परां
वरां कंठ लपट्टी अपट्टी जेणवार।
सामठी झड़फके गीध जठी तठी गणा सधें,
धूर जट्टी चुणे धू हजारां हाथ धार ॥१६॥

भद्र जाती चुणें मीस मोती म्त्रोण पंका मलें,
लात मोती मुगली नसंका चुगें खूद।
अंका कीध लंका राम मल वंका खेत एम,
ग्रीध कंका असंका नसंका लिये गृद ॥१७॥

जू झवां फुहार टक उडें थके आय जेता,
अंग चक्र वार हुआ वक्र के अथाण।
केल पुरें अठी उठी चक्र वेग फेर कीधा,
मार टक मार हटी सेन रो मथांण ॥१८॥

चावदंत दीह अगां समा जूझ लाग चालें,
नग तालें साम धर्मी तणो साचो नेम।
क्रोध वाले रूप गनीमाण रो विधूंस कीधो,
जोध वाले वीर भद्र दक्ष जाग जेम ॥१९॥

सीसोद उमंडे सुरां लोक लीधो सीस साटे,
हत्ती वीस मंडें ओक वाटा म्त्रोण हेत।

रूतौ सार दूल खांत अखाड़ै उपाट रोस,
खलां दांत खाटा करे स्तो बीर खेत ॥२०॥

बीत त्यागी जेम सूर भी राण सीसोद बड़ै,
आभ कीत लागी चढ़ै निराणां धकायो ज्वाद ।
जुधा जुधा खलां तणा जिराणां एकूंट,
बीराणा चखावे स्वाद हालियो बैकूंट ॥२१॥

हुओ जोखंत कांकल ओत ओत जोत हूंतो,
जोत हूंतां रही नकां भंतका जुहार ।
सरै छांहां मही पुरी सातमी तंतका सार,
अंत समै लही पुरी अतंका उदार ॥२२॥

घरी खरी सरीत नग्राही वाज फूल धारां,
गोलकूंडे रीत चूंडे अरी करी गाह ।
परी वरी हंस बैठ विमाणां सैं जोत पूगो,
मरी-मरी टूक होय उडो प्रथी माह ॥२३॥

(रचयिताः—बद्रीदास खड़िया)

भावार्थः— हे रावत, माधवराव पटेल के ऊपर क्रुद्ध होकर, तू युद्ध करने लगा। तू ने बड़ी दूर से आकर भी आतुर हो युद्ध किया। उस समय तू श्रृङ्खला से छूटे हुए भूखे सिंह के समान अथवा सुप्त सर्प की पूंछ पर चरण लग जाने के समान भयङ्कर रूप से शत्रु सेना पर क्रुद्ध हुआ ॥१॥

टिप्पणीः— १. यह रावत जोधसिंह का पुत्र था और वि० सं० १८२१ में सलूम्बर का रावत हुआ। वि० सं० १८२५ में महाराणा अरिसिंह के समय उज्जैन में सफरा नदी के तट पर माधवजी सिंधिया से मेवाड़ की सेना का युद्ध हुआ, तब बड़ी वीरता से युद्ध करता हुआ छोटी अवस्था में स्वर्गवासी हो गया।

हे पहाड़सिंह, तू ने असीम सेना को विलक्षण रूप से पीछे धकेल दिया और पृथ्वी से शत्रुओं को निर्मूल करने लगा। हाथियों के समूह में अश्वारोही होकर शस्त्रों सहित प्रविष्ट हो युद्ध करने लगा ॥ २॥

हे कुबेरसिंह के समान वीर, तेरा विवाह के वर के समान तेजोमय पुष्ट शरीर दृष्टिगोचर होने लगा। सिंह के पंजे के समान अपने हाथ उठाकर तलवार से हाथियों को नष्ट करने लगा। युद्धः स्थल में क्रुद्धसिंह की भांति दहाड़ता हुआ युद्ध करने लगा। तेरी वक्र दृष्टि से तू युद्धः स्थल में शोभित रहता है। हे दीर्घ स्कंधधारी वीर, तू शत्रु सेना की अग्नि उगले वाली तोपों से भी अपनी रक्षा कर शत्रु के सामने जा पहुँचा ॥ ३ ॥

हे चुण्डावत, बन्दूकों की गोलियों का सामना कर शत्रुओं के हाथियों का नाश करता हुआ तू सुशोभित हुआ। सहस्रों वीरों का नाश करता हुआ तू अपनी तलवार को माँजने लगा तू यमराज के समान क्रुद्ध होकर शत्रुओं को ललकारने लगा और सहज ही नृसिंह अवतार के समान हिरण्यकश्यप रूपी शत्रु सैन्य को चीरने लगा ॥ ४ ॥

हे चुण्डा. तू ने सेना में सूबेदार का पद प्राप्त किया और प्रत्यक्ष रूप से तलवार उठाकर विरोधियों पर वार करने लगा। तुरन्त ही तू ने अश्वारोही होकर अपने नेत्रों में क्रोधाग्नि भर कर घोड़ों की वागों को अपनी सेना से उठवाने लगा। शेष नाग भी जो पृथ्वी का भार वहन करने का गौरव प्राप्त किये हुए था । उनका भी गौरव तेरी इस चपलता के कारण, पृथ्वी कम्पित हो जाने से, क्षीण हो गया ॥ ५ ॥

तेरे सैनिक वीरों के बलिष्ट शरीर बख्तरों में नहीं समा रहे थे। उनका अंग :प्रत्यंग युद्ध के आनन्द से प्रफुल्लित हो रहा था। सैनिक वीर नैत्रों में क्रोधाग्नि भर भोहों को टेढ़ी कर शत्रुओं पर इस प्रकार तलवार से प्रहार कर रहे थे मानो वे 'गैर' (ग्रामीण खेल) खेल रहे हों। इस प्रकार हे चुण्डा, अपने प्रण पर अटल रह कर तू पटेल से युद्ध करने लगा ॥ ६ ॥

हे चुण्डा, तू नंगी तलवारों से शत्रुओं पर प्रहार करता हुआ ऐसा लगता था मानो अश्वमेध यज्ञ कर रहा हो। इस प्रकार तू रण चातुर्य दिखाता हुआ शत्रुओं की सेना चीरता हुआ आगे बढ़ गया। हे सिशोदिया, तू विजय चिन्ह धारण कर, इस प्रकार युद्ध कर रहा था मानों अखाड़े में दंगल हेतु मल्ल भिड़ रहे हो ॥ ७ ॥

उस समय आकाश-मार्ग में सूर्य अपने रथ को रोक, बड़ी प्रसन्नता से युद्ध देखने लगा। रण-भेरी एवं नगारों के तीव्र घोष से तीनों लोक भयभीत होने लगे। हे सिशोदिया वीर, तू ऐसे समय पर भयंकर रूप से शत्रुओं का पीछा करता हुआ, उन पर, तीर, भालों और तलवारों से प्रहार करने लगा ॥ ८ ॥

रण भेरी सुन कर वीरों का वरण करने हेतु अप्सराएँ विमान सहित युद्ध स्थल में उपस्थित होने लगी। उनके विमानों की सन् सन् करती हुई ध्वनि स्पष्ट सुनाई देती है। तेरे नेत्रों में क्रोधाग्नि भभक उठी। सर्प के ऊपर जिस प्रकार गरुड़ तीव्र गति से आक्रमण करते हैं, उसी प्रकार हे सिशोदिया वीर, तू ने बाणों की वर्षा से उन्मत्त हाथियों के ऊपर प्रहार कर उनके शरीरों को भेद डाला ॥ ९ ॥

अनेकों वीर अपने मस्तक के कट जाने पर भी धड़ सहित उठ कर युद्ध करते रहे और अनेकों योद्धाओं के कटे हुए शीश अपने धड़ की ओर मुख खोलकर कहने लगे 'मारो' 'मारो'। इस प्रकार रण भूमि में वीरां के शरीर मस्तक के न होते हुए भी इधर उधर बड़ी तीव्र गति से चलते फिरते हैं ॥ १० ॥

अनेकों योद्धाओं के धड़ आकाश में उछलने लगे। अनेकों योद्धा अपने चरण दृढ़ता से टिका कर युद्ध स्थल में भयंकर रूप से भागने लगे। अनेकों वीर भालों से अपने मस्तक के चकनाचूर होने पर भी तलवारों से युद्ध करने लगे। यहाँ तक कि तलवारों के टूटने पर वे कटारों से युद्ध करते रहे ॥ ११ ॥

अनेकों धनुर्धारी वीरों के साथ अप्सराएँ प्रणय बन्धन करने लगी। स्पर्शास्पर्श का ध्यान किये बिना ही वीर रण भूमि के उस पार सेना को चीरते हुए चले जाते थे। अनेकों योद्धा अपने प्राण शरीर से इस प्रकार छोड़ देते थे मानों फटे हुए वस्त्र को छोड़ रहे हों। अनेकों वीर सदेह अप्सराओं के विमानों पर आसीन होकर परम ब्रह्म में अपनी आत्मा लीन कर देते थे ॥ १२ ॥

क्रुद्ध समुद्र की भांति वीरों के नेत्रों में क्रोध सीमा छोड़ कर उबलने लगा। जिससे किसी की भी रक्षा नहीं हो सकी। वीरों ने भालों एवं अन्य शस्त्रों के प्रहार से शत्रु सैनिकों के शरीरों के टुकड़े २ कर दिये। इस प्रकार के तलवारों के विलक्षण युद्ध में नगारों का भयंकर घोष होने लगा। वीरों की इस प्रकार की रण-क्रीड़ा को देखने हेतु चौंसठ योगनियाँ रण-भूमि में हालरा (वीर गीत) को नवीन ढंग से गाती हुई रण भूमि में आने लगी ॥ १३ ॥

बीस भुजाओं वाली चण्डी, हाथ में डमरू का भयंकर घोष करती हुई रण भूमि में विचरण करती है। अर्जुन के समान धनुष में प्रवीण योद्धाओं का युद्ध देख कर शंकर अपने वाहन वृषभ को छोड़कर ताण्डव नृत्य करने लगे ॥ १४ ॥

यह युद्ध त्रेता युग में राम-रावण-युद्ध की भांति भयंकर रूप से होने लगा और रणांगण में शंकर अपने कण्ठ में कितने ही मुण्डों की मुण्डमाला धारण करने लगे। बावन वीर और पिशाच रक्तपान कर युद्ध भूमि में विचरने लगे। अनेकों ऋषि, नारद आदि आदि हास्य विनोद करने हेतु रणभूमि में सम्मिलित हुए ॥ १५ ॥

युद्धः स्थल में अनेकों अप्सराएँ वीरों के वक्षःस्थल पर झूमने लगी। गिद्धनियों के समूह मांस भक्षण हेतु इधर उधर झपटने लगे। शंकर सहस्रों भुजाओं को धारण कर सहस्रों मुण्डों को प्राप्त करने लगे ॥ १६ ॥

हाथियों में उत्तम जाति के भद्र हाथियों के मस्तक चूर चूर होने के कारण उनके मस्तक से मोती रक्त प्रवाह में वहे जारहे हैं। जिन को हंस वड़ी प्रसन्नता से चुगने लगे। गिद्ध धराशायी योद्धाओं के मांस का भक्षण निशंक होकर करने लगे। हे सिशोदिया वीर, जैसा युद्ध राम और रावण ने मिलकर किया वैसा ही युद्ध तू ने किया ॥ १७॥

वृत्ताकार तलवारों की धार से शत्रुओं के शरीर के तिरछे टुकड़े उड़ने लगे तथा शत्रुओं के धड़ से रक्तधार फव्वारे की भांति वहने लगी। उस रक्त धार से टकराने वाले योद्धा भी दूर जा पड़ते थे। हे हे सिशोदिया, तू ने शत्रुओं की सेना के दूसरे भाग पर वार कर मरहठों की सेना का सर्वनाश किया ॥ १८ ॥

एक श्रेष्ठ स्वामी भक्त की भांति, हे वीर उम्मेदसिंह, तू सूर्योदय के समय से ही युद्धारंभ करता हुआ उस में तल्लीन हो गया। दक्ष के यज्ञ रूपी रण में क्रुद्ध होता हुआ वीर भद्र के समान शत्रु सेना का समूल सर्वनाश किया ॥ १९ ॥

हे वीर, तू ने अपने मस्तक को प्रसन्नता से देकर, स्वर्ग का उपभोग किया। तेरे रक्त का पान वीस हाथों वाली चण्डी, अपने वीसों ही हाथ से अञ्जली वनाकर करने लगी। क्रुद्ध सिंह की भांति तू ने अपने प्रण को पूर्ण किया। शत्रु सेना के दांत खट्टे करते हुए तू ने रण-भूमि में वीर गति प्राप्त की ॥ २० ॥

हे सिशोदिया, तू दान वीरों और युद्ध वीरों में भी वेजोड़ रहा। तू ने तीनों लोक में अपना यश व्याप्त कर दिया। तू अपनी वीरता से शत्रुओं के हृदय में ईर्ष्या की ज्वाला जलाता हुआ तथा उनको अपनी वीरता का स्वाद चखाता हुआ, वैकुण्ठ पुरी में जा वसा ॥ २१ ॥

अनेक योद्धाओं के शरीर को छिन्न भिन्न करते तू ने परम पिता परमात्मा की दिव्य ज्योति में मिला दिया। जिससे किसी को भ्रांति नहीं रही। इस युद्ध की चर्चा सातों हीं खंडों में होने लगी। हे यशस्वी

तेरा यश भी सातों ही खण्ड में व्याप्त हो गया और अन्त में तू ने स्वर्ग की ओर प्रयाण किया ॥ २२ ॥

इस प्रकार चुण्डावत वीर ने स्वामी के नमक की सच्ची परीक्षा देने के लिये चक्रव्यूह बनाकर युद्ध किया। रण भूमि में चुण्डावत तिल२ कट कर आकाश में अप्सराओं के साथ विमान में विहार करता हुआ, परमात्मा की दिव्य ज्योति में सदा के लिये विलीन हो गया ॥ २३ ॥

७८. राज रायसिंह झाला, सादड़ी ?

गीत [सु पङ्खः]

तंडै जोगणी महेस संडै उमंडै परी बेताल़ ।
घुरंडै प्रचंडै थंडै उडंडै बेसाड़ ॥
आडै खंडै रोप झंडै भुजां डंडै तोले आम ।
रायांसींघ गनीमां सूं मंडै चौड़े राड़ ॥ १ ॥

खतंगा कराटे झाट वागे गठ रीठ खगें ।
जगे पाट प्रेत काली अनाढ़ जुवाण ॥
सतारा हजार आठ लोह लाट आयो सजे ।
रांसा रा निग्न से साठ नीम जे आराण ॥ २ ॥

श्रोण चंडी पयाल़ां नवाल़ां ग्रीध भखै मांस ।
दूध भीने शाला ताला प्रुसाला जे दीठ ॥
दुजाला बिलाला झाला अचाल़ा दखणी दल़ा ।
रूप माला जंगा गजां ढालां माता रीठ ॥ ३ ॥

[illegible]राल़ा कराल़ा झाल़ा अताल़ा त्रिछूटै त्राण ।
तह खेत्र पाल़ा मंडे बेताल़ा तमास ॥

भावार्थः— हे रायसिंह ! तू अपनी अश्वारोही सेना लेकर बड़े स्वाभिमान के साथ युद्ध में खुले स्थान पर प्रविष्ठ हुआ। नभ-मंडल को अपनी भुजाओं पर स्थित रख सकने योग्य प्रचंड भुजाओं के सहारे शत्रु के सम्मुख अपना झंडा ऊँचा किया। उस समय शंकर का वाहन वृषभ बोलने लगा, योगिनियाँ, भूत, प्रेत आदि २ अपने निवास पर युद्धारंभ सुनकर प्रसन्न होने लगे।

हे वीर ! तेरे अविराम तलवार के प्रहार को देखकर कालिका एवं प्रेत, मांस एवं रक्त के लिये, तुरंत रण-भूमि में उपस्थित हुए। इधर सतारे का स्वामी आठ हजार सेना लेकर रणभूमि में आया।

हे झाला ! दूध के दांत अभी तक नहीं गिरे हों ऐसी सुन्दरता से तू देदीप्यमान हो रहा है। ऐसे हे नवयुवक वीर ! दक्षिणियों की सेना की तलवार और भालों को पकड़ कर, तूने हाथियों को नष्ट करने हेतु भयंकर युद्ध आरंभ किया। भयंकर अग्नि की ज्वाला के समान बाणों की बौछार युद्ध भूमि में होने लगी। उस समय क्षेत्रपाल एवं भूत प्रेत आदि युद्ध को देखने लगे। हे कीर्ति सिंह के पुत्र ! तू मदोन्मत्त श्याम हाथी पर लहराते हुए झंडों पर सिंह की भाँति तलवार से आक्रमण करने लगा।

हे वीर ! तू भिन्न २ प्रकार के शृंगी नाद और नगारे बजवाता हुआ, भालों के वार से झंडों सहित हाथियों को धराशाई करने लगा। शत्रुओं के शरीर से उनके शीश इस प्रकार नीचे गिराने लगा, मानो सिंह हाथियों के सिर को गिरा रहा हो। बड़े बड़े गजारोही योद्धाओं के वख्तर (लोहे की जंजीरों से बना हुआ योद्धाओं का वेष) की जंजीरें तथा हाथियों के होदों (हाथी पर कसने की विशेष प्रकार की काठी) के टुकड़े २ करने लगा॥

युद्धारंभ के समय यमदूत जैसे भयंकर मुगलों के वीर, भूत और प्रेत इत्यादि रण भूमि में उपस्थित होने लगे। सतारे का स्वामी ताबूत

निकलते समय जो शोर होता है उसी प्रकार के शब्द से युद्ध भूमि में सेना सहित करने लगा। क्षत्रियों ने उनके साथ कटारी, खंजर, दुधारे तथा धनुष आदि अनेक प्रकार के शस्त्रों द्वारा विपक्षियों से युद्ध करने लगे॥

अविवाहित अप्सराओं का समूह रथ में बैठ कर योग्य योद्धाओं के कंठ में वरमाला धारण कराने हेतु उपस्थित हुआ। उस समय वीरों का वरण करने हेतु अपने समूह में ही वे झगड़ने लगीं। हे दूसरे चंद्रसेन और अर्जुन के समान वीर, इस भारत में यह उक्ति सत्य करने के लिये तू सिंह की भाँति आक्रमण करता हुआ शत्रु सेना का नाश करने लगा।

इस युद्ध भूमि में सियाल मांस भक्षण करते और गिद्ध आँतों के के टुकड़े लेकर इधर उधर आकाश में उड़ते हैं। शूरवीर अपने भालों को शत्रुओं के रक्त से रंजित करने लगे। इसी प्रकार शूरवीर झाला द्वारा किये हुए युद्ध में, मदोन्मत्त हाथियों पर तलवार के प्रहार होने लगे। जिससे मदोन्मत्त हाथी रण-भूमि में धराशाई होने लगे॥

दोनों ओर की सेना के भाले चम चमाने लगे। इस दृश्य को सूर्य देखने लगा, अप्सराएँ मन ही मन हर्षित हुईं तथा नारद मुनि खिल-खिलाकर हँसने लगे। हे झाला! जिस प्रकार का तेरा भयंकर युद्ध करने का निश्चय था, उसी प्रकार से भयंकर युद्ध वाद्य बजवा कर तू ने अपनी, आकाश में उठ सकने वाली भुजाओं से युद्ध किया।

भीरु सैनिकों की जिव्हा भय से शुष्क होने लगी और एकाएक चौंक उठे। रण में डंकों की चोट से नगारे भयंकर शब्द करने लगे और वीर अपने नेत्रों में क्रोध की ज्वाला भर कर शत्रु सेना को नष्ट करने लगे।

योद्धागण हुँकार करते हुए शत्रु-सेना पर तलवार के वार कर, उसे नष्ट करने लगे।

परस्पर के प्रहार से योद्धाओं के लोह के बख्तरों की जंजीरें टूटने लगीं। उस समय वीरों का वरण करने करने हेतु अप्सराएं रथ में चल कर युद्ध भूमि में आने लगीं। हे वीर रायसिंह ! ऐसी कठिन परिस्थिति में टेढ़ी तलवारों का शब्द करवाता हुआ तू पल-पल में तलवार रूपी ज्वाला की लपट से शत्रुओं को भस्म करने लगा ॥

महा चंडी नवीन रक्त का अपनी इच्छानुसार पान करने लगी। प्रफुल्लित अप्सराएँ प्रतिक्षण शूरवीरों का वर्णन करने लगीं। हे राय-सिंह ! तू उस समय वीर वेष में खड़ा हुआ शत्रुओं की भागती हुई सेना को देखने लगा। नगारों की भयंकर ध्वनि से भयभीत हो शत्रु-सैन्य भागने लगा।

योद्धाओं के शस्त्राघात से मरहट्ट शत्रु धरती पर पड़े हुए तड़फने लगे और और उनके रेजे (मोटा कपड़ा) के झंडे हाथियों सहित धरती पर गिरने लगे। हे रायसिंह ! अपने पराक्रम से हींता (स्थान विशेष) की रण भूमि में शत्रुओं का नाश कर विजयोल्लास में तू खड़ा हुआ ॥

तू ने मांसा हारी प्राणियों को मांस से एवं चंडी को रक्त से प्रसन्न किया। जिससे तेरी सादड़ी के सिंहासन के चारों ओर जय जयकार होने लगी। महाराणा के युद्ध के समय सहस्रों शत्रुओं का नाश कर वीरोचित सम्मान प्राप्त किया और पुनः अपने निवास स्थान (सादड़ी) लौट आया ॥

७६ रावत भीमसिंह चुण्डावत, सलूम्बर

गीत—(सु पंख)

हचै खलां थोका भंजे फुणां फेर रा आपाण हूँत,
दाखे जेण वेर रा बखाण झोका देर।
सही जीत होय राख्यो कुवेर रा भीमसिंह,
सेर रा कांठला जेम राण री आसेर ॥ १ ॥

अड़े खेत गनीमां झला रा रूपी आय खगे,
विजु जला दलां रा आछटे थके वेग।
थाट पती दो हतेस राखियो मलारा थंभ,
नौ हतेस गलाग हार जूं उदनेग॥ २॥

ससक्कै नगार वंध लटक्कै नागरा सीस,
आ गरा अंगार तोपां भटक्कै अवाज।
राखियो खंगार दूजा खाग रा पाण सूं रघू,
राण वालां वाधरा संगार जेम राज॥ ३॥

वरेस तूफ सूं आंट वसे जे छार रे वीच,
सम्भै गज भार रै करैस पूरी साथ।
खरेस मारुरे मूंढे काल हेत फेट खावे,
हाट करी मार रे मरेस व्याले हाथ॥ ४॥

चूंडा झोक थारी आडी लीहरी वाखाण चवां,
ताई होय गया तारा दीहरा तावूत।
रघू अवीहरा पणौं राणराव वालो राज,
सीहरा वणाव जेम राखियो सावूत॥ ५॥

(रचियता:– अज्ञात)

भावार्थ:– हे कुबेरसिंह के पुत्र भीमसिंह, शत्रुओं की असंख्य सेना से शेषनाग के ऊपर अधिक भार पड़ने के कारण फण झुकने लगे

टिप्पणी:— यह रावत कुबेरसिंह का पुत्र था और अपने भतीजे पहाड़सिंह के युद्ध में परलोक वास होने पर सलूम्बर का रावत हुआ। महाराणा अरिसिंह से लगा कर भीमसिंह के युग तक कई युद्धों में भाग लिया। इस गीत में इसका वर्णन है।

गया। किन्तु उस सेना में भी तू सत्य से विचलित नहीं हुआ और साहस से युद्ध करता रहा। जिस प्रकार सिंह के कण्ठ से कोई आभूषण नहीं निकाल सकता, उसी प्रकार तेरे जैसे सिंह के कण्ठ से चित्तौड़ कोई नहीं निकाल सका अर्थात् तू ने सिंह वत् चित्तौड़ की रक्षा की ॥१॥

युद्ध-काल में तू ज्वालारूपी तलवार से शत्रु सेनाओं को नष्ट करने लगा। हे शासन के संचालक, (थाट पति ये राणा के आदेशों को क्रियान्वित करते थे) तू पृथ्वी के ऊपर स्तंभ के समान युद्ध भूमि में अडिग रहा। नौ हाथ लम्बे प्रचण्ड सिंह की भाँति तू ने उदयपुर राज्य की रक्षा की ॥ २ ॥

हे खेंगार जैसे वीर, युद्ध-भूमि में अग्नि उगलने वाली भयंकर तोपों के गोलो के धमाके से शेषनाग का फण कम्पित हो उठा। नगारों वाले बड़े बड़े यौद्धा भी युद्ध की भीषणता देखकर हृदय में कम्पित हो उठे। परन्तु तू ने सिंह जिस प्रकार अपने शरीरके शृंगार की रक्षा करता है, उसी प्रकार तूने मेवाड़ राज्य की रक्षा की ॥ ३ ॥

हे वीर, वे यौद्धा जो तेरे शत्रुता किये हुए थे। तू ने उनका सर्व-नाश कर दिया। शत्रुओं के अनेक हाथियों को मारते हुए, शत्रु-यौद्धाओं को तलवार के घाट उतार दिया। इस प्रकार कितने ही वीरों को वीर गति प्रदान कर अप्सराओं के साथ उनका वरण करा दिया। हे यौद्धा, जिस प्रकार हाथियों के शत्रु सिंह से कोई आभूषण हस्तगत करने की चेष्टा में जाय तो उस वीर की मृत्यु से निडर होकर जाना पड़ता है। उसी प्रकार जो भी मेवाड़ राज्य को लेना चाहें उसे पहले निडर होकर तेरे से युद्ध करना पड़ता है ॥ ४ ॥

हे चुण्डा, तू ने तलवार चलाने में अपने अद्वितीय साहस का यश चारों ओर फैला दिया। सूर्य के समान तेरी शक्ति के तेज के सम्मुख शत्रुओं का तेज दिन के नक्षत्र के समान क्षीण दिखाई दिया। तू ने निर्भीक सिंह के समान मेवाड़ राज्य की रक्षा की ॥ ५ ॥

८०. रावत भीमसिंह चुण्डावत सलूम्बर और रावत अर्जुनसिंह चुण्डावत कुरावड़ [१]

गीत (बड़ा साणोर)

हदां चढ़ै दरखणाद कटकां भले हरामी,
अणि इक डंका बज बधै ईड़ ।
तखत उदिया नयर केम पलटै तिकां,
भीम अरजुन जिकां होय भीड़ ॥१॥

साम ध्रम अड़ग रख खेल खित्रवट सवल्,
हुआं दथ छ्ल दल् प्रबल् हाको ।
ठाम चत्र कोट अण ठेल किम कर ठले,
करै ज्यां नेल भत्रीज काको ॥२॥

धरा रछपाल् कांधाल् हरणै धणी,
निमख अजवाल् न कलंक नजर नेक ।
तखत राणा सथर राज आवे तिकां,
होवै भेलो जिकां सलूम्बर हेक ॥३॥

जोरवर थां जिसा हुवै चूण्डा जिके,
तिके रावत भलां मूछ ताणों ।
थेट कमसल रतन जाण उथापियो,
रूक बल् थापियो असल राणो ॥४॥

(रचयिता:- अज्ञात)

टिप्पणी.—१ यह गीत सलूम्बर के रावत भीमसिंह चुण्डावत और कुरावड़ के के रावत अर्जुनसिंह चुण्डावत की प्रशंसा में है। जिन्होंने वि० सं० १८२६ में माधवजी सिंधिया के उदयपुर घेरा डालने के समय नगर की रक्षा करने में बड़ी तत्परता प्रगट की थी, इस गीत में उसी का वर्णन है ।

हाथियों को विनष्ट करने वाला चुंडावत अगर महाराणा के आगे होता तो राणा को मार कर हाड़ा का सकुशल लौटना असंभव होता। दूसरों की भाँति वह (अर्जुनसिंह) जमीन की ओर दृष्टि नहीं करता बल्कि वीरों को मार कर स्वयं (भी वहीं) धराशायी होता ॥ ३ ॥

रास (गेहर) के डंडों रूपी तलवारों से युद्ध खेलता जिससे अनेक शत्रुओं की शारीरिक शक्ति नष्ट हो जाती। यदि उस युद्ध में केसरीसिंह का पुत्र अग्रगण्य होता तो राणा के लिये लिखी हुई विधाता की रेखा भी बदली जाती ॥ ४ ॥

८२. रावत अर्जुनसिंह चुण्डावत, कुरावड़ १

गीत (वड़ा साणोर)

मजा हीण अनभड़ हूँता चल विचल चित मरम,
कजा खत्रवट पड़ी नरम कांटै।
राण अड़सी कहै लज्जा तो सूं रहै,
अजा भुज ओड धर भार आंटै ॥ १ ॥

अटकै खार धर वेथ डगिया असत,
सार फाटै गयण मेल सांधौ।
धणी दाखै धमल टांड कज इला धुर,
केहरी तणा हव मांड कांधौ ॥ २ ॥

लखां दखणाद रा लगस आया लड़ण,
पयोनिध अगस मुनि जेम पीजे।
साम थापल कहै राख डगती समी,
हुआ कांधल जमी खत्रौ दीजे ॥ ३ ॥

महत, समरू फिरंग बले दिखणी मथ,
एता भागा समर पेस ऊंई ।
उदैपुर सहित धर सरब राखी अडग,
चमर छत्र तखत री लाज चूंडै ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- क्षात्रकुल के गौरव का पलड़ा नीचे झुकता देख महाराणा अरिसिंह का चित्त चलायमान हो गया और दूसरे सामंतों से निराश हो अर्जुनसिंह से कहने लगे कि मेवाड़ की स्वतंत्रता का भार तेरे भुजों पर है और मेरी लज्जा की रक्षा करने की शक्ति भी तुझ में ही है ॥ १ ॥

अरिसिंह की गद्दी-नशीनी से ईर्षा वश खिलाफ हो मेवाड़ के लिये खिलाफत करने में अन्य सामंत थे। वे विपक्षियों की ओर चले गये। इस पर अरिसिंह कहता है कि सभी ओर फटे हुए आकाश के थेगली लगाने वाला एक तू ही वीर दिखाई देता है। हे केसरीसिंह के पुत्र. देश भूमि के युद्ध-भार को कंधों पर उठा के गर्जने वाला वृषभ स्वरूप तू ही है ॥ २ ॥

दक्षिणियों की लाखों का सैन्य दल समुद्र युद्ध करने के लिये उमड़ पड़ा। जिसे अगस्त ऋषि की भांति शोषण करने में तू ही समर्थ है। स्वामी नियुक्त करने वाले हे दूसरे कांधल जैसे वीर, मेवाड़-भूमि (मेरे) पैरों नीचे से खिसकने वाली है। जिसे तू ही अपने बाहु-बल से रोक सकता है ॥ ३ ॥

'अन्य सामंतों ने खिलाफ होकर समरू अंग्रेज और दक्षिणियों द्वारा मेवाड़ पर आक्रमण करवाया। उस समय उदयपुर (राजधानी) सहित सब भूमि अडिग रख हे चुण्डा। तू ने सिंहासन (गद्दी) और छत्र-चँवर की लज्जा रख दी ॥ ४ ॥

८२. रावत अर्जुन सिंह, चूण्डावत, कुरावड़

गीत

पाखर ऊबरां चल चले पोहमी, रघुराउत्तण भ्रम ।
भुजां डंग तो आभ थांभे, अजा अकाश आम ॥ १ ॥
मींढगा नर राकल् गुड़िया, धरा धूकल् धांग ।
राण छल् उधारा रावत, तीख खाग नर्मांग ॥ २ ॥
चित्र गढ ओठम चूंडा, थिया हर वल थेट ।
सही मोखण ग्रहण राखा, सही संकट मेट ॥ ३ ॥
नरखिया भड़ सकल् नयणां, जीयां वेदल जंद ।
हेक तो भुज पर हीमत, नूर केहरी नंद ॥ ४ ॥
छत्री ग्रस रथ कलुण मुचियो, अमह थाट उचांड ।
धूज धजनड़ तंड धवला, मरद जूसर मांड ॥ ५ ॥
राड़ रा सोयण उधारा रावत, कैवियां हग कोप ।
मिसल खंडा धार वरसै, रघुत्र भंडा रोप ॥ ६ ॥
धरा चल् चल् मिलस घमचक, अचल बिरद अगोड़ ।
बाढ लल् रतनेस बीजा, नाढ जल् चीतोड़ ॥ ७ ॥
उजल् ते महाराणा ओटम, पाण पोरस पाज ।
आजरै अवराण अरजुन, राज रै भुज राज ॥ ८ ॥

(रचयिता:-नन्दलाल भाट)

भावार्थः-मेवाड़-भूमि पर शत्रु-सेना के आवागमन से चलायमान हो सभी उमराव (सामंत) महाराणा के प्रतिकूल होगये । हे अर्जुनसिंह डिगते हुए आकाश को रोकने वाले यह मेवाड़ का राज्य शासन तेरी भुजाओं पर ही अवलम्बित है ॥ १ ॥

इस देश के भू भाग को विशेष कलह पीड़ित देख सभी समान प्रतिष्ठित व्यक्ति युद्ध-भूमि से मुड़ गये। महाराणा की सहायता करने वाला साग्रह हाथ में तलवार लिये हुए हे वीर रावत! केवल तू ही दिखाई देता है ॥ २ ॥

प्रारंभ से ही चुण्डावत महाराणा की सेना के अग्रभाग में रह कर चित्तौड़ के लिये निरंतर ढाल स्वरूप बने रहे हैं। मेवाड़ के कष्ट को मिटाने के लिये युद्ध भूमि में बादशाहों को कई बार पकड़ कर छोड़ दिया उसी तरह आज भी इस कथन को सत्य करने वाला तू ही है ॥३॥

महाराणा कहते हैं कि हे केसरी सिंह के पुत्र। मैंने सभी शूर वीरों को अपने नेत्रों से देखा है, किंतु उनके हृदय साहस रखने वाले नहीं दिखाई देते, केवल तेरी ही मुख्य कांति दिखाई देती है ॥ ४ ॥

शत्रु-समूह रूपी कीचड़ में क्षात्र धर्म रूपी रथ फँसा हुआ है। हे वीर! घोड़े पर पाखर सजा कर वेग युक्त तलवार से उक्त कीचड़ को उथल पुथल कर! वृषभ स्कंध के सदृश तेरी भुजाओं में युद्ध भार उठाने और वीर हुंकार करते हुए उक्त रथ को बचाने वाला तू ही है ॥ ५ ॥

क्रुद्ध हो कलह उभार के शत्रुओं को युद्ध भूमि में नष्ट करने वाला तू ही वीर पुरुष है। हे वीर! रणांगण में तू तलवार की धार तथा अन्य शस्त्रों से शत्रुओं के सिर पर वर्षा की बौछार के समान झड़ी लगा कर अपना विजय-ध्वज स्थिर कर देता है ॥ ६ ॥

शत्रुओं के विषम श्वास से जमीन चलायमान होने लगी। लेकिन हे वीर! दूसरे रत्नसिंह के समान तू ने अपने कुल की अचल मर्यादा में रह शत्रुओं का विनाश कर चित्तौड़ दुर्ग को गौरवान्वित किया ॥ ७ ॥

शत्रु-रूपी समुद्र के उमड़ आने पर तू अपने हाथों की साहस रूपी पाल में दुश्मनों की शक्ति का आड़ बना रहा। हे अर्जुनसिंह, आज के समय में सावधानी का उपयोग कर मेवाड़-देश का राज्य तू ने अपनी भुजाओं पर ही अवलंबित रखा है ॥ ८ ॥

८४. रावत अर्जुनसिंह चुण्डावत, कुरावड़

गीत (बड़ा साणोर)

कहर झड़ै चकमक चखां चांपिया नाग कल,
अरि चड़ै कांपिया गिरां ओखा।
अजन रा ठेट हूँ अलल जुध ऊपरै,
गढ़ पड़ै फेट हू जलल गोखां ॥ १ ॥

रोस चूण्डै चखां घटक अहराव रुख,
मटक तज दुसह लै गिरंद मागां।
करे आधा तुरी कहै भागा कटक,
अथागा ढहै गढ़ फटक आगां ॥ २ ॥

वीर सीसोद भभकै चसम भालां विख,
चढण अरि तकै गिर उवर चहलै।
तेज दाभै तुरंग हकै केहर तणो,
दुरंग भाजै धकै महल दहलै ॥ ३ ॥

महल खल जकै सोचे घड़ी घड़ी मह,
तकै नहँ करै सुघड़ी घड़ी तीज।
गड़ गड़ी सुथर रावत रढां गहलरी,
वाग ऊपड़ी पड़ी गढ़ां सर वीज ॥ ४ ॥

सत्र रयण हरांची चोट सुण खाप संक,
जाय गिर ओट धर न कूं जमिया।
एकल इक चोट अस वाग ऊपाड़तां,
मोट खग नाग दल कोट भमिया ॥ ५ ॥

तोड़ खल जमाचो आच लग तालियां,
ईस गण नाच धम धमाचो ओप।
गजब री तमाचों अजब री थकां गण,
कना सर त्रकुट घर रमाचो काप ॥ ६ ॥

(रचियता:- अज्ञात)

भावार्थ:- हे अर्जुनसिंह, तूं युद्धारंभ के समय अश्वारोही होकर रणांगण में प्रविष्ट होता है, उस समय श्याम सर्प क्रोध में जिस प्रकार अपनी पूंछ दबाता है और नेत्रों में क्रोध भरता है उसी प्रकार तूं भी अरुण-नैत्र किये हुए, प्रति पक्षियों पर तलवारों की झड़ी लगा देता है। जिस से दोनों ओर की तलवारों के घर्षण से अग्नि की ज्वालाएँ उत्पन्न होने लगती हैं तथा शत्रुगण इस भयंकर स्थिति से त्राण पाने हेतु विजन पर्वत-प्रदेश में भाग जाते हैं। शत्रुओं के दुर्भेद्य दुर्गों को तूँ अपने घोड़ों की टापों से झरोखों सहित विध्वंस कर देता है।

हे चुण्डावत, नेत्रो में क्रोध की ज्वाला भरे हुए सर्प के समान, तुझे देख कर शत्रु भीरु बन कर पर्वतों में आश्रय लेते हैं। जब तू रणांगण में अश्वारोही-होकर युद्ध में प्रवृत होता है तब शत्रुओं की सेना अपने प्राणों की रक्षा करने हेतु यत्रतत्र भाग जाती है। फिर तू निशङ्क होकर घोड़ों के चरणों से दुर्ग के एक एक पत्थर को उखाड़ देता है ॥ २ ॥

हे केसरसिंह के सिशोदिया पुत्र, तेरे नेत्रों में क्रोध रूपी बिजली ज्वालाओं को देख कर, शत्रुओं के हृदय कम्पित हो उठते हैं। जिससे शत्रु भाग कर पर्वतों का आश्रय लेने लगते हैं। जिस प्रकार ग्रीष्म में धरती पर चरण जलने के कारण मनुष्यगण जल्दी-जल्दी चरण उठाते हैं, उसी प्रकार तेरे घोड़ों के चरणों की चपलता है। इस प्रकार की चपल गति वाले घोड़ों को आगे बढ़ाकर तू दुर्ग की दीवारों को ध्वंस करता है। ऐसी भयानक स्थिति में नारियों के हृदय धक् धक् करने लग जाते है ॥ ३ ॥

हे रावत, तेरे भयंकर आक्रमण से क्षण-क्षण विचार करती हुई शत्रुओं की स्त्रियां, प्रतिज्ञा करती हैं जिस क्षण में कि वे आनन्द और शांति से तीज का उत्सव मना सकें। हे रावत, तू युद्ध में उन्मत्त होकर, शत्रुओं के विरुद्ध कूच करने में विलम्ब नहीं कर-अश्वारोही हो घोड़ों की बाग उठाता है। तत् पश्चात् तुरन्त ही शत्रुओं के दुर्ग पर आक्रमण कर देता है। तेरे आक्रमण से दुर्ग की दीवारें इस प्रकार क्षत-विक्षत होती हैं मानो आकाश से बिजली गिरी हो ॥ ४ ॥

हे योद्धा, युद्ध-भूमि में तेरे तलवार की ध्वनि सुनकर शत्रुओं के हृदय कम्पित हो उठते हैं और पलायन कर विजन पर्वत में आश्रय लेते हैं। तू अपने घोड़े की बाग उठाये हुए स्वयं ही प्रवेश कर खड्ग-प्रहार से शत्रुओं की हाथियों सहित सेना को छिन्न भिन्न कर देता है तथा दुर्ग को भी ध्वंस कर देता है ॥ ५ ॥

हे रावत, तेरे रणांगण में, शंकर अपने गणों सहित नृत्य करते हैं। जिससे पृथ्वी कम्पित होती है। तेरा क्रोध विलक्षण प्रकार का दृष्टि गोचर होता है तू शत्रुओं को नष्ट करने में यमराज जैसा पराक्रमी है। जिस प्रकार रावण की लंका के दुर्गों पर श्री रामचन्द्रजी का आतंक छाया हुआ था, उसी प्रकार तेरा आतंक शत्रुओं के दुर्ग पर छाया हुआ है ॥६॥

८५. रावत प्रतापसिंह चुण्डावत्त, आमेट

गीत— (सुपंख)

जंगां जांगी बजे जुँझाऊ पनंग सीस धूणै जेम।
अभंगां बानैत आगां जोस में अमाय ॥
धारै खागां उनागां उमंगा आप रंगां धायो।
पमंगा ऊपड़ी बागां ऊ आयौ प्रताप ॥१॥

घूवै झाल़ अराबां प्रचंडां गोल़ गैणा ढंकै ।
रणांके न भेरी डंड मंडै चंडी रास ॥
खलां गैच भेलिया भीम रा गजां आडा खंडां ।
बीजै मान जाडा थंडां भेलिया अहास ॥२॥

अहै धारा दुधार करारां बाँणा धारा बूठै ।
है तुण्ड प्रहारां झोणा धारां भरै होद ॥
मार-मार उच्चारां अपारां पाड़ क्रोध मचे ।
सारधारां रचै राड़ गनीमां सीसोद ॥३॥

अंबाकां अहाकां भालां भचाकां अयंडां तुण्डां ।
हुवै वीर हाकां डाकां हैरू ठहै हुलास ॥
रंगां छोह छाकां जागी वगां ग्रेम पागी रंभा ।
तेराकां रचाकां वागी व लागी अ यास ॥४॥

चलो वली बीजलां प्रहारां चक्र वेग वाढा ।
मंगलां तड़च्छै मूंडां ओप झुण्डा मक्र ॥
रुद्रहारां रचायौ जाहरां रैणा ऊभै राही ।
तुण्डहरा नाहरां मचायो गाढ चक्र ॥५॥

जगा रा वरदां संग तेड़ीस उच्चाला जोस ।
मरदां अचाला पाव सेस धू मंडीस ॥
भ्रूॅ जूझ वहा सैन सतारा नाथ रा भागा ।
पतारा हाथ रा वागा उनागा पांडीस ॥६॥

उवड़ैत कड़ालां ग्रनाला हल्ले खलक्कै सोण वाला ।
अटक्कै छड़ालां भुजां गैणागां अड़ेत ॥
गा गनीम झंका पड़ै सतारै पुहूँती गल्लां ।
वांका नेत वाधा खेत फता रै वानैत ॥७॥

चूण्डा वाला सगाला वरदां हद्दां नीर चाड़ै ।
रिमा वीर चाला क'नता धू धड़ै रहेत ॥
झाड़े करम्माला तोय ग्रांवाला नीसाण झंडा ।
सूंडाला ले आयो मेवा डंबरां सहेत ॥८॥

फौजरा हरोलां भाई फताचा हवोला फव्वै ।
झूल चंडां रीझाय जनेवां घूवे झाट ॥
दाधा लोहां ताप वीर मार हट्टां थाट दव्वै ।
प्रताप अखाड़ा थी गरज्जै मेद पाट ॥६॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थः-नगारे बजने लगे; युद्ध भूमि में अपराजित योद्धा एकत्रित हुए। जिनके भार से शेष नाग का मस्तक हिलने लगा। खुली तलवार लेकर मन में हर्षित होता हुआ घोड़े की वाग उठाकर (वह) प्रतापसिंह दौड़ आया ॥ १ ॥

तोपों की प्रचंड ज्वाला व गोलों की गर्दी से आकाश छिप गया। युद्ध-भूमि में रण भेरी घुराती हुई चण्डिका ने रास की रचना शुरु की। दूसरे मानसिंह के समान जैसे तू ने सेना के तगड़े समूह में अपने

टिप्पणीः-यह रावत फतहसिंह का पुत्र और मानसिंह का पौत्र था। इसने महाराणा अरिसिंह के समय टोपल मगरी के युद्ध में भाग लिया था ॥

घोड़े को प्रविष्ट किया और शत्रुओं के तिरछे टुकड़े कर (उन्हें) भीम के हाथियों में मिला दिया ॥ २ ॥

द्रुतगति से तलवार, पराक्रम पूर्ण बाणों की बौछार और घोड़ों के मुँह पर लगाई लोहे की सूंडों के प्रहार द्वारा प्रवाहित रक्त धारा से युद्ध-स्थल हौजों की तरह भर गया। हे क्रुद्ध सिशोदिया! मार मार शब्द का उच्चारण करते हुए तू ने अपनी तलवार की चोटों से कायर शत्रुओं को धराशाई कर दिया ॥ ३ ॥

भालों और घोड़ों के लगाई हुई लोहे की सूण्डों के वार से एवं जोशीले नगारों की भयंकर आवाज होने लगी। आकाश की ओर उठी हुई तलवारों की मुठभेड़ से आकाश झंकृत हो उठा, जिसे सुन कर बावन वीर हुंक्कार करते हुए डाक डमरु बजाते हुए हर्षित होने लगे और इन जोशीले वीरों को घावों से पूर्ण रूप छके हुए देख कर अप्सराएँ वरण करने के लिये स्नेह से विह्वल हो गईं ॥ ४ ॥

लगातार चक्र जैसे वेग युक्त तलवारों से हाथियों पर वार होने लगे; जिससे हाथियों की सूंडें कट कर मच्छियों के झुण्ड की तरह भूमि पर तड़फने लगी। शंकर का हार बनाने के लिये दोनों ओर से खुले मैदान में युद्ध आरम्भ किया। जिससे सिंह रूपी चुण्डा के पौत्र ने राहु के चक्र तुल्य तलवार का वेग आरम्भ किया ॥ ५ ॥

जगतसिंह के विरुदों से सुशोभित रुद्र स्वरूपी जोश में आकर उबलते हुए अपने वीर साथियों सहित युद्ध भूमि में शेष नाग के मस्तक पर (अडिग) पैर जमा दिये। उस युद्ध भूमि में रावत पत्ता की नग्गी तलवार बजने लगी। जिस से सतारा के स्वामी की लड़ती हुई सेना भ्रम में पड़ कर भागने लगी ॥ ६ ॥

शूर वीरों के हाथ में आकाश की ओर उठाये हुए भालों के घाव से, बख्तरों की कड़ियाँ गिरने लगीं और शत्रुओं के घावों से परनालों

की भाँति रक्त धारा बहने लगी। फतहसिंह के पुत्र बांके वीर ने विजय चिन्ह धारण कर युद्ध किया जिससे शत्रु साहस हीन हो गये। इसकी खबर सतारा तक पहुँच गई ॥ ७ ॥

हे रावत! तलवारों द्वारा शत्रु से भिड़ कर, शत्रुओं के नगारे, निशान, हाथी, राजचिन्ह (मेघाडम्बर) आदि तू विजय कर लाया। शत्रुओं के साथ निश्चय रूप से आतंक का व्यवहार करने वाले तू ने चूंडा के सब विरुदों पर बेहद गौरव चढ़ाया ॥ ८ ॥

सेना के अग्रभाग में रुचि रखते हुए विजय प्राप्ति की घोषणा कर दी, और तलवारों की विद्युत वेग के समान झड़ी लगाकर चामुण्डा के गिरोह को प्रसन्न कर दिया; शस्त्रों की जलन से जल कर मरहटों के समूह दब गये और हे प्रतापसिंह युद्ध विजय कर गर्जता हुआ तू मेवाड़ को लौटा ॥ ९ ॥

८६. रावत प्रतापसिंह चुण्डावत-जगावत, आमेट [1]

गीत (बड़ा साणोर)

गजर ऊगतां नेजां फरक्कै गैंवरां,
धोम चख अजर वजराग धवते।
पाथरे वरे जी हूँत हेकाद पंत,
रूक हद भेलिया एम रवते ॥ १ ॥

धाड़ झड़ बीजलां दोय वे वे वरंग,
चाढ चत्र कोटरी लड़ै चोजां।

टिप्पणी.—१—यह रावत फतहसिंह का पुत्र था। मेवाड़ में मरहठों द्वारा किये गये उपद्रवों के समय बेरजी—ताक पीर से युद्ध किया। उसकी वीरता इस गीत में उल्लिखित है।

धरा कज आंपणी लड़ै चूण्डों धणी,
फतारों सतारां तणी फौजां ॥ २ ॥

आड वारा दिये मार कण ऊपरा,
मर हटां तणी लग सेन माथै।
माई सुरातणां तें लियो मनोहर,
सारां तद वीर रां हेक साथै ॥ ३ ॥

रसाला, तोप सुखपाल, जाडाग्सत,
लोग कर कलह कज एम लीधा।
दोय हाथी पति खोस दखणादरा,
कैलपुर नाथ रैं नजर कीधा ॥ ४ ॥

(रचयिता:—अज्ञात)

भावार्थ:— प्रातः काल होते ही हाथियों पर झंडे लहराने लगे। वीरों के नेत्रों में क्रोधाग्नि सुलग रही थी। जोश पूर्ण वाद्य यंत्रों के साथ सिंधु राग प्रारंभ हुआ। इस प्रकार युद्धारंभ कर रावत ने अपने वीर साथियों एवं अन्य अधिपतियों के साथ वेरजी नामक शत्रु से भिड़ने के लिये युद्ध स्थल में प्रवेश किया ॥ १ ॥

फतहसिंह के पुत्र ने अपनी भूमि के लिये सितारा की फौज से युद्ध छेड़ा और चित्तौड़ दुर्ग पर शत्रुओं की चढ़ाई से उत्साहित योद्धाओं ने अपनी तलवारों से शत्रुओं के दो दो टुकड़े कर दिये ॥ २ ॥

मरहठों की सेना के (रण बांकुरे) योद्धाओं के तिरछे घाव लगाकर हे मानसिंह के पौत्र, तूं ने अपने कौशल से विजय प्राप्त कर विरोधी वीरों के राज चिन्हों (लवाजमों) को एक साथ ही लेलिया ॥ ३ ॥

रिसाला, तोपें, तापजाम, रसद, दो गजपति (सामंत) इत्यादि इस युद्ध में दक्षिणियों से छीन कर महाराणा के नजर किये ॥ ४ ॥

८७. रावत प्रताप सिंह चुण्डावत आमेट

गीत (छोटा साणौर)

साखां तिण वार चंद्र धर सूरज ।
घर लाखां अद चढै घणा ॥
आखा दखण हूंत आफलियौ ।
तूं ताखा फतमाल तणा ॥ १ ॥

छुण झालां करंगा फूंकारां ।
अजवाला मण वरद अखै ॥
खग चाला तोसूं कुण खेलै ।
पातल काला नाग पखै ॥ २ ॥

कसिया जरद धर्णी धर कारण ।
जस रसिया रूकां जम राण ॥
खसिया जता आय खल खागां ।
अहि चूण्डै डसिया आराण ॥ ३ ॥

हद सोभा तो चढै मानहर ।
झलंयां कड़ी कड़ी रण झूल ॥
खाधा अरी चमू खल खागां ।
मंत्र जड़ी न लागौ मूल ॥ ४ ॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थः—सर्प के सदृश विष वाले हे फतहसिंह के पुत्र, तू ने दक्षिणियों से युद्ध कर लावा के कुल को गौरवान्वित किया, जिसकी साक्षी पृथ्वी पर सूर्यचंद्र दे रहा है।

हे मणिधर सर्प के सदृश शैली ग्रहण करने वाले, तू कुल को उज्ज्वल करने के लिये सर्प के फण स्वरूपी तलवार की फूंक (पवन गति) से शत्रुओं को नष्ट करता है। काले सर्प के समान हे प्रताप ! तुझ आतंककारी के सामने तलवार से छेड़ छाड़ करने वाला कोई नहीं है। न तेरा कोई सामना ही कर सकता है॥

हे यमराज का रूप धारण कर तलवार चलाने वाले वीर ! तू तलवार चलाकर विजय यश का इच्छुक रहता है, स्वामी की भूमि की रक्षार्थ बख्तर कसे रहता है और जितने शत्रु सामने आवें उन्हें अपनी सर्पिणी रूपी तलवार से काट कर हे चुण्डा ! तू धराशाई कर देता है॥

हे मानसिंह के पुत्र ! रणाम्बर (कवचादि की कड़ियों की झिल मिलाहट) से तू सीमा तीत (हद दर्जे का) शोभित हो रहा है। तू ने सारी शत्रु सेना को अपनी सर्प रूपी तलवार से खा डाली। जिसके जड़ी बूटी और मंत्र कुछ नहीं लगे (कोई उपचार नहीं लग सका)॥

८८. रावत प्रतापसिंह चुण्डावत, आमेट

गीत—(सुपंख)

आछे नेक आंटे गनीमां हू भेलिया निराट ऊखा।
आछी खाई रूखां केक झेलिया अताप॥
ऊली अणी पाछी देखी काथे खाग ऊखेलिया।
पैली अणी माथै काछी भेलिया प्रताप॥ १॥

धूपटै गनीमां धरा गढ़ा व्है न तारा ढोल।
कानां सुणी फना रैं खतारा बोल केम॥

सतारा छात रा दलां ऊपरा अघायो मीह।
जोध आयो ऊलका पातरा नाग जेम ॥ २ ॥
मूंछां रा वलाका दीधां सींसोद गनीमां माथे।
धूर हास तमासै मुनिन्द्र रीधा धीर ॥
म्यान हूँ उखेलताँई कीधा खाग नेढी मणै।
वैढी मणै मेलताँई कीधा महा वीर ॥ ३ ॥
मेदपाट तणी कूक सांभले विजाई मान।
वान आयो अभूख उपाटां जेण वार ॥
मरेटां दने उ भूख करंतो जनेवां मूढै।
एक घाव रोई टक जनेऊ उतार ॥ ४ ॥
नारा-जा आराण झली बीजली सिलाव मेजां।
दुहूँ फौजां उलली दारणा मली दीठ ॥
लड़ाका री सोद आडी घोड़े धाड़ि धाख लागी।
राणी चौखे सीसोदां गनीमां ञागी रीठ ॥ ५ ॥
सूरां पूर झाटा माची अकूटां उठावे संभू—
सांची तान लावै रंभा मचावै संगीत ॥
रीखाराज वानै वीणा प्रवीण हर खारतौ।
गावै सूखा चोसटी अंगौठी रूखां गीत ॥ ६ ॥
काल वाली चरखी असाध झूठौ नाग कीना।
रूठौ जिसौ झूठौ खत्री धखै उरां रीस ॥
एक मूठौ महा रथी वाई कराल तो आगि।
सायिकां अरोड़े टूटो आध रती सीस ॥ ७ ॥

सड़फ्फे बीज़ जलां हाम मोहा वड़फ्फे सूर ।
सीसहार झड़फ्फै पड़क्खै नथी संभ ॥
ग्रीधणी हड़फ्फै पलां सामली हड़फ्फै गूद ।
झाड कंई अड़फ्फै पड़फ्फै अग रंभ ॥ ८ ॥

के दिया न दीठ वैठ नागड़ै जोगिन्द्र केही,
मही लंका आवा घड़ै दीठ वंका सूर ॥
दुवासूं पागड़ै लग्गौ नूपरां चलावैं दोहूँ-
गहड्डी अग ऊपरां झागड़े परी जे हूर ॥ ६ ॥

गोलां तणी मार लोप तोपरे जंभीरे गयो ।
आहड़ेस धारी न को वोलां तणी आप ॥
अहुँ लोकां मझारैं औ सांप पूगी रोला तणी ताप ।
ताप गीर हिये पूगी गोलां तणी ताप ॥१०॥

उथापै गनीमां थाण सूरां सीस थाप ऊभौ ।
जोधपुरा काप ऊभौ भीम झाड़ झोड़ ॥
अरी खाप थाप ऊभौ करी खाया थाप आवै ।
आज री जगाणी खांपां न मावे अरोड़ ॥११॥

[रचयिता:- वद्री दान खड़िया]

भावार्थ:- सैनिकों ने शत्रुओं से अच्छी तरह लोहा लिया-सामना किया। उनके आतंक से कितने ही वीर शत्रुओं ने उदास हो कर छटपटाते हुए शस्त्र प्रहार सहे और पीछे हटने लगे। इस सेना को पीछी हटती देख आतुरता से तलवार का वार करने के लिये प्रतापसिंह ने अपने घोड़े को शत्रु दल में घुसा दिया ॥ १ ॥

राँण दल़ पलटतां सुथर झालो रहे।
भांण अस रोक आराण भाल़ै ॥
राज रै कंठ भूखाण उण चौसरां।
रंभ चौसरन को सीस गाल़ै ॥ २ ॥

विधाता नाथ वण लेख अवरी वरी।
बिया राघव करी अचल़ वातां ॥
हार ग्रीवां तणा देख झाला हिये।
हार वारँग लियां रही हातां ॥ ३ ॥

करै मनुहार मुख हूंत इण विध कहै।
आव रथ भीच दीवाण वाला़ ॥
पोहप वर माल घाली न को अपछरा
मोतियां तणी गल़ देखमाला़ ॥ ४ ॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:- हे वीर कल्याण सिंह ! मरहठों के साथ युद्ध भूमि में अनेकों वीर शिरोमणि युद्ध करते हुए परमात्मा की दिव्य ज्योति में मिल गये। परन्तु उस समय तेरी मुख-कांति कमल पुष्प के समान दृष्टि गोचर हो रही थी; किंतु हे वीर ! स्वर्ग की अप्सराएँ तेरे गले में मोतियों की माला देख कर तुझे वरण करने हेतु वरमाला तेरे गले में नहीं डाल सकी ॥

हे झाला ! महाराणा की सेना के चरण रण भूमि से डिगने लगे, उस समय तू रणस्थल में बड़े साहस से अपने स्थान पर दृढ़ रहा। इस प्रकार के तेरे शौर्य को देख सूर्य अपना रथ रोक युद्ध क्रीड़ा देखने लगा। किंतु तेरे गले में मोतियों की माला देख कर अप्सराएँ वर-मालाएँ नहीं पहना सकीं ॥

हे राघव देव के समान वीर ! तू ने राघव देव के रण-कौशल को अमर कर दिया। ज्ञात होता है कि विधाता ने अप्सराओं के भाग्य में विवाह नहीं लिखा था क्यों कि कल्याणसिंह के गले में मोतियों की माला देख अप्सराएँ वरमाला धारण नहीं करा सकीं और वर मालाएँ उनके हाथ में ही रह गईं ॥

अप्सराएँ केवल मात्र अपने मुख से यह शब्द कह कर आग्रह करने लगीं कि "हे कल्याण सिंह ! तू विमान में बैठ कर हमारे साथ विहार कर किंतु कल्याणसिंह के गले में मोतियों की माला देख कर अप्सराएँ विवश हो गईं क्योंकि मोती और अप्सराएँ सहोदर होने के कारण अप्सराएँ उनके साथ विवाह नहीं कर सकती थीं ॥

९०. झाला राज राघव देव (द्वितीय), देलवाड़ा

गीत (वड़ा साणोर)

अचल नव लाख रे जुध देखि धायो अरक।
ईस धायाँ लहै सीस अण चूक ॥
धड़चलो धड़ां वेरी हरां न धायो।
राज राघव तणो अघायो रूक ॥१॥

तमासा सिध पईंखे समर मार तुण्ड।
उमापत सधप तोड़े कमल आप ॥
वड वड़ां सत्रां अणियाँ सधप विहंडतो।
मान तण तणो खग अधप अण माप ॥२॥

प्रचण्ड धट महारिण पेखे पुरस पतंग।
नागका कमट पूरण धरण नाग ॥
अलघलां सपूरण खलां आरोगतो।
खिवे कड़तलां करां अपूरण खाग ॥३॥

बूकड़ा बटक गूथा गटक लिये वल।
सह कटक आचमे गजां सहतो ॥
वधापै जेम दहतो समंद वाड़ नल।
वीर खग न धापे रिमा वहतो ॥ ४ ॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- हे राघवदेव ! युद्ध भूमि में अडिग रहने वाले नव लक्ष सैनिक वीरों के साथ होने वाले तेरे युद्ध को सूर्य देख कर व शंकर मस्तक पाकर तृप्त हो गये। हे वीर ! शत्रु अंगों को जख्मी करता हुआ तेरा खड्ग तृप्त नहीं हुआ।

तेरे युद्ध कोतूहल को नारद व सूर्य देख देख कर और उमापति (शंकर) ने प्रति पक्षियों के मस्तकों को तोड़ते हुए अपनी इच्छा पूर्ण करली। फिर भी हे मानसिंह के पुत्र ! बड़े बड़े विरोधी वीरों पर वार करता हुआ तेरा खड्ग तो तृप्ति रहित ही बना रहा।

तेरे साथ शत्रुओं के विशाल समूह का भयंकर युद्ध अवलोकन करता हुआ और सर्प को धारण करने वाले (शंकर) ने बड़े बड़े योद्धाओं के मस्तक पा कर अपनी क्षुधा शान्त करली। किंतु हे झाला ! तेरे हाथ से विरोधी दलों को नष्ट करते हुए (तेरे) खड्ग के हृदय में शान्ति नहीं हुई।

प्रति पक्षियों के सैनिक वीरों और उनके हाथियों के कलेजों के टुकड़े टुकड़े कर उनके रक्त व मांस का आहार कर तेरे खड्ग ने आचमन कर लिया। फिर भी हे वीर ! विरोधियों को निर्मूल करते हुए तेरे खड्ग के हृदय में बड़वाग्नि की ज्वाला के सदृश क्षुधा की अशान्ति बढ़ती ही रही है।

९१. राजा बहादुर गोपाल दास चुण्डावत, करेड़ा

गीत (छोटा साणौर)

राखि गोपाल मरण ग्रब रूड़ा,
लेख अचड़ चहुँ जुगां लगे ॥
पट हथ कमल भुजे प्रतमाली।
परट पाण आछटी पगे ॥ १ ॥

सुर नर अचरजियां सीसोदा !
थोबे अरक रथ थकत थियो ॥
कर कुंजर सिर रोप कटारी।
क्रमै कटारी भार कियौ ॥ २ ॥

साच कलह दाखे दूदा सुत—
मने साच सुर सुयण मझार ॥
थल त्रिजड़ी कुंभाथल हाथे,
ठली चलणौ थाट विदार ॥ ३ ॥

कलह लंक—कुरखेत पछै कर।
दो मझि धिन गोपाल दुझाढ ॥
मदझर सिर कर मांडे मारी,
जसारा तड़ियल जमदाढ ॥ ४ ॥

टिप्पणी:—यह देवगढ़ के रावत जसवंत सिंह का छोटा पुत्र था, महाराणा अरिसिंह के समय रावत जसवंतसिंह जयपुर जाकर रहने लगा था। वहाँ उसको किसी वीरता के उच्च कार्य के कारण राजा बहादुर की उपाधि मिली। इसके वंशधर करेड़े की जागीर में है। उपरोक्त गीत में इसके द्वारा कटारी से हाथी मारने का वर्णन है।

कसन नहँ लगो सिंघ कलोधर।
अहवि घाव मनाड़ि ईसो ॥
गड़ो उपाड़ न आवे गेमर।
दूजा ही गोपाल दिसो ॥ ५ ॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:- हे गोपाल दास ! तुमने मृत्यु प्राप्ति के लिये अच्छा शुभ दिन प्राप्त किया। तुमने अपने भुज बल से हाथी के मस्तक पर कटारी का वार करके इस बात को युगों तक अमर करदी ॥ १ ॥

हे सिसोदिया ! तू ने अपने बाहू बल से हाथी के मस्तक पर कटारी का प्रवेश किया; तेरी इस वीरता को देखने के लिये आकाश में सूर्य अपना रथ रोक कर देखने लगा और देवता गण तथा मनुष्य आश्चर्य करने लगे ॥ २ ॥

हे दूदा के वंशज ! अब तक इस प्रकार के युद्ध की केवल कहावत ही चलती थी पर तुमने इसे पृथ्वीपर यथार्थ कर दिखाई और तू ने अपने छल से हाथी के दुर्दम कुम्भस्थल को कटारी की पैनी नौक से विदीर्ण किया ॥ ३ ॥

हे गोपालदास ! लंका तथा कुरुक्षेत्र के बाद इनसे भी महत्वपूर्ण कार्य तू ने कर दिया। हे जसवंत सिंह। मदोन्मत्त हाथी के सिर पर बिजली के समान कटारी का वार कर तू ने उनसे भी अधिक यशस्वी कार्य किया ॥ ४ ॥

हे गोपालदास ! तू ने अपने सिंह के कुल को धारण कर उस पर कलंक नहीं लगने दिया; तथा ऐसे भयंकर युद्धों में इस प्रकार आघातों से तू ने यह भी समझा दिया कि फिर कभी वह हाथी सिर उठा कर तेरे व किसी के भी सामने नहीं आ सके ॥ ५ ॥

९२. राजा बहादुर गोपाल दास चुण्डायत, करेड़ा १

गीत (छोटा साणोर)

चढ़ियौ जस-कलस आदि लग चूण्डा !
पै गज घाट गिलण गोपाल ॥
दाणव, देव, मानव कोय दाखो ।
पग सूं गज हिण तो ग्रित माल ॥१॥

होयतां कलह चार जुग हुआ ।
असी अचड़ नहँ कीध अडूर ॥
सु जड़ी दूदा सुत जिम पग सूं ।
सिंधुर हयो न किण ही सूर ॥२॥

राघव पछै चूंड हर राखी ।
इवड़ी अचड़ जुगां अनिसंध ॥
मारियौ चलण कटारी मांडे ।
मुड़ियौ वल छंडे मद गंध ॥३॥

कग्गे अ वसि होये वसि कीधी ।
गज दल वाव वही गज आव ॥
पग गोपाल जड़ाली परठै ।
पड़ियौ हसती मरण परि आव ॥४॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थः- हे चुण्डायत गोपालसिंह ! तू ने पैर से कटारी चलाकर हाथी मार किया । जिससे तेरे यश ने पूर्वजों के यश पर कलश का स्थान ग्रहण किया । देवता और राक्षसों ने कटारी पैर में पकड़ कर हाथी को मारने के लिये नहीं चलाई ॥

युद्ध होते हुए चार युग बीत गये किंतु ऐसी स्थिर (अमर) रहने वाली वीरता किन्ही अन्य वीरों ने नहीं की। दूदा के पुत्र की भाँति पैर द्वारा कटारी से हाथी को किसी योद्धा ने नहीं मारा ॥

राघव देव के पश्चात् युगों तक प्रचलित रहने जैसी वीरता चुण्डा के पौत्र ने ही की। उसके पैर की कटारी के वार से रक्त रंजित हाथी साहस हीन हो गिर पड़ा ॥

हाथ से न चला कर भी हाथ ही से चलाई गई हो इस प्रकार कुशलता से वे गोपाल सिंह ! तू ने पैर से कटरी का वार कर हाथी को गिरा दिया ॥

६२. राव सवाई केशवदास परमार, बिजोलियां

गीत—(सु पंख)

जळोमेव्हिया भड़ज्जां भड़ां करे हलो महा जोध,
 टलो दे दोखियां सीस वजे वीर तास।
  भूपती देस रा सारा पर देसी भाखे भलो,
   दूठ खागां पाण कल्लो लीधो केसोदास ॥१॥

धुबे नाळ अराबां चरक्खां बोम गोम धूजे,
 जंगां जेत नारां सदा करे खलां जेर।
  नेत बंध गाढे राव अरीचो गमायो नास,
   असी रीत तेगां जोर जमायो आसेर ॥२॥

टिप्पणी:—१—राव केशवदास, परमार राव शुभ करण का पुत्र था। मेवाड़ के महाराणाओं की ओर से दक्षिण में शाही सेना के पक्ष में इसने युद्ध किया और अपनी बहादुरी का परिचय दिया।

खुले हास नारदां तमासा भाण रथां खंचे,
तड़च्छै सतारा दलां हाकलै तुरंग।
टंकारां धानंखां बजे सत्रां घड़ां करे टूका,
दूजे मान लीधौ सकां गैजूह दुरंग ॥३॥
सोभाग सुजाव चाढ पुंआर उदार सोभा,
गोखां हेट लागा मद्दां करीजे अग्राज।
सारा छत्र धार्यां राजा राण दीधी सुरां,
राजोई आथाण भूरा क्रोड़ जुगां राज ॥४॥
(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:- हे केशवदास, तूने तेरी सेनाओं का कुशलता से संगठन कर शत्रु-पक्ष के अनेक योद्धाओं को परास्त कर दिया। तूने अश्वारोही होकर रणभेरी बजाई और भयंकर युद्ध किया। मानो तू साक्षात काल के समान ही शत्रुओं का संहार कर रहा था। इस प्रकार तूने दुर्ग पर अधिकार प्राप्त कर लिया। जिससे तेरा यश देश विदेशों में फैल गया ॥ १ ॥

तोप के चरक (तोपों से शत्रु सेना पर प्रहार करते समय निशाना बांधने का एक यंत्र विशेष जिससे तोप इधर उधर ऊपर नीचे फिराई जाती है) पर तोप को चढ़ाकर; उससे गोले छोड़ने से एवं बन्दूकों के भीषण शब्द से आकाश और धरती कम्पित होने लगी। हे योद्धा ! तूने जब २ युद्ध किया तब शत्रुओं को आक्रमण के पूर्व ही भयभीत कर दिया इस प्रकार तूने शत्रुपक्ष के गौरवांवित नाम को अपनी विजय से तथा विजय चिन्ह बांध कर इस प्रकार तलवार के बल से नष्ट कर दिया अपने दुर्ग पर बड़ी कुशलता से अधिकार प्राप्त किया ॥ २ ॥

हे वीर, तेरे इस भयंकर युद्ध को देखने के लिये सूर्य ने अपना रथ रोक लिया और नारद को हँसी छूट गई। उस समय अश्वारोही

होकर सत्ता की सेना पर तूने आक्रमण किया। जिससे सैनिक वीर धराशायी होकर छटपटाने लगे। हे मानसिंह के समान वीर, तू ने गज-समूह पर आक्रमण कर दुर्ग पर आधिपत्य स्थापित कर दिया ॥ ३ ॥

हे परमार सौभाग्यसिंह के पुत्र, तेरी रणविजय की कीर्ति देश देशान्तरों में व्याप्त होगई। तेरे राज प्रसादों के आंगन में हाथी गर्जना कर विजयनाद करने लगे। इस प्रकार की विजय से अन्य राजाओं तथा महाराणाओं ने तुझे राजा' की उपाधि से विभूषित किया हो। हे परमार तू इस उपाधि से विभूषित रह कर चिरायु हो ॥ ४ ॥

६४. रावत अजीतसिंह सारगदेवोत, कानोड़[1]

गीत (वड़ां साणोर)

भरल तेज उडगाण अणी त्रिकटां भलक।
पांख घण बांण अत जेहर पायो ॥
मेहे दइवाण री धांस जवनां बीच।
अर्यां सर जांण बीजाण आयो ॥ १ ॥

जभ्भक अहराव फुण हूंत भालां अजर।
क्रोधवंत जटाधर नेत केहो ॥
प्रबल भुज धारियां प्रसण हूंत ऊपरा।
अजा री कूंत जमराण एहो ॥ २ ॥

---

[1]टिप्पणी—यह रावत जालिमसिंह का पुत्र था और महाराणा भीमसिंह के समय वि० सं० १८५६ में जालिमसिंह झाला ने अंबाजी इंगलिया के भाई बालेराव को महाराणा की कैद से छुडाने के लिये झाला जलिमसिंह (कोटा) ने चढाई की। चेजा की घाटी में महाराणा और जालिमसिंह झाला की सेना का मुकाबिला हुआ जिस में रावत अजीतसिंह घायल हुआ।

बांण पाराथतणौ जांण वीरोध रो ।
विखम थट रोद रोकियां बांसौ ॥
जबर भुजधारियां हणू बल जोध रो ।
धमक भुज धारियां अरुण धांसौ ॥ ३ ॥

जगाहर हूंत धक जांण वी जांण रो !
घाट रै समी कुण बाथ घालै ॥
राखणौ धरा रछपाल दीवाण रे ।
सेल अरियाण रै हियै सालै ॥ ४ ॥

(रचयिता -अज्ञात)

भावार्थः- शत्रुओं की सेना में तेजी से प्रखर प्रहार करने वाले भाले को बनाते समय उस की नोक विप से बुझा दी थी। हे सारंग देव ! तेरा भाला मुगल शत्रुओं पर बिजली के समान चलता है।

क्रुद्ध सर्प के मुँह की विष युक्त फुङ्कार के समान और शंकर के तीसरे नेत्र के समान हे अजीतसिंह ! तेरी शक्तिशाली भूजाओं में लिया हुआ भाला यमराज के समान शत्रुओं पर चलने वाला है।

अर्जुन के बाण के समान विरोध बढ़ाने वाला और मुगलों के समूह का पीछा करने वाला तथा हे हनुमान के समान वीर सिसोदिया ! तेरे हाथ में यह रक्त-रंजित भाला शोभा देता है।

हे जगतसिंह के पौत्र ! तेरा भाला शत्रुओं पर आक्रमण करने में बिजली जैसी शक्ति रखने वाला है; किसका साहस है जो कांटेदार वृक्ष को भुजाओं में कसने की इच्छा करे। महाराणा की पृथ्वी की रक्षा के लिये तू ऐसा गुण युक्त भाला रखता है जो शत्रुओं के हृदय में प्रतिदिन खटकता रहता है।

९५. ठाकुर जैत्रसिंह राठौड़ मेड़तिया, बदनोर [1]

गीत (सुपंख)

प्याला पीवणां अनोखा दारू लेवणां हमेसां पांगी।
ईवणां सुपातां गुणां खालुवां अरूठ॥
मंडी राड़ न नीवणा दीवणा पनंग माथै।
दईवान जीवणा आजान बाह दूठ॥१॥

ईस रै उबारी गला आगै ही चित्तोड़ वारै।
साह री सिंधारी फौज पडै ईन साथ॥
राड़ ले उधारी यसो वला कारी जैत राज।
छोला घरां पूर भारी मेड़ता रो छात॥२॥

सगत्ताणी सांगाणी सतारां हूंत आणी सेना।
तुरक्काणी हिंद वाणी ऊप जैतसींग॥
ईसराणी चढ्यो पाणी सादाणी मेवाड़ आतां।
काश वाणी हींदवे जंगाणी तोल कीग॥३॥

दावा गिरां हीरदां जे ओ गाजे बंदूकां दारू।
जगायौ कंठीर छाजे तराजे जोधा दार॥
जीवणां गराजे राजे सादै देह भोगे जमी।
अड़स्सी नवाजे राजे ईसरा औतार॥४॥

(रचयिताः-अज्ञात)

---

[1] टिप्पणी:- यह बदनोर के ठाकुर अक्षयसिंह का पुत्र था और महाराणा भीमसिंह के समय सिंधिया के युद्ध के अवसर पर आंबा इंगलिया और लकवा दादा के बीच मेवाड़ में लड़ाइयाँ हुई उस समय यह लकवा के पक्ष में रह कर लड़ा था।

भावार्थः- हे जैत्रसिंह ! तू विचित्र प्रकार के शराब के प्याले पीकर प्रतिदिन यश प्राप्त करता है और कवियों के गुणों का सम्मान कर शत्रुओं पर रुष्ट होता है। युद्धारंभ के समय भयभीत न होकर तू शेषनाग के सिर पर अविचल पैर रखने वाला है। हे दीवान ! तू लंबी भुजाओं वाला वीर दिखाई देता है तू चिरायु रह ॥

चित्तौड़ के पूर्व युद्ध में तुम्हारे पूर्वज ईश्वरदास ने भी बादशाह की सेना का संहार कर और स्वयं वीर गति प्राप्त कर अपने यश को अमर कर दिया था। हे मेड़ता निवासी जैत्रसिंह ! तू युद्ध के लिये पूर्ण उन्मत्त हो युद्ध मोल लेने वाला शूर वीर है ॥

शक्तावत और सांगावत जब सतारे की सेना को मेवाड़ में लाये उस समय हे ईश्वरदास के वंशज ! हिंदू और मुसलमान दोनों जातियों ने मेवाड़ में आने के पश्चात् इस युद्ध में हिन्दू-सूर्य की सहायता के लिये तुमने अपनी भुजाओं पर युद्ध भार तोल लिया—उठा लिया ॥

हे वीर ! सोये हुए सिंह के जागने के समान और भभकते हुए बारूद के समान तुम्हारा शौर्य शत्रुओं के हृदय को छेद कर जलाने वाला है। तेरी गर्जना से और तेरे मेवाड़ में रहने से राणा अरिसिंह साधारण रूप से राज्य का उपभोग करते हैं। हे वीर तू चिरायु रह ॥

२६. राजराणा अज्जा झाला, सादड़ी १

गीत (छोटा साणोर)

पड़िया नेजाळ विढे पाटरिये,
भागां कोट नहँ क्रम भरिया।
अजमल तणा खड़ग रै ओले,
अथपत मोटा ऊबरिया ॥ १ ॥

सेलां सूंहे राज घर संभ्रम,
लोहे जिते मैंगलां ढाल।
रावल राव आविया राणा,
ओलै तूझ तणै अजमाल॥ २॥

झालै भार जुझारां झाले,
सीस आपाणे सरव सही।
राणा वड़े ऊबरे राणा,
रवि रथगां ज्यां वात रही॥ ३॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:-युद्ध स्थल में झंडा लहराने वाले बड़े बड़े मुखिया वीर, वीर गति को (मोक्ष को) प्राप्त हुए। गढ़ के टूटने के पश्चात भी युद्ध स्थल से पैर नहीं हटाने वाले हे अज्जा, तेरी तलवार की आड़ से बड़े बड़े राजा महाराजा बच गये।

हे राज राणा अघरु के पुत्र! तूने अपने भाले से बड़े २ हाथियों को मार गिराया। तेरे साहस की आड़ लेने के लिये बड़े बड़े राजा और राणा तेरी शरण में आ बसे।

हे झाला! तूने युद्ध का सारा भार अपने कंधों पर लेकर सारे आघात सिरपर सहन किये। राणा और बड़े बड़े राजाओं को तूने अपने साहस से बचा लिया। इसका यश सूर्य की गति तक अमर रहेगा।

टिप्पणी:- १ यह महाराणा रायमल के समय में जब हलवद काठियावाड़ से झालों का मेवाड़ में आगमन हुआ, उसमें झाला सरदार अज्जा व सज्जा दोनों प्रमुख व्यक्ति थे। वि० सं० १५८४ में महाराणा सांगा और बाबर के बीच खानवा में युद्ध हुआ, उस समय यह महाराणा के घायल होने पर उनका प्रतिनिधि बना युद्ध करता हुआ समर क्षेत्र मे मारा गया। इसके वंशज सादड़ी के झाला सरदार हैं।

९७. रावत संग्राम सिंह शक्तावत, कोल्यारी

गीत (वड़ा साणोर)

हले थाट दक्खणाद लग टल तोपां हमत ।
खमत मद सींहग नरां खागां ॥
सगट तिगवार राखी वकट सोसरां ।
सुदेली चौसरां तणी सांगा ॥ १ ॥

हाक रण डाक मल वीर सग्दां हला ।
सत्र गला विलुथा लूंब सूरा ॥
अगै खग तोलकर तोपथल ऊथला ।
सलो नर वाहियो थोल सूरा ॥ २ ॥

वांकड़ा भड़ा रण सग्व पलटै वचन ।
छक केतां घट तन कितां छायां ॥
आहुड़ण खेत असुरां सगा ईहग ।
आगमण सींहग न को आयां ॥ ३ ॥

लाल सिं रोध सोभाग सगतां तलक ।
खलक आये नजरां आग खवतो ॥
अन भड़ां भरण इल अछक छक उतरण ।
रण मरण सो गुणों भर खतो ॥ ४ ॥

टिप्पणी:- यह शिवगढ़ (डूंगरपुर) के लालसिंह शक्तावत का पुत्र था। महाराणा भीमसिंह के समय में यह बड़ा साहसी और शक्तिशाली पुरुष था। इसने अपनी ताकत से धावा कर सुदृढ़ गढ़ जोडियों से छीन लिया। इसको महाराणा की ओर से एलची बना कर मरहठों के केम्प में भेजा।

पख जंग कूंत केतां धरम पालटै ।
हटै विपरूत गत सूं तंग होयाँ ॥
कलह विच मजबूत अडिग रोके कदम ।
राह रजपूत सावृत रहियाँ ॥ ५ ॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:- दक्षिणी सैन्य समूह के तोपों से बँधे हुए हाथी आपस में टक्कर लगाते हुए चलने लगे। तेरे समान बल-गौरव वाले योद्धा तलवारें लेकर सामने आकर खिसकने लगे। ऐसे समय हे सांगा! तूने श्वेत दाढ़ी मूछों का गौरव रख लिया और सामने अड़ा रहा॥

वीर हुँकार होते ही रणांगण में बावन वीर मिलकर डमरू बजाने लगे। शत्रु सेना के योद्धा वीरों की ग्रीवा पकड़ कर मल्ल युद्ध करने लगे। हे वीर! ऐसे योद्धाओं के सामने तलवार उठाकर उनको उलट पलट कर तूने अपना वचन निभाया॥ २॥

रण भूमि में कितने ही योद्धाओं का गौरव उनके वचन भंग करने से नष्ट हो गया। कितने ही वीरों का गौरव बढ़ गया। अनेकों संबंधी योद्धा लड़ने के लिये आकर भी तटस्थ रहे॥ ३॥

हे शक्तावत वंश के सिरमौर! लालसिंह के पुत्र, उनके सौभाग्य से जिस समय शत्रु तेरी दृष्टि के समाने आ जाते हैं उस समय तेरे नेत्र लाल हो जाते हैं और नेत्रों में अग्नि समा जाती है। अन्य वीर तो सेना में उत्साह हीन होकर अपना गौरव नष्ट करते हैं किंतु हे रावत! युद्ध में वीर गति प्राप्त करने हेतु तुम्हें सौगुना आवेश आता है॥ ४॥

युद्ध में भालों का वार देख कर कई योद्धाओं ने अपना क्षात्र धर्म बदल दिया और इस भयंकर युद्ध को देख कर अनेकों योद्धा मृत्यु के भय से भीरु बन कर स्थल छोड़ चले, किंतु हे वीर! तू युद्ध स्थल में अडिग रहा और क्षत्रियत्व के मार्ग पर डटा रहा॥

९८. रावत अजीतसिंह चुण्डावत, आसींद १

गीत—(सु पंख)

राड़ौ साखूलै अत्थगां वेध वधै सोवां रायजादा,
सतारा उछाजां जूह उमंड़े सजीत ।
वोर वेला प्रथम्मी आणतां सूत हेक वाटै,
आसमांन फाटै थंभ लगायौ अजीत ॥१॥

नंखै चीर लागू छंदा धरती उघाड़ै नाची,
तेण हूँ छतीस सखां दखै त्रामान ।
चहू चकां साजै नाद आणतां वानेत चूण्डा,
अधारे भूडंडां ते डगंतो आसमान ॥२॥

फरे गढ़ां दोलाके हवोला लाख फौजां,
लूट अलै कार दूनी करे भू लेणाग ।
जमीण कांकार ए हो मेटतां अजारा जेठी,
गाढ़े राव धारै सुजां टूटतो गेणाग ॥३॥

भूरा टूह विलाती फिरंगा जूह मेल भूरे,
मेला भीम गजां खूनी भजाया असंभ ।
भू गोल करंते थाले सतारो उथेल मालां,
मै गोल लसंते हाथ दीधौ अड़ी खंभ ॥४॥

टिप्पणी:—१—यह कुरावड के रावत अर्जुनसिंह का छोटा पुत्र था। महाराणा भीमसिंह के समय बढते २ दीवानों में दाखिल हो गया था और रियासत से पृथक जागीरी प्राप्त कर ली थी मरहठों व पिण्डारियों के उपद्रव के समय इसने सैनिक और राजनैतिक सेवाओं में भाग लिया था अंग्रेजों से मेवाड़ की सन् १८१८ में इसी के द्वारा सन्धि हुई थी।

दिसूं दसा राव राजा आसांन ठाणियो दिलां,
माफ देह धारे लाह माणियो अमांन ॥
सांगा वांर जीतो देस राण रै आणियो सारो,
जाणियो प्रवाड़ौ आलमां जहांन ॥५॥

(रचियता:- अज्ञात)

भावार्थ:- राव राजाओं और सूबा (प्रान्त) पतियों में परस्पर विशेष कलह बढ़ने लगा। सतारे के उच्च श्रेणी के अविजित वीरों के समूह उमड़ आये। ऐसे भयंकर समय में हे अजीतसिंह! गिरते हुए आकाश के थंभ लगानें जैसी देश की एक साथ व्यवस्था की ॥ १ ॥

चीर (वस्त्र) होते हुए भी नखरें करती हुई नग्न होकर पृथ्वी नृत्य करने लगी (अर्थात् व्यवस्था होते हुए भी पृथ्वी शत्रुओं के अधिकार में जाने लगी) जिसे छतीस वंशी क्षत्रीय, राज्योपभोगी देखने लगे ऐसे समय हे चुण्डावत अपने वीर वेश धारण कर गिरते हुए आकाश को भुजाओं पर झेलने की भांति बजते नक्कारों के बीच अपनी जमीन अधिकार में की ॥ २ ॥

लाखों शत्रुओं से गढ़ घिर गया। प्रलयंकरी ने लूटमार शुरु की तथा पृथ्वी बल से अधिकार में करली। हे अजीतसिंह के पुत्र! ऐसे समय में तूने गिरते हुए नभ मंडल को अपनी भुजाओं से बचा लिया ॥ ३ ॥

हे वीर, तू ने अंग्रेजों के समूह को रक्त रंजित कर भीम के हाथियों में मिला दिया। हे बहादुर! सतारे के स्वामियों का भू अधिकार तूने अपने भाले की शक्ति से हटा दिया और गिरते हुए आकाशी प्रलय से अपने को बचा लिया, ठीक व्यवस्था रखली ॥ ४ ॥

(बढ़ते हुए प्रलय से देश को बचाने से) दसों दिशाओं के राजाओं पर अहसान किया। जिसका उन्होंने हृदय में हर्ष माना और उसका

लाभ उठाया। महाराणा सांगा के अधिकार के समय का राज्य (जो-बाद में शत्रु के कब्जे में होगया था) वापस राणा के अधिकार में करा दिया। जिससे तेरा गौरव सारा संसार जान गया ॥ ५ ॥

९९. रावत हम्मीर सिंह चुण्डावत, भदेसर[1]

गीत (बड़ा साणौर)

अथय सिलह सझ हमीरे भड़ां थट पेरिया।
असं कसे फेरिया गिरां ओड़े ॥
थरर आंवाट फजराट यर थेरिया।
खेरिया जनेवां वाड़ खोड़े ॥ १ ॥

आण पाखर झणण हजारी तड़छिया।
गोल़ भुज वड़छिया रचण गाड़ा ॥
कर मछर थाड़वी लियण चित कढ़छिया।
थड़चिया चूंड रज भुजां थाड़ा ॥ २ ॥

केमरा भड़ां तन दवा सूं काढ़िया।
झंडा रिण गाड़िया क्रोध झाले ॥
चंचलां धके खागां झपट चाढ़िया।
वाढ़िया निखादां भैर वाल़ै ॥ ३ ॥

टिप्पणी:— १. यह रावत भैरोंसिंह का पुत्र था। महाराणा भीमसिंह के समय अमीरखां पठान ने भदेसर छीन कर वहां अपना थाना बिठा दिया, और ठिकाना निम्बाहेड़ा में मिला दिया। तब हम्मीरसिंह ने आकर भदेसर से मुसलमानों का थाना उठा दिया और अपना अधिकार कर लिया। इसके अतिरिक्त अन्य कई युद्धों में उसने भाग लिया था।

ताखड़ा उलट में आसियां लटायत।
छटायत नाहरां भड़ां छोगे ॥
रमें खग झटायत तो जहां हमीरा।
भलां जे पटायत पटा भोगे ॥ ४ ॥

(रचयिताः—अज्ञात)

भावार्थः—सर्व प्रथम हम्मीर सिंह ने सैन्य समूह के साथ कवचादि पहन घोड़ों पर चारजामें कसकर पहाड़ के चारों ओर घेरा लगा दिया, और नगारे बजाता हुआ सुबह के समय शत्रुओं को घेर उन पर तलवारों की भारें भोटी करदी ॥ १ ॥

तलवारों के वार से यौद्धाओं के बख्तर व घोड़ों के पाखरों की झन-झनाहट होने लगी। शत्रुओं के तिरछे घाव लगाने लगे। वीरों ने अपनी भुजाए चला कर बरछियों के वार शुरु कर दिये। क्रुद्ध हो लुटेरे मवेशियों को लेने के लिये युद्ध करने लगे। चुंडावत ने उन डाकुओं को अपने प्रहार से जख्मी किया ॥ २ ॥

हम्मीर सिह ने (शत्रु) यौद्धाओं को तीरों द्वारा घायल कर रण-स्थल में अपना विजय का झंडा रोप दिया। भैंरुसिंह के पुत्र ने अश्वा-रोही हो सामने के निषाद वंशियों को तलवार से काट गिराया ॥ ३ ॥

सिंह सी छटा वाले वीर शिरोमणि ने सज कर उलट-आने वाले (उन) लुटेरों को मार दिया। हे हम्मीरसिंह तेरे जैसे खड्ग धारी क्षत्रीय जागीरी का उपभोग करते हैं सो वाजिब ही है ॥ ४ ॥

१००. रवत हम्मीरसिंह चुण्डावत, भदेसर

गीत (सुपङ्क)

झंडा फरक्के मदालां पीठ आरबां न त्रीठा झड़ै,
धू पंडां ऊधड़ै चै विरंडां सूर धीर।

रसे दे घुमंडां वीर मार तुंडां रूके राह,
हके वीच थंडां जटें उडंडां हमीर ॥१॥

रूकां वेग झालरा धू हालरा दे जोग रागी,
धूरें राग कालरा वडाणी वंब धीर।
असा वीर ख्याल रा मंडाणी आप ताप उठें,
तठें रिमा सालरा सदाणी वालां तीर ॥२॥

चावां अंगां अड़ंगां वेढ़ंगा तंगा वीर वाट,
भोम रंगां ओण हूंत नारंगां भेवान।
जोध चंगा वारगां सुरंगां वींद वरे जटें,
अभंगा सीसोद भुजां अड़ें आसमान ॥३॥

मांझी सूर अगी कढां मावलां अखाड़ां मंड,
धणी छलां ओनाड़ा नमाय खलां थींग।
गाड़ी गाज धाड़ा धाड़ां सउजा सोभाग गीत,
अहाड़ा प्रवाड़ा जीत दूजा अभें सींग ॥४॥

(रचयिता:- फतहराम आशिया)

भावार्थ:- हाथियों की पीठ पर झण्डे लहरा रहे हैं एवं नगारों की भयंकर आवाज हो रही है। युद्ध में अडिग रहने वाले वीरों के सिर धड़ से अलग हो रहे हैं। शूर वीरों की युद्ध क्रीड़ा देखने के लिये सूर्य भगवान ने अपना रथ आकाश मार्ग में स्थिर कर दिया है। ऐसे वीर शत्रुओं के समूह में हम्मीरसिंह ने अपना घोड़ा बढ़ा कर युद्ध आरम्भ किया ॥१॥

अनल ज्वाला की भांति तलवारों के वेग और व्याकुल करने वाले सिंधुराग तथा नगारों का घोर नाद सुन कर योगिनियां हर्षित हो सिर

धुनने लगीं। इस प्रकार आतंक पैदा करने वाली वीरों की युद्ध-क्रीड़ा हो रही है। वहाँ शत्रुओं के दिल में तू सदैव खटकता रहता है ॥ २ ॥

इस प्रकार अनेक शूर वीर घावों से परि पूरित होकर निशंक शत्रुओं के टुकड़े कर रहे हैं। पृथ्वी रक्त-प्रवाह से नारंगियों रंग की सी हो गई है। जहाँ पर अच्छे योद्धाओं के घावों से टुकड़े हो रहे हैं उन रंगीले वीरों को दुलहा बना कर अप्सराएँ वरण कर रही हैं! ऐसी युद्ध-गति में सिशोदिया ने पूर्ण रूप से अपनी भुजाएँ वार करने के लिये आकाश की ओर उठाई ॥ ३ ॥

तलवारों और भालों की नोंक से युद्धारंभ कर अपने स्वामी की सहायता के लिये प्रमुख वीर ने शूर वीर शत्रुओं को युद्ध में झुका दिया। दूसरे अभयसिंह के समान युद्ध विजय कर हे सिशोदिया संसार में अपना सौभाग्य और उज्जवल यश की वाह वाही फैलादी ॥ ४ ॥

१०१. रावत हम्मीर सिंह चुण्डावत, भदेसर

गीत (सुपंख)

काढ़ी दला सी संगला प्रले समंदां ऊजली किन्ना।
खलां घू अरुठी जत्र गे थंडां खागास ॥
सरंगा निछूठी तूटी भाघ पव्वे काला सीस।
वीर चूण्डा वाली ज्वाला वीजलां नांणास ॥ १ ॥

जटी ऊघड़ी क चखां अरावां सावात जागे।
संधां उखड़ीक पव्वे भूमंडां सामाज ॥
मामलां चड़ीक वूठी सतारां गिरद माथै।
निहंगां तड़ीक जेम तुहाली नाराज ॥ २ ॥

सफ्फै गे जूह लोहां के धरा तड़फ्फै सूर।
थड़फ्फै खेचरां रंभा भड़फ्फै बेवाण ॥

महा वेग ग्रहिया गनीम अद्र तणे माथे ।
क्रोधंगी हमीर वाली दामणी केवाण ॥ ३ ॥

नीर वजे आसेर चढ़ायो सालमेस नन्द ।
सोभा चाहूँ फेर चाढ़ो प्रवाड़ सनीम ॥
ओझलाणो थारी समसेर छटा लणी आगे ।
मेर फेर फूल पत्रां न आवे गनीम ॥ ४ ॥

(रचयिताः—तेरजेराम आशिया)

भावार्थः- हे शूर चुंडा, तूने अपनी तलवार निकाल शत्रुओं एवं उनके हाथियों के समूह पर क्रुद्ध होकर वज्र के समान चलाई। उस समय ऐसा आभास हुआ मानो समुद्र की लहर में प्रलयंकर अग्नि की ज्वाला चमक रही हो या काले पहाड़ पर बिजली टूट पड़ी हो ॥ १ ॥

उस समय कड़कती हुई तोपों का शोर (बारूद) ज्वाला ऐसी दीखने लगी, मानो शंकर का समाधि नेत्र खुल गया हो और उन तोपों की भयंकर कड़कड़ाहट से पहाड़ टूक २ हो जमीन पर पड़ने लगे, ऐसे भयंकर युद्ध में एक घड़ी तक सतारा के स्वामी पहाड़ स्वरूपी पर तेरी तलवार बिजली के समान टूट पड़ी ॥ २ ॥

युद्ध–भूमि में हाथी व योद्धाओं के समूह घावों से परि पूरित हो छटपटाने लगे। उस समय पिशाच योगिनी आदि कड़कती हुई आवाज से बोलने लगीं और अप्सराएँ वीरों को वरने के लिये, एक दूसरी से झपट २ कर विमानों में, बैठाने लगी, उस समय हे हम्मीरसिंह, शत्रु स्वरूपी पहाड़ पर बिजली के समान अत्यन्त वेग से क्रुद्ध होकर तूने तलवार चलाई ॥ ३ ॥

हे सालमसिंह के पुत्र तूने इस युद्ध को विजय कर अपने राज्य शासन एवं दुर्ग का गौरव बढ़ाया। जिसका यश सारी पृथ्वी की सीमा

तक छागया। यह शत्रु स्वरूपी पहाड़ बिजली के सदृश तेरी तलवार से जला हुआ भविष्य के लिये सर सब्ज एवं पत्र पुष्पों से रहित हो गया ॥ ४ ॥

१०२. झाला जालिमसिंह, कोटा[1]

गीत (बड़ा साणोर)

अई अरोड़ा राण झाला अचल अखाड़ा।
जैत खंभ अमोड़ा खला जारै॥
राय हर अजोड़ा केम तो सू रहै।
थाय खोड़ा हरण नाम थारै॥ १॥

टिप्पणी:- १. यह झाला पृथ्वीसिंह का पुत्र था। १९वीं शताब्दी में राजस्थान के राजपूत सरदारों में यह बड़ा प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित व्यक्ति था। प्रारंभ में यह अपने पिता पृथ्वीसिंह के साथ कोटा महाराव के पास गया और वहां रिश्तेदारी के कारण उच्च पद पाया। फिर कोटा में वीरता के अनेक काम किये और जयपुर की सेना को बड़ी पराजय दी। बाद में वहाँ विरोध होने पर यह मेवाड़ में चला आया और महाराणा अरिसिंह ने उसे चीता खेड़ा की जागीर और राज राणा की उपाधि दी वि० सं० १८२५ में माधव राव सिंधिया से मेवाड़ की सेना का क्षिप्रा के तट पर युद्ध हुआ; जिसमें राज राणा जालिमसिंह घायल होकर कैद हो गया। फिर वहाँ से छूट कर कोटा चला गया और पुन: वहां का प्रधान मंत्री बना। मेवाड़ के आंतरिक कलह में उसका हाथ रहता था और शक्तावतों व विरोधियों के फिरके का पक्षपाती हुआ। आम्बाजी इंगलिया, के भाई, बालेराव को छुड़ाने के लिये मेवाड़ पर चढ आया और महाराणा भीमसिंह से जहाजपुर का इलाका प्राप्त किया। अवसर पर रुपैये पैसे की मदद देता रहा। अंग्रेजों के साथ में कोटा की संधि हुई; जिसमें उसने सदा के लिये प्रधान मंत्रित्व का पद अपने और अपने खानदान के लिये प्राप्त किया। फलः स्वरूप कोटा के महाराव किशोरसिंह से युद्ध हुआ और कालान्तर में झालावाड़ रियासत की बुनियाद पड़ी यह अपने समय का बड़ा राजनीतिज्ञ और वीर था उसके वंशधर झालावाड़ के स्वामी हैं।

ठह लंगर पाय दुसहां करण ठांगला।
रूक दोय आंगला वाढ़ ग हैं॥
बोलतां नाम थारै मयन्द बांवला।
मृग हुवै पांगला जंगल मा हैं॥ २॥

दल़ बहल़ मेल़ थानक अडंड डंडिया।
वड़ कुरंभ विहंडिया रूक बावां॥
सांड सबल़ तुहालें नाम जालम सुपह।
पंथ सारंग वहै अहंड पावां॥ ३॥

साह खग नगी दड़बाण पीथल सुतन।
करण धणियां अगा फतै काजा॥
सलामी करै तज माण असगा सगा।
रह लगा पागड़ै आन राजा॥ ४॥

(रचयिता:-अज्ञात)

भावार्थ:-हे राय सिंह के पौत्र! तू युद्ध भूमि में ऐसा अडिग चरण रखने वाला है कि भयंकर शत्रु जब तक लौट न जाय तब तक डटा रहता है। तुझ से कौन संधि करके नहीं रहना चाहता क्योंकि हिरण जैसे पशु भी तेरे भय से पंगु हो जाते हैं॥

हे वीर! तू दो अंगुल चौड़ी तलवार की धार से शत्रुओं के घाव लगाता है और पांवों में जंजीर डालकर उन्हें बंदी बना लेता है। छेड़े हुए क्रुद्ध सिंह की भांति हे विक्रम योद्धा! तेरी धाक सुन कर वन में मृग पंगु हो जाते हैं अर्थात भय से पांव लड़ खड़ाने लग जाते हैं॥

हे जालिम सिंह! सेना का संगठन कर तूने कर न देने वालों से भी कर ले लिया कछवाहों की सेना शस्त्र प्रहार से नष्ट कर दी।

हे वीर ! तेरी इस प्रकार की वीरता से भरी हुई हुंकार सुन कर मार्ग में चलते हुए हिरणों के पांव टूट गये हों वैसे भय कंपित होकर चलने लगते हैं ॥

हे पृथ्वी सिंह के पुत्र ! महाराणा की सेना के अग्रभाग में अपने दृढ़ चरणों पर अडिग रहते हुए स्वामी की विजय प्राप्ति में सहायता करता है। हे योद्धा ! तेरे संबंधी अपने स्वाभिमान को त्याग कर घोड़े का जीण घोड़े पर कसी हुई काठी के ऊपर लगाये हुए कपड़े का छोर पकड़ कर चलते हैं ॥

१०३. राजाधिराज माधोसिंह, शाहपुरा

गीत (छोटा साणोर)

विखमी गव राग चढ़ण घुर वंबी,
थारे कुल बरद धरोसे।
रहवै नसंक धरापत राजन्द,
भारत हर तूझ भरोसे ॥१॥

समर अचाल पाँव अंगद सम,
दुसहां उर अणमाव दहै।
मेर सभाव तूझ भुज माधव,
राणो राव नचीत रहै ॥२॥

राखण साथ भड़ां रवताला,
ऊपरट खग चाला आचार।

टिप्पणी:—१—१९ वीं शताब्दी के अन्त में हुए शाहपुरा के राजाधिराज माधोसिंह की इस गीत में प्रशंसा की गई है।

काला गिरन्द तुलैं थारै कर,
भीम सुतन वाला सह भार ॥३॥

पांणां भाल कुल विरद पुराणा,
कवियणां सारण सह काज।
सुत अमरेस साल सुरताणा,
राणा घर ओठम महाराज ॥४॥

(रचयिता:—अज्ञात)

भावार्थ:— अपने कुल को गौरवान्वित करने वाले हे भारतसिंह के पौत्र! युद्ध स्थल में नगारों के भयंकर घोष और सिन्धु राग के बजते समय मेवाड़ नरेश तेरी बल शाली भुजाओं पर निश्चिन्त रहता है।

हे वीर, युद्ध-भूमि में तू अंगद के समान अडिग चरण वाला है। शत्रुओं के हृदय में तेरी वीरता नहीं समा पाती और अग्नि के समान उनके हृदय में जलन उत्पन्न करती है। हे माधोसिंह, तेरी शक्ति शाली भुजायें सुमेरू पर्वत के समान शोभा देती है। ऐसी भुजाओं के बल के सहारे ही मेवाड़ का महाराणा निश्चिन्त रहता है ॥ २ ॥

हे महाराणा के उमराव रावत, तू साथ में सैनिक वीरों का समूह रख कर, युद्ध-भूमि में शत्रुओं पर विलक्षण रीति से खड्ग चलाता है। उसी भांति तू दान वीर भी है, क्योंकि तेरा हृदय दान देने में भी अधिक उदार दृष्टि गोचर होता है। हे लोह वेप (लोहे का बख्तर शरीर पर धारण करने का) धारी, कज्जल गिरि के समान अडिग वीर अपने पिता अमरसिंह और पितामह भीमसिंह के गौरव का भार तेरे कंधों पर सुरक्षित है ॥ ३ ॥

हे अमरसिंह के पुत्र, तू अपने पूर्वजों की ही भांति कवियों की सहायता स्वयं हाथ से करता है और महाराणा की राजधानी की रक्षा करने के कारण दिल्ली पति बादशाह के हृदय में खटकता रहता है ॥४॥

१०४. राजा उम्मेदसिंह, शाहपुरा

गीत (वड़ा साणोर)

सुरिंद नमो आकाय उमेद सिसोदिया ।
भेद खत्र वाटचा विरद साधै ॥
उदैपुर वेल तू वेल आंबेर री ।
अठी तू जोधपुर वेल आवै ॥ १ ॥

सुतन भाराथ जुध अनड़ ऊँचा सिरां ।
लड़ण घड़ कुँवारी जि तू लाडो ॥
जगा रै ढाल तू ढाल जैसिंघ रै ।
अठी तू ढाल अभमाल आडो ॥ २ ॥

तुरत गत भुजां दंड धाड़ दुजा दलां-
रूक हथ धाड़तो दुहूँ राहै ॥
मुदे मेवाड़ ढूंढाड़ तू हिज मुदे ।
मुदे तू मुरधरा दलां माहे ॥ ३ ॥

साह पुर राज महाराज ऊमेदसी ।
समापण बाज रीझां सको ने ॥
त्रहूं ही नरेसां काज सारण तू ही-
त्रिहूं देसां तणी लाज तोने ॥ ४ ॥

(रचयिता:-सोभा छोटाला)

भावार्थ:- हे उम्मेद सिंह सिशोदिया ! इन्द्र के समान दान की झड़ी लगाने वाले, क्षत्रिय कुल की लज्जा रखने वाले तेरे शोभायमान कुल को नमस्कार है। तू उदयपुर और जयपुर नरेशों को सहायता देता है और जोधपुर के नरेश को भी सहायता देने को तैयार रहता है।

हे भारत सिंह के पुत्र, श्रेष्ठ वीर! युद्ध में बिना वरी सेना (कुमारी किसी वीर से बिना खंडित की हुई सेना) का तू दुलहा है। महाराणा जगतसिंह और जयपुर महाराजा जयसिंह का तू ढाल के समान रक्षक है और इधर जोधपुर महाराजा अभयसिंह की ढाल की तरह तू रक्षा करने वाला है।। २।।

हे दूसरे दलेलसिंह! तीव्र गति से तलवार चलाने की हिंदू और मुसलमान (तेरी) सराहना करते हैं।। तू मेवाड़ के नरेश की सेना अग्रगण्य वीर शिरोमणि रहता है उसी तरह ढूंढाड़ और, मारवाड़ नरेश की सेना में भी अग्रगण्य रहता है।।

हे शाहपुरा नरेश उम्मेद सिंह! हर एक को घोड़े प्रदान करने वाला होने से तीनों देशों की लज्जा का भार तेरे भुजों पर निर्भर है।।

१०५. उम्मेदसिंह भारतसिंह शाहपुरा

गीत (छोटा साणोर)

ग्रह भालां उठ अमर क्षत्रियाँ गुर, फूट रहे हय गज पिलाण।।
लूट धरां अजमेर दुरंग लग, खूट गनीम खगां तज खाण।। १।।

कुल तो सदा सुपह रैं कारण, डारण किस तो रात दनै।
धर जमती जिण दीहक धारण, मारण हाग जगत मनै।। २।।

भूप उमेद अनै नृप भारत, मुलह कियां नृप खेद मही।।
मेदपाट लग आण मनाई, रैण सदा अण भेद रही।। ३।।

रजपूतां री आथ जकांरे, कूंतारी भरलाट करां।।
सकल कहै जावै सुतांरी, भूतां री किम जायधरा।। ४।।

(रचियता:- अज्ञात)

भावार्थः- हे क्षत्रियों के गुरु अमरसिंह ! तूं प्रतिदिन उठ कर देख कि तेरे सामंत अश्वारोही होकर सदा तेरे साथ फिरते रहते हैं तथा अजमेर दुर्ग तक भूमि को लूटते हुए तलवार के द्वारा शत्रुओं को निर्मूल कर दिये हैं ॥

हे नरेश ! तेरे (स्वामी के) लिये ये योद्धा रा दिन बख्तर कसे हुए रहते हैं और जिन्होंने तेरे राज्य शासन की भूमि को स्थाई कर दी ऐसे वीरों को संसार भी मानता है।

महाराज उम्मेदसिंह व भारतसिंह ! तेरी विपत्ति के समय में भी वीरों ने बख्तर कस कर सब मेवाड़ पर तेरा आतंक फैलाया। यह पृथ्वी सदैव इसी प्रकार से रहती आई है ॥

जिनके पास संपत्ति रूपी वीर क्षत्रिय संचित हों जिनके भाले सदा चमकते रहते हों। उनके लिये संसार कहता है कि यह पृथ्वी सोते रहने वाले भीरु लोगों से भले ही चली जाय किन्तु ऐसे वीरों की जमीन किसी प्रकार नहीं जा सकती।

१०६ कान[1] पंचोली उदयपुर

गीत (बड़ा साणोर)

पठायत लाख रा सहू लागा पगां, राण बीड़ो दियो होय राजी।
मेवातियाँ परै धणी मेवाड़ रे, मोकल्यो कान्ह ने करे साभी ॥१॥

१-यह भटनागर जाति का कायस्थ और क्षीतर का पुत्र था। महाराणा अमरसिंह दूसरे, संग्रामसिंह दूसरे और जगतसिंह दूसरे के समय तक वि०-सं० अठारहवीं शताब्दी तक विद्यमान रहा। यह दिल्ली के मुगल दरबार में मेवाड़ राज्य की तरफ से वकील बना कर भेजा जाता था। उसने कई सैनिक सेवाओं में भी मेवाड़ की तरफ से भाग लिया था। इसी गीत में महाराणा संग्रामसिंह के समय रणबाजखां मेवाती पर सेना का प्रयाण हुआ, उस समय यह सेनापति बनाया गया था, जिसका इस गीत में वर्णन है।

हूलाकर राण री फौज मोहर हुवाँ, दीखियाँ ऊपरै मार दीधी ।
कानै छीतर तणा तुरक सह काटिया, कान्ह दीवाण री फतै कीधी ॥१॥

धरा कंपित हुई प्रसण सह धूजिया, किया मेवातियां बंद काला ।
असँख चत्र कोट रा सुणे दल आवतां, लगे अजमेर रा जड़ण ताला ॥३॥

आण दीवांण री फेर आयो अभंग, थापियो पंचोली अडग थाणो ।
प्रथीपत राज सूं घणो सुख पावियो, रीझियो न्याय संग्रामराणो ॥४॥

(रचयिता:—अज्ञात)

भावार्थ:— हे कानसिंह ! जिस समय तुझे मेवातियों पर सेना लेकर जाने के लिये बीड़ा (हुक्म) दिया, उस समय तूने खुश होकर बीड़ा (हुक्म स्वीकार किया । लाखों रूपैये की जागीरी भोगने वाले महाराणा के उमरावों ने इन्कार कर सिर झुका दिया । तब मेवाड़ के स्वामी ने मेवातियों पर तुझे सेनापति बना कर भेजा ॥

हे कानसिंह ! तू वीर हाक करता हुआ महाराणा की सेना के आगे हुआ और शत्रुदल को शस्त्र प्रहार से विनष्ट किया तथा महाराणा की विजय पताका फहराई ॥

तेरी इस युद्ध क्रीड़ा में शत्रु भयभीत हो गये, सारी पृथ्वी कंपायमान होने लगी । पश्चात् तूने उन मेवातियों को कब्जे में लिया । चित्तोड़-स्वामी की असंख्य सेना लेकर तुझे आता सुन अजमेर के दरवाजों के ताले बंद करवा दिये ॥

हे वीर पंचोली तूने उन मेवातियों को पराजित कर महाराणा की विजय दुन्दुभी बजवाई और थाणा (फौजी स्टेशन) स्थापित किया । तेरे इस युद्ध कौशल को देख महाराणा सांगा तुझ पर बहुत खुश हुआ ॥

१०७. रावत गुलाबसिंह १ चुण्डावत साटोला

गीत (बड़ा साणोर)

समर संभाली दगो होतां तरल सटारी,
अके लख नजर खल थटारां थांग।
ओम छबते रवण तीख कुल छटारां,
सर गयंद कटारी जड़ी गुल सांघ॥ १॥

जमी पुड़ धर हरे उडै रुकां जरक,
देख कपणां थरक पीठ दीधी।
हचण रण सुकर जम दाढ अळियां हरक,
करी वाले असुण्ड गरक कीधी॥ २॥

खल कटे सहेता जरद खगां खतंग,
खलक वावां रतंग दरद खाथे।
तठै लड़वा घड़ी खेल रीभन पतंग,
मरद सुजड़ी जड़ी मतंग माथे॥ ३॥

वोम छब कमल अतमाल कर वाहतो,
गज वड़ां गाहतो खलां गूंडो।
रण कटे गयो वैकुण्ठ भ्रम राहतो,
चाहतो मुकत सामीप चूण्डो॥ ४॥

(रचयिता:—अज्ञात)

टिप्पणी:— १. यह सलूम्बर के रावत केसरसिंह प्रथम के चतुर्थ पुत्र रोड़सिंह का बेटा था, और मरहठों के किसी झगड़े में यह मारा गया जिसका इस गीत में वर्णन है।

भावार्थः– हे गुलाबसिंह ! तेरे साथ थोंबे से युद्ध आरंभ हुआ, उस समय युद्ध स्थल में अपने सामने लाखों शत्रु योद्धाओं को देखा और बिजली के समान चमकती हुई कटारी को आकाश की ओर उठा तूने हाथी के मस्तक पर वार किया।

उस समय तलवारों के वार से पृथ्वी कंपायमान होने लगी, भीरु लोग भयभीत होकर युद्ध भूमि से पलायन करने लगे। उस समय तूने हर्षित हो युद्ध करने के लिये अपने हाथ में कटारी ली और हाथी के मस्तक पर मारी।

हे वीर ! जिस समय तलवार द्वारा कवच सहित शत्रुओं और हाथियों के घावों से झरने के समान रक्त प्रवाहित होने लगा, उस युद्ध-कौतूहल को देखने के लिये सूर्य भी खुश होकर घड़ी भर ठहर गया और उसी समय तूने हाथी के मस्तक पर कटारी का वार किया।

हे चुण्डा ! तूने आकाश की ओर मस्तक उठा कटारी के वार से गज–सेना को शत्रुओं सहित विनष्ट कर दिया। उस युद्ध में शत्रु दल को जख्मी करता हुआ अपनी इच्छा के अनुकूल (युद्ध) धर्म के रास्ते होता हुआ वैकुण्ठ (स्वर्ग) जाकर मुक्ति प्राप्त की।

१०८ रघुनाथ सिंह राणावत,

गीत (बड़ा साणोर)

भड़ां राण रा अने सुरताण रा भड़ंतां,
कथ आलम कलम एम कहियो।
रुक जुध वाहतां रूप राणावतां,
रुघो साहब तणी जोड़ रहियो ॥ १ ॥

अराबां धोम धुँआ खण उडंतां,
वढण जुध वार देतां समह वील।

वाहतो झेलतो खाग फौजां विचा,
सूर वामी भुजां सांम सारीख ॥ २ ॥

तुरंग रथ थांभ जोग्रे अरक तमासा,
रीझ वाखाणियो दहूँ राहे ।
धड़च खल दलां नग वाह कर धान री,
मान रौ मलो प्रम जोत माहे ॥ ३ ॥

(रचयिताः–अज्ञात)

भावार्थः–हे रघुनाथसिंह ! जिस समय महाराणा और बादशाह के यौद्धा भिड़ने लगे, उस समय हिन्दू–मुसलमानों ने कहा कि राणावतों की आन रखने वाला वीर रघुनाथसिंह राणावत सचमुच माहव के समान तलवार चलाने लगा है ।

तोपों के चलने से धुँए की गर्दी सूर्य तक पहुँचने लगी, उस समय तूने स्वयं आक्रमण सहते हुए शस्त्रों की वर्षा कर दी । हे वीर ! तूने उस समय स्वामी का बांया हाथ होकर युद्ध किया ॥

हे मानसिंह के पुत्र, तेरा युद्ध देखने सूर्य ने आकाश में अपना रथ रोक लिया और युद्ध देखने लगा । हिंदू और मुसलमान युद्ध कौशल से प्रसन्न होकर सराहना करने लगे और तू युद्ध करते २ वीर गति प्राप्त कर प्रभू में विलीन हो गया ॥

१०६. राजराणा माधोसिंह झाला, झालारापाटण १

गीत (सु पंख)

फौजां भमाई हजारां थां भौ लगायो अयास फाटे,
धींग सैलां अभागां नमाई जड़ां धींगं ।
जालमेस पाई घणी रंग रेलाई जमी,
(जिन) सार धारां ऊजला जमाई माधोसींग ॥१॥

पाई फतै गले पाँव कूडाड़ दराया पाछा,
डाण आयै वहाई न भूलो थाव डाव।
ऊभां थरे पत्ता मार भालां थगा आपणाई,
सुथाला जणी नूं पाछी वहाई सुजाव ॥२॥

केही मेवासरो करे भलै जाग कीधो,
भड़ां घोड़ा थोक रै वीटियाँ वडै भाग।
देर दावा अवीहै डोकरै खलां भोम दाबी,
नदी जावा जिकां नूं छोकरै काले नाग ॥३॥

पढ्यो वीर पाटीपाव आराण न दिया पाछा,
ताखा लाटी वैठा ही ऊगती मूछां नाग।
बाप खाटी मेदनी ऊजला कका पाण बापो,
राज दाटी भुजां रे भरोसे झाला राण ॥४॥

(रचयिता:- अज्ञात)

भावार्थ:- हे माधवसिंह, सहस्त्रों बार शत्रु सेना को रण-भूमि से हटा कर, गिरते हुए आकाश के समान कष्ट में तूने अपनी प्रबल भुजाओं का स्तंभ बना कर कष्ट का निवारण किया। भालों तथा अन्य प्रकार के अनेकों शस्त्रों से शत्रुओं को जड़ सहित नष्ट कर दिया। तेरे पूर्वज जालमसिंह से प्राप्त की हुई भूमि की रक्षा, उज्जल तलवारों का प्रहार शत्रुओं पर कर, की तथा तेरी भूमि शत्रुओं के रक्त से प्रवाहित हुई ॥ १ ॥

टिप्पणी:- यह कोटा के प्रधान मन्त्री राजराणा जालमसिंह झाला का पौत्र और मदनसिंह का पुत्र था। कोटा के हाड़ा नरेश महाराव रामसिंह के समय इसका अधिक विरोध बढ़ गया, तब अंग्रेजों ने कुछ राज्य के परगनों को अलग कर झालावाड़ पाटण की पृथक रियासत कायम की और माधोसिंह को प्रथम नरेश माना।

हे वीर, युद्ध भूमि से दूढ़ाड़ के स्वामी के पांव पीछे हटा दिये और तू स्वाभिमान से शत्रुओं का नाश करने में रणानुर्य कभी नहीं भूला। तेरे पूर्वज प्रतापसिंह ने अपने खड्ग-बल से भूमि का आधिपत्य प्राप्त किया था, उस भूमि की तूने यथावत रक्षा की तथा तूने स्वयं बाहुबल से और भूमि को प्राप्त किया और उस की सुन्दर व्यवस्था की ॥ २ ॥

हे चतुर अश्वारोही और शूरवीर समूह के भाग्यशाली स्वामी, तूने कितने ही डाकुओं का नाश कर दिया। तेरे वृद्ध पूर्वज जालमसिंह और प्रतापसिंह ने जो भूमि पर अधिकार प्राप्त किया था, उस अधिकार को तूने अपने शैशवस्था में भी काले सर्प की भांति सुरक्षित रक्खा ॥ ३ ॥

हे झाला, तूने युद्ध कला पूर्णरूप से प्राप्त की है। अत तू युद्ध में अडिग चरण रहा। तेरे पूर्वजों द्वारा प्राप्त-भूमि की रक्षा काले सर्प की भांति तूने अडिग रह कर की ॥ ४ ॥

१०४. शेखावत डूंगजी जवाहरजी ?

दोहा

सेखावट जलहल समर, फर चल दल फरगांण।
प्रथी सोह कलहल पड़े, भल हल ऊगां भाण ॥

गीत (सुपंख)

खावै आतंकां आगरो खांपां न मावै भमावे खलां,
धावै थावै अजाण लगावै चोड़े धेस।
ऊगां भाण नाग वंसां माथै खगां राज आवे,
दावै लागौ पंजावै फरंगी वाला देस ॥ १ ॥

कंपू मार तेगां तीजी ताली सो कुरंगी कीधी,
जका बाघनूं रंगी अजाली भुजां जोम ।
मांनूं जाणें तारखी विहंगी काली घड़ा माथै,
भूप ऊंगां बंभू से फरंगी वाला ओम ॥ २ ॥

पड़ै धोखा दल्ली वंसां कुरंमां चाढ़वा पाणी,
आप मत्तै शेप बू गाडवा जाम आठ ।
काकोदरां माथै खगांधीस ज्यूं काढ़वा केवा,
लागो कैड़ै बाढ़वा हजारां जंगी लाठ ॥ ३ ॥

तूटो व्योम बाट नग तालका विछूटो तारो,
केतां छूटो प्राण आलक्का ताके कोप कूंप ।
कहूँ रूद्र मालक्का विहंगां नाथ भूठो कना,
रूठा गोरां माथै अलं कालक्का सा रूप ॥ ४ ॥

भल्लों भाई सखा राले बिखेरे सारकी भीच,
सारां सटै मार छावणी सोज सोज ।

टिप्पणी:—१—शेखावत २० वीं शताब्दी के प्रसिद्ध राजस्थानी वीर थे। दोनों काका-भतीजा थे। ये अंग्रेजों के इलाकों में धावा मारते थे और धनाढ्यों को लूट कर निर्धनों को बांट देते थे। यही व्रत इन्होंने लिया था। इस कारण अंग्रेजों ने डूंगजी को गिरफ्तार कर आगरा के किले में कैद कर दिया था। इसकी खबर जब जवाहरजी को मिली तो अपने वीरों को साथ ले आगरा पहुंचा और रात्रि के समय आक्रमण कर डूंगजी को छुड़ा लाया। इस गीत में चारण कवि ने दोनों वीरों का वर्णन किया है।

राजस्थान में डूंगजी-जवाहरजी' लोकगीतों में बहुत गाये जाते हैं। अंग्रेजों के साथ इनका लोहा लेना बड़ा महत्व रखता है और इसीलिये रात २ भर जाग कर इनको गाया जाता है।

मल्लै थाट हबोला तारखी कांली नाग माथै,
फेरे दोली मारकी भूरियाँ वाली फौज ॥ ५ ॥

लोही खाल पूर पट्टां हजारां वैरणने लागा,
थट्ट रंभा गैण ने हजारां लागा थाट।
रूकां भाट हजारां वैणाने लागा काल रूपी,
लागा ट्रक व्हेग ने हजारां जंगी लाट ॥ ६ ॥

रैण डंडा-अडंडां गवाने भीच आगराका,
खाग राका भूर डंडां अरिन्दां खाणास।
पड़ै धाका खंड खंडां फैण नाग राका पीधां,
वाही आगरा का भंडां ऊपरै वाणास ॥ ७ ॥

(रचयिताः-चंडीदानजी महियारिया)

दोहे का भावार्थः- हे शेखावत, तूने अंग्रेजों की सेना से रण-भूमि में युद्ध कर उसे नष्ट कर दिया। जिस का कोलाहल सूर्योदय होते ही सब को सुनाई दिया।

भावार्थः- हे शेखावत, तेरे शरीर में असीम बल और शौर्य है। तेरे शौर्य के समस्त शत्रुगण भौंचक्के हो जाते हैं। इस प्रकार के तेरे शौर्य से आगरा तक के शत्रु भयभीत रहते हैं। उन की असावधानी की अवस्था में, दिन को भी तू निडर होकर, आक्रमण कर देता है। शक्ति शाली सर्प रूपी अंग्रेजों के आधिपत्य में जो स्थान थे, उन पर तू गरुड़ के समान सूर्योदय होते ही, आक्रमण कर बलपूर्वक उनको हस्तगत कर लेता है ॥ १ ॥

अंग्रेजी कम्पनियों के सर्प-रूपी सैनिकों पर गरुड़ के समान हे यौद्धा, तूने आक्रमण कर उन के भुजबल के अभिमान को नष्ट कर दिया। हे डूँगरसिंह, इस प्रकार तूने अंग्रेजों की राज्य सीमा को नष्ट कर दिया ॥ २ ॥

हे वीर, तू रणस्थल में दिन के आठों प्रहर तक स्वेच्छा से अडिग रण रखकर युद्ध करता रहा। जिस से कछवाहा वंश का गौरव बढ़ा और दिल्लीश्वरों में आतंक छा गया। बड़े-बड़े लार्ड (Lords) उच्चाधिकारी अंग्रेज रूपी सर्पों पर तूने गरुड़ के समान आक्रमण कर उन्हें नष्ट कर दिया ॥ ३ ॥

हे डूँगरसिंह, जिस प्रकार आकाश से टूटा हुआ नक्षत्र वेग से जाता है, उसी प्रकार तू शत्रु-सेना पर तीव्रगति से आक्रमण करने लगा। हे वीर, तू प्रलय-काल में यमराज के समान शत्रु सेना को नष्ट करने लगा अथवा रुद्र के कण्ठ में सर्प माला पर जिस प्रकार गरुड़जी आक्रमण करते हैं उसी प्रकार तूने शत्रु सैन्य पर आक्रमण किया ॥ ४ ॥

हे डूँगरसिंह के शेखावत भाई, तूने अंग्रेजों के मुख्य मुख्य योद्धाओं को खोज कर यत्र तत्र कर दिया। छावणी (सेना का विश्राम-स्थल) में स्थित अंग्रेजों की सर्प रूपी सेना के चारों ओर गरुड़ के समान घेरा डाल दिया ॥ ५ ॥

हे शेखावत, तू सहस्त्रों शत्रु योद्धाओं पर तलवार चलाने लगा, जिससे रक्त की नदियाँ बहने लगी। सहस्त्रों अंग्रेजी लार्डों (Lords) (उच्चअधिकारी) के शरीरों के टुकड़े टुकड़े कर डाले। यह देख कर सहस्त्रों अप्सराओं का समूह आकाश-मार्ग से रण-भूमि में वीरों का वरण करने हेतु आउपस्थित हुआ ॥ ६ ॥

हे वीर, आगरा दुर्ग के समीप-स्थित उद्यान में तूने वीर गीतों का उच्चारण करवा अफीम का पान कर दुर्ग की दीवार की ओर घोड़ों की रासे उठाई। तूने अंग्रेज योद्धाओं को नष्ट कर आगरा के दुर्ग पर लगी हुई अंग्रेज-पताका को तलवार से उड़ा दिया। जिस से अन्य प्रान्तों में तेरी वीरता का प्रभाव फैल गया ॥ ७ ॥

१११. राव बहादुर बख्तसिंह चहुआन, बेदला [१]

गीत (वड़ा साणौर)

चसम अंगारे धोम लारे नचे चोसटी,
रिमा दल़ बगारे परा रीजे।
घाव घल़ नगारे वीर किलके घणा,
दुधारे चोल़ रंग उमंग दीजे ॥१॥

सेल आराण रे न मावे खापड़ां,
फेल दिखराण रे फिरंग पाले।
गण रे सहायक सेल समहर रहे,
सेल खुर साण रे सुविथ साले ॥२॥

मारका मीच रजवाट चसम मछर,
सतर घर फजर पड़ दहल़ सारे।
उबर पतसाह खुमांण मुख अगाड़ी,
धजर केहर तणी मुकर धारे ॥३॥

जलाला चाढ़ जुधवेर भांजण जबर,
यल़ा आला लियण बिरद अगता।

टिप्पणीः– राव बहादुर बख्तसिंह, सी० आई० ई० बेदला के राव केसरीसिंह का पुत्र था। प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य युद्ध सन् १८५७ ई० में उसने अंग्रेजों की प्राण रक्षा करने मे महाराणा की तरफ से सहयोग दिया था। उस समय के मेवाड़ के सरदारों में यह राज भक्त, क्रिया शील और चतुर व्यक्ति समझा जाता था। महाराणा स्वरूपसिंह, शम्भूसिंह, सज्जन सिंह का यह विश्वास पात्र रहा और दो बार रिजेन्सी कौन्सिल का सदस्य भी रहा था।

हेजमा तोड़ चहुँवाण भाला हथां,
बिभाला तपो जुग कोड़ बगता ॥४॥
(रचयिताः- रामलाल आढ़ा)

भावार्थः-हे बख्तसिंह, जिस समय तेरे नेत्रों में क्रोधाग्नि प्रज्वलित होती है, उस समय चौंसठ योगनियाँ प्रसन्न होकर, नृत्य करने लग जाती हैं। ज्योंही नगारे का घोष होता है त्योंही बावन वीर, प्रसन्नता से किलकारियाँ करते हुए, रण-भूमि में उपस्थित होजाते हैं और तू उस समय अपने दो धार वाले भाले का प्रहार कर रक्त रंजित कर देता है ॥ १ ॥

हे वीर, जिस समय अंग्रेजों और दक्षिणियों के ऊपर तू युद्ध में आक्रमण करता है, उस समय तेरे शरीर में शौर्य समा नहीं पाता। जिस समय तू महाराणा की सहायतार्थ रण-भूमि में भाले को लेकर उपस्थित होता है तो बादशाह के मन में वह भाला बड़ा खटकता है ॥ २ ॥

हे शत्रुओं को धराशायी करने वाले वीर तेरे नेत्रों में प्रतिक्षण क्षत्रियोचित शौर्य समाया रहता है। जिससे इस पृथ्वी पर तेरे शौर्य का प्रभाव, जहाँ-जहाँ सूर्य की किरणों का प्रकाश फैलता है वहाँ तक व्याप्त रहता है। हे केशरसिंह के पुत्र, तू सिशोदिया की सेना के अग्र भाग में तथा बादशाह के सन्मुख हाथ में सदा भाला लिये रहता है ॥ ३ ॥

हे बख्तसिंह, तू प्रबल से प्रबल सेना को रण कौशल से परास्त कर यशको प्राप्त करता है। हे वीर अश्वारोही, शत्रुओं पर भालों को तोड़ने वाले, दीर्घायु रह ॥ ४ ॥

११२. रावत हिम्मतसिंह शक्तावत, पीपलिया ?
गीत (सुपंखरो)

मडे सनाहां मड़ालां भांण उगां हे मलांका भाला,
तमां वीजूं जलाका सलांका बीज तेम।

मूंछां दे वलाकां मदां आया नाग सोवा माथै,
जाया गोकला का तू खजाया वाघ जेम ॥१॥

वेड़ाकां सामहां सजां ताके अछेहरी वागां,
रोला जीत गेहरी खगाटां रमंतेस।
चौड़े धाड़ै साजै गजां गनीमा तेहरी चोट,
हाकां वागां वरूथां केहरी हमंतेस ॥२॥

अजेरां जेरणा गाढ हणुमान आपाणरा,
बाड खेरे केवाण रा रमा धू वजाक।
छुटै क्रोध मार हट्टां पनागां डाणां रा भाज,
कंठीर डांखिया जगा राण रा कजाक ॥३॥

अवाड़ा अछूता खाटे मारथां अफेर पीठ,
देर रीठ खागां यलां अरिदां दाबूत।
आहंसीक सीसोद वरूथा सेर थारै आगै,
सोबा फील फेर मदां न आवे साबूत ॥४॥

(रचयिता -अज्ञात)

भावार्थः-सूर्य उदय होते ही यौद्धा कवच पहन कर हाथ में तलवार व भाले लिये हुए बिजली के सदृश चमके। हे गोकुल सिंह के पुत्र, खिजाये हुए सिंह के समान मूछों के वल लगाता हुआ मरहठों के हाथी रूपी सूबेदारों के ऊपर तूने सिंह के समान आक्रमण किया ॥ १ ॥

टिप्पणीः- शक्तावत हिम्मतसिंह पीपलिया के रावत गोकुलदास का पुत्र था। मेवाड़ के महाराणा स्वरूपसिंह का बड़ा कृपा पात्र था। इस की जागीर मन्दसोर के इलाके से मिली हुई थी, इस कारण मन्दसोर के सूबेदार से इसका झगड़ा होता रहता था, उसका इस गीत में वर्णन है।

अश्वारोही शत्रुओं के सामने अचानक घोड़ों की वाग उठा कर युद्ध करने के लिये तूने तलवारों से 'रास' (रचना) शुरू किया। हे हिम्मतसिंह, वीर हुंकार करते हुए प्रत्यक्ष रूप से शत्रुओं के सजे हुए हाथियों पर सिंह के समान तूने वार किया ॥ २ ॥

वीर हनुमान के समान साहस धारण कर अविजित शत्रुओं के सिर पर तलवार चला, उन्हें पराजित कर तूने अपनी तलवार तेज हीन (भोटी) कर दी। (अधिक वार करने से धार का भोंटा होना स्वाभाविक है) महाराणा के विशाल सिंह रूपी हे योद्धा! रणांगण में क्रुद्ध होकर हाथी रूपी मरहठों के गर्व को तूने चूर कर दिया ॥ ३ ॥

युद्ध में पीठ न दिखा, तलवारों की झड़ी लगा, शत्रुओं की भूमि अपने अधिकार में कर (तूने) अनोखा गौरव प्राप्त किया। हे सिशोदिया! शत्रु-सेना के हाथी रूपी सूबेदार तेरे सिंह रूपी साहस के सामने कभी मस्ती पर नहीं आवेंगे ॥ ४ ॥

११३. रावत रणजीतसिंह चुण्डावत, देवगढ़

गीत (सु पंख)

लीधां आसतीक रैणसिंग ऊचारे घड़ा रो लाडो,
    ऊबारो भड़ालां नाम चाढ़ौ कुलां अंच।
        गोरां रे अजंटी बौल सांभले वीराण गाढो,
            खंगै ऊभौ मैदपाट आडो जेत खंभ ॥१॥

चगे नथी पावां वीरताई ऊफणी रे चखां,
    वातां हुई गणी रे अभीडा वौलै बौल।
        आवतां फरंगी समै जासती वणी रे एलां,
            रहे तेण वेलां चूंडो धणी रे हरोल ॥२॥

माथे शत्रां खांपां वावै गवांवै जिहान माथै,
दसुं दसा सोभाग छवायो वीरदाण।
जींहान जाणी जोम छते नाहरेस जायो,
अजंटी ऊठायो आयो आपे ही आथाण ॥३॥

गाजे धूंसा राणरा फरंगी लगा दीये गेलै,
ओसाणा साधियो टला हमला खेवाड़।
अई चूडा गराणे हांदवां छात आराधियों,
आपरे गले ही भलां वाधियों मेवाड़ ॥४॥

(रचयिताः- कमजी दधिवाड़िया)

भावार्थः- हे रावत रणजीतसिंह! मेवाड़ देश के कार्य-निरीक्षण हेतु अंग्रेजों की ओर से प्रतिनिधि (Resident) नियुक्त होने सम्बन्धी

टिप्पणीः- १. २० वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जब महाराणा स्वरूपसिंह का स्वर्गारोहण हुआ और चौदह वर्ष की आयु में शंभूसिंह गद्दी पर बैठे, तब, शासन संचालन के लिये रीजेन्सी कौन्सिल की स्थापना की गई और राज्य का सारा काम पोलिटिकल एजेन्ट (राजनैतिक प्रतिनिधि) ने अपने हाथ में ले लिया और नीमच की छावणी से अपना ऑफिस उदयपुर ले आया। उसने मेवाड़ की शासन-परम्परा 'आण' आदि को हटाने के आदेश जारी कर दिये तब मेवाड़ की समस्त प्रजा इसके विरुद्ध होगई और विरोध स्वरूप उदयपुर में आठ दिन तक हड़ताल रही। पोलिटिकल-एजेन्ट ने प्रजा के साथ जोर और ज्यादती करने का इरादा किया। तब रीजेन्सी कौन्सिल के सदस्य देवगढ के रावत रणजीतसिंह ने उक्त आदेश का सख्त विरोध किया। इस बात का वर्णन तत्कालीन प्रत्यक्ष दर्शी चारण-कवि कमजी दधिवाड़िया ने इस गीत में किया है।

कमजी दधिवाड़िया 'वीर विनोद' के रचयिता महा महोपाध्याय कविराजा श्यामलदासजी के पिता और उस समय के प्रतिष्ठित नागरिक थे।

समाचार तूने सुने और सुनते ही साहस के साथ मेवाड़ के लिये खड्ग पकड़ कर युद्ध-भूमि में विजय स्तंभ की भांति अडिग आ खड़ा हुआ तथा अपने वीरों को कहने लगा। वीरता दिखाते हुए संसार में अपनी कीर्ति अमर करने के लिये क्षत्रिय-धर्म का पालन करो ॥ १ ॥

दृढ़ पैरों पर खड़े होकर तूने अपने विशाल नेत्रों में शौर्य भर ओजस्वी शब्द बोलने प्रारंभ किये। अंग्रेजों के द्वारा मेवाड़ भूमि पर जब अधिक विद्रोह किये जाने लगे, उसी समय हे चुण्डा, तू अपने स्वामी की सेना के अग्रभाग में (हरावल में) स्थित हुआ ॥ २ ॥

हे रावत, नाहरसिंह के पुत्र! तू शत्रुओं पर तलवारों का प्रहार करने हेतु तत्पर हुआ। तेरे इस शौर्य का यश पृथ्वी की दसों दिशाओं में व्याप्त हो गया। इस प्रकार क्षत्रिय-धर्म का कर्त्तव्य संसार को बता दिया तथा अंग्रेजों के द्वारा प्रतिनिधि (Resident) नियुक्त करने की योजना नष्ट करदी और अपने स्थान पर आ गया। ॥ ३ ॥

हे रणजीतसिंह! महाराणा की ओर से अंग्रेजों को भालों के प्रहार से परास्त कर बड़ी सावधानी से उनको भगा दिया जिससे चुण्डा-वंशजों का हिन्दुपति महाराणा ने आदर किया और मेवाड़ राज्य के शासन का कार्य तुझे दिया। जो बड़ा सराहनीय रहा ॥ ४ ॥

११४. रावत जोधसिंह चहुआन, कोठारिया

दोहा

जोध भलां ही जनमियो, सत्रुआं (रै) उर साल ॥
रावत सरणै राखियौ, कमंधां तिलक कुशाल ॥ १ ॥

भावार्थः- जोधसिंह! तेरा जन्म भी भला ही हुआ है। तू शत्रुओं के हृदय में खटकता रहता है। हे रावत! राठोड़ों के कुल-तिलक कुशालसिंह को तूने ही शरण दी ॥